लखनऊ

शुक्रवार 20 फरवरी, 2026

वर्ष : 11 । अंक: 181

मूल्य : 1 रुपये

पृष्ठ : 8

UPHIN/2014/57034

हिंदी दैनिक

आर्यावर्त क्रांति

"ज़िंदगी की असली मिठास छोटी-छोटी खुशियों में छुपी होती है जिन्हें हम अक्सर नज़रअंदाज़ कर देते हैं।"

TODAY WEATHER

DAY 20° Hi

NIGHT 10° Low

संक्षेप

'प्रियंका बनेंगी पीएम', कामाख्या मंदिर में स्पेशल पूजा, किस बाबा ने दिया प्रधानमंत्री बनने का अशिर्वाद?

नई दिल्ली, एजेंसी। कांग्रेस सांसद और स्क्रीनिंग कमेटी की अध्यक्ष प्रियंका गांधी वाड्रा गुरुवार को दो दिन के दौरे पर असम पहुंचीं। प्रियंका के असम दौरे को 2026 के विधानसभा चुनावों के लिए अहम माना जा रहा है। दौरे की शुरुआत प्रियंका ने कामाख्या मंदिर में स्पेशल पूजा के साथ की। दर्शन के दौरान एक संन्यासी बाबा ने प्रियंका को अशिर्वाद दिया। जो अब सोशल मीडिया पर तेजी से वायरल हो रहा है। प्रियंका गांधी सुबह करीब 10 बजे गुवाहाटी के गोपीनाथ बोरदोलोई इंटरनेशनल एयरपोर्ट पहुंचीं थी। यहां से प्रियंका सीधे कामाख्या मंदिर में पूजा करने के लिए चली गईं। मंदिर दौरे के दौरान, वायनाड की सांसद ने एक साधु से थोड़ी देर बात की, जिन्होंने प्रियंका से एक फोटो खिंचवाने की रिक्वेस्ट की। इस छोटी सी मुलाक़ात का वीडियो सामने आया है, जिसमें बाबा को प्रियंका के सिर पर हाथ रखते देखा जा सकता है फिर बाबा कहते हैं, 'हमारी बेटी प्रधानमंत्री बनेगी।' इस पर प्रियंका मुस्कुराती हैं और चली जाती हैं। मंदिर दर्शन के बाद, MP गुवाहाटी में राजीव भवन (कांग्रेस भवन) के लिए रवाना हुईं, जहां उनका ब्लॉक कांग्रेस कमेटियों, जिला कांग्रेस कमेटियों के नेताओं और असम प्रदेश कांग्रेस कमिटी के सदस्यों के साथ कई मीटिंग करने का प्लान था।

स्पाइसजेट को बांग्लादेश से झटका: नहीं चुकाया एयर नेविगेशन चार्ज, एयरस्पेस के इस्तेमाल पर लगाई रोक

नई दिल्ली, एजेंसी। स्पाइसजेट को एयर नेविगेशन चार्ज के बकाया होने की वजह से बांग्लादेश के एयरस्पेस का इस्तेमाल करने से रोक दिया गया है, जिससे एयरलाइन को कुछ फ्लाइट्स का रूट बदलना पड़ सकता है और फ्यूल की लागत बढ़ सकती है। इस रोक का मतलब है कि कुछ ईस्ट-बाउंड सर्विसेज अब लंबे रास्ते पर फ्लाइट चला रही हैं, खासकर कोलकाता से गुवाहाटी और इंफाल जैसी जगहों के लिए। फ्लाइट ट्रैकिंग प्लेटफॉर्म Flightradar24 पर मौजूद डेटा से पता चलाता है कि कोलकाता-गुवाहाटी और कोलकाता-इंफाल सेक्टर पर विमान बांग्लादेशी आसमान से बच रहे हैं और इसके बजाय दूसरे कॉरिडोर से उड़ान भर रहे हैं। बांग्लादेशी एयरस्पेस तक अभी एक्सेस उपलब्ध नहीं होने की वजह से, फ्लाइट्स लंबे रूट ले रही हैं, जिससे अगर स्थिति ऐसी ही बनी रही तो फ्यूल की खपत और ऑपरेटिंग खर्च थोड़ा बढ़ सकता है। एयरलाइनों के लिए ओवरफ्लाइट परमिशन को सेक्टर टाइमिंग को ऑप्टिमाइज करने और फ्यूल एफिशिएंसी को मैनेज करने के लिए बहुत जरूरी माना जाता है, खासकर कम दूरी के पूर्वी रूट पर। यह डेवलपमेंट ऐसे समय में हुआ है जब एयरलाइन पहले से ही फाइनेंशियल स्ट्रेस से जूझ रही है। दिसंबर 2025 को खत्म हुई तिमाही के लिए, स्पाइसजेट ने 269 .27 करोड़ रुपये का नेट लॉस बताया, जिसका कारण बढ़े हुए खर्च और एक बार के खर्च थे, जिससे प्रॉफिट पर असर पड़ा। इस मामले पर जवाब देते हुए, स्पाइसजेट के एक प्रवक्ता ने कहा कि एयरलाइन इस मामले को सुलझाने के लिए बांग्लादेशी अथॉरिटीज के साथ बातचीत कर रही है।

पीएम बोले-डीपफेक रोकने के लिए एआई कंटेंट पर लेबल लगे

एआई में भारत देख रहा है अवसर और भविष्य की रूपरेखा: प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी

नई दिल्ली, एजेंसी। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने गुरुवार को कहा कि आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस (एआई) मानव सभ्यता के इतिहास के बड़े बदलावों जितना ही महत्वपूर्ण परिवर्तन है। उन्होंने कहा कि आज जो हम एआई के बारे में देख और अनुमान लगा रहे हैं, वह उसके प्रभाव की केवल शुरुआती झलक है।

पीएम मोदी ने कहा कि मैं जिम्मेवारी के साथ कहता हूं, गर्व के साथ कहता हूं, हमें भय नहीं, भारत को AI में भाग्य दिखता है, भारत को AI में भविष्य दिखता है। हमारे पास प्रतिभा भी है, ऊर्जा क्षमता भी है और नीति स्पष्टता भी है। और मुझे आपको ये बताते हुए खुशी है कि इस समिट में 3 भारतीय कंपनियों ने अपने AI मॉडल्स और ऐप्स लॉन्च किए हैं। ये मॉडल्स, हमारे युवा के टैलेंट को दिखाते हैं और भारत जो सॉल्यूशंस दे रहा है, उसकी गहराई और विविधता का भी प्रतिबिंब है।

भारत मंडपम में 'इंडिया एआई इम्पैक्ट समिट 2026' में प्रधानमंत्री मोदी ने कहा कि दुनिया का सबसे बड़ा और ऐतिहासिक एआई इम्पैक्ट समिट भारत में आयोजित हो रहा है, जो विश्व की एक-छठी आबादी का प्रतिनिधित्व करता है। पीएम मोदी ने कहा कि भारत दुनिया की सबसे बड़ी युवा आबादी, सबसे बड़ा टेक्नोलॉजी टैलेंट पूल और तेजी से बढ़ता टेक-आधारित इकोसिस्टम वाला देश है। भारत न केवल नई तकनीक विकसित करता है, बल्कि उन्हें अभूतपूर्व गति से अपनाता भी है।

प्रधानमंत्री मोदी ने कहा कि कृषि, सुरक्षा, दिव्यांगजनों की सहायता और बहुभाषी जरूरतों को पूरा करने जैसे क्षेत्रों में प्रस्तुत समाधान 'मेड इन इंडिया' की ताकत को दिखाते हैं और एआई क्षेत्र में भारत की नवाचार क्षमता को उजागर करते हैं। उन्होंने कहा कि एआई मशीनों को बुद्धिमान बना रहा है, लेकिन इससे भी ज्यादा महत्वपूर्ण बात यह है कि यह मानव क्षमता को कई गुना बढ़ा रहा है।

पीएम मोदी ने कहा, "एआई एक परिवर्तनकारी शक्ति है – यदि इसे बिना दिशा के छोड़ दिया जाए तो यह अव्यवस्था ला सकता है, लेकिन सही दिशा मिलने पर यह समाधान बन जाता है। एआई को खुला आसमान मिलना चाहिए, लेकिन नियंत्रण मानव के हाथों में ही रहना चाहिए।" उन्होंने एआई की तुलना जीपीएस से की, जो रास्ता सुझाता है, लेकिन अंतिम निर्णय उपयोगकर्ता ही लेता है। उन्होंने कहा कि आज मानवता एआई को जिस दिशा में ले जाएगी, वही भविष्य तय करेगी।

पीएम मोदी ने कहा कि एआई से लोगों के लिए उच्च मूल्य वाले, रचनात्मक और अर्थपूर्ण कार्यों के अवसर भी खुलेंगे। इससे नवाचार, उद्यमिता और नए उद्योगों को बढ़ावा मिलेगा। उन्होंने स्किलिंग, री-स्किलिंग और आजीवन सीखने को जन आंदोलन बनाने पर जोर दिया। उन्होंने कहा कि भविष्य का कामकाज समावेशी, भरोसेमंद और मानव-केंद्रित होगा। यदि पूरी मानवता साथ मिलकर आगे बढ़ेगी, तो आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस मानव क्षमता को नई ऊंचाइयों तक पहुंचाएगा।

पीएम मोदी की स्पीच की 5 बड़ी बातें

1. 'ब्लैक बॉक्स' नहीं, 'ग्लास बॉक्स' अप्रोच की मांग

एआई प्लेटफॉर्म्स को 'ब्लैक बॉक्स' (जहां अंदर क्या चल रहा है किसी को पता न हो) के बजाय 'ग्लास बॉक्स' की तरह होना चाहिए। इसका मतलब है कि एआई के सेफ्टी रूल्स इतने साफ और पारदर्शी हों कि उन्हें कोई भी देख और वेरीफाई कर सके, जिससे कंपनियों की जवाबदेही तय हो सके।

2. डेटा के लिए ग्लोबल ट्रस्टेड फ्रेमवर्क

एआई की ट्रेनिंग के लिए इस्तेमाल होने वाले डेटा पर पीएम ने 'गार्बेज इन, गार्बेज आउट' का सिद्धांत समझाया। उन्होंने कहा कि अगर डेटा सुरक्षित और भरोसेमंद नहीं होगा, तो एआई का आउटपुट भी खतरनाक हो सकता है। इसलिए उन्होंने डेटा संप्रभुता का सम्मान करने और एक वैश्विक स्तर पर विश्वसनीय डेटा फ्रेमवर्क बनाने का सुझाव दिया।

3. 'पेपर क्लिप प्रॉब्लम' और इंसानी नियंत्रण

प्रधानमंत्री ने एक तकनीकी उदाहरण के जरिए चेतावनी दी कि एआई को बिना मानवीय मूल्यों के नहीं छोड़ा जा सकता। उन्होंने 'पेपर क्लिप प्रॉब्लम' का जिक्र करते हुए बताया कि अगर किसी मशीन को सिर्फ एक छोटा सा लक्ष्य दे दिया जाए, तो वह उसे पूरा करने के लिए दुनिया के सारे संसाधन दांव पर लगा सकती है। इसलिए टेक्नोलॉजी की दिशा हमेशा इंसान ही तय करेगा।

4. भारत का एआई मिशन: 6 महीने में 24,000 नए GPUs

भारत एआई के क्षेत्र में अपनी ताकत तेजी से बढ़ा रहा है। पीएम ने बताया कि देश में अभी 38,000 GPUs मौजूद हैं और अगले 6 महीनों में 24,000 और GPUs जोड़े जाएंगे।

5. एआई पावर नहीं, सेवा का माध्यम है

भारत के लिए टेक्नोलॉजी सत्ता हथियाने का हथियार नहीं, बल्कि सेवा का जरिया है। उन्होंने यूपीआई (UPI) और कोविन (CoWIN) का उदाहरण देते हुए कहा कि जैसे इन प्लेटफॉर्म्स ने डिजिटल डिवाइड को खत्म किया, वैसे ही एआई को भी 'ग्लोबल साउथ' (विकासशील देशों) के लिए सुलभ होना चाहिए। एआई का मकसद सिर्फ मुनाफा कमाना नहीं, बल्कि मानवता का कल्याण होना चाहिए।

मुकेश अंबानी का बड़ा एलान, कहा- अगले सात साल में 10 लाख करोड़ का निवेश करेंगे

मुकेश अंबानी ने कहा कि जिस तरह जियो ने देश को सस्ते इंटरनेट से जोड़ा, उसी तरह अब इंटेलिजेंस युग से जोड़ा जाएगा। उनका टारगेट है कि एआई हर नागरिक, हर उद्योग और हर सरकारी सेवा तक पहुंचे वह भी बेहद किफायती लागत पर। उन्होंने साफ कहा कि भारत इंटेलिजेंस किराए पर नहीं ले सकता। इसलिए कंप्यूटिंग और एआई सेवाओं की लागत को डेटा की तरह सस्ता बनाना ही प्राथमिकता होगी। उन्होंने कहा कि जियो और रिलायंस इंडिया लिमिटेड (RIL) इस साल से शुरूआत कर अगले 7 वर्षों में 10 लाख करोड़ रुपये का निवेश करेगी।

एआई को इंसान का विकल्प नहीं, सहारा बनना चाहिए: यूएन

संयुक्त राष्ट्र के महासचिव एंटोनियो गुटेरेस गुरुवार को इंडिया एआई इम्पैक्ट समिट में शामिल हुए। उन्होंने अपने भाषण में आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस (एआई) की चुनौतियों को लेकर चेतावनी दी। गुटेरेस ने कहा कि एआई को इंसानों की जगह नहीं लेनी चाहिए। इसके बजाय एआई को इंसानी क्षमता बढ़ाने में मदद करनी चाहिए। एआई के खतरे को लेकर उन्होंने कहा, हमें श्रमिकों में निवेश करना चाहिए, ताकि एआई इंसानी क्षमता को बढ़ाए, उसे प्रतिस्थापित न करे। नई दिल्ली के भारत मंडपम में आयोजित इंडिया एआई इम्पैक्ट समिट के उद्घाटन पर उन्होंने एआई के विस्तार से उत्पन्न होने वाली सामाजिक, आर्थिक और पारिस्थितिक समस्याओं से निपटने की अपील की।

सुंदर पिचाई बोले- अरबों लोगों की जिंदगी बदलेगा एआई

गूगल भारत में अपने 15 बिलियन डॉलर (1.35 लाख करोड़ रुपए) के इंफ्रास्ट्रक्चर निवेश के हिस्से के रूप में एक 'फुल स्टैक AI हब' स्थापित कर रहा है। इस हब में गीगावाट स्केल की कंप्यूटिंग और एक नया इंटरनेशनल सब-सी केबल गेटवे होगा। हर किसी के लिए उपयोगी AI बनाने के लिए हमें साहसिक कदम उठाने होंगे, क्योंकि यह अरबों लोगों के जीवन को बेहतर बना सकता है और सबसे कठिन समस्याओं को हल कर सकता है। हमें उन क्षेत्रों की समस्याओं को सुलझाने के लिए भी उतना ही साहसी होना चाहिए जहां अब तक तकनीक की पहुंच नहीं थी।

अंबानी बोले- साबित करेंगे कि AI नौकरियां नहीं छीनता

हम साबित करेंगे कि AI नौकरियां नहीं छीनता, बल्कि हाई-स्किल काम के नए मौके देता है। उन्होंने ये भी कहा कि AI की कहानी अब इस बात से बदल गई है कि कौन सबसे अच्छा मॉडल बना सकता है, बल्कि अब मुकाबला इस पर है कि इस्तेमाल की रफ्तार और स्केल के लिए कौन सबसे मजबूत इकोसिस्टम तैयार करता है। इसलिए हम भारतीय कंपनियों, संस्थानों, स्टार्टअप्स और इंडस्ट्रियल ग्रुप्स के साथ गहरी पार्टनरशिप करेंगे। जियो इंटेलिजेंस गीगावाट (GW) स्केल के डेटा सेंटर्स के जरिए भारत का अपना खुद का 'सॉवरेन कंप्यूट इंफ्रास्ट्रक्चर' तैयार करेगा।

'समुद्री डकैती-आतंकवाद, साइबर समस्या बड़ी चुनौतियां'

कोई नौसेना अकेले सामना करने में अक्षम: राजनाथ

विशाखापत्तनम। रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह आज भारतीय नौसेना की तरफ से आयोजित प्रमुख द्विवार्षिक बहुपक्षीय समुद्री अभ्यास मिलन 2026 के 13वें संस्करण के उद्घाटन के लिए विशाखापत्तनम पहुंचे। जहां उन्होंने उद्घाटन समारोह को संबोधित किया। इस दौरान रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह ने कहा कि आज समुद्री डकैती, समुद्री आतंकवाद, अवैध मछली पकड़ना, तस्करी, साइबर कमजोरियां और जरूरी आपूर्ति श्रृंखलाओं में बाधाएं वैश्विक समुद्री सुरक्षा के लिए गंभीर चुनौती बन चुकी हैं। इसके साथ ही जलवायु परिवर्तन के कारण प्राकृतिक आपदाएं बढ़ रही हैं, जिससे मानवीय सहायता और आपदा राहत अभियानों की आवश्यकता अधिक बार और व्यापक रूप से पड़ रही है।

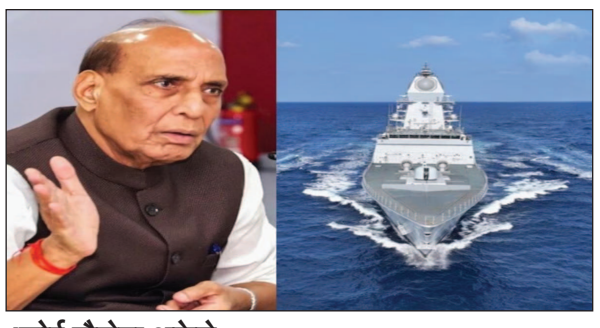

'कोई नौसेना अकेले सामना करने में अक्षम'

रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह ने स्पष्ट कहा कि कोई भी एक नौसेना, चाहे वह कितनी भी सक्षम क्यों न हो, इन सभी चुनौतियों का अकेले सामना नहीं कर सकती। इसलिए नौसेनाओं के बीच सहयोग अब विकल्प नहीं, बल्कि अनिवार्यता है। इस वर्ष 74 देशों की भागीदारी के साथ 'मिलन-2026' अब तक का सबसे बड़ा और सबसे समावेशी आयोजन बन गया है। यह इस बात का प्रमाण है कि वैश्विक समुद्री समुदाय भारत को एक भरोसेमंद और जिम्मेदार समुद्री भागीदार के रूप में देखता है। आज की विशिष्ट जिम्मेदारियां अंतरराष्ट्रीय समुदाय से अपेक्षा करती हैं कि वह परस्पर सम्मान की भावना से मिलकर चुनौतियों का समाधान करे।

रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह ने की 'मिलन' की तारीफ

उन्होंने कहा कि जब कई देशों के युद्धपोत साथ-साथ समुद्र में चलते हैं, जब नाविक एक साथ प्रशिक्षण लेते हैं, और जब कमांडर सामूहिक विचार-विमर्श करते हैं, तब भौगोलिक और राजनीतिक सीमाओं से ऊपर उठकर साझा समझ विकसित होती है। 'मिलन' जैसे मंच पेशेवर विशेषज्ञता को एक साथ लाते हैं, आपसी विश्वास को मजबूत करते हैं, संयुक्त रूप से काम करने की क्षमता बढ़ाते हैं, और साझा चुनौतियों के लिए समन्वित प्रतिक्रिया देने में मदद करते हैं।

नोएडा के कई स्कूलों को बम से उड़ाने की धमकी, सीबीएसई परीक्षा के दौरान मचा हड़कंप

आर्यावर्त क्रांति ब्यूरो

नोएडा। नोएडा में उस समय हड़कंप मच गया, जब शहर के एक दर्जन से अधिक स्कूलों को बम से उड़ाने की धमकी भरे ईमेल प्राप्त हुए। यह धमकी ऐसे समय में दी गई, जब स्कूलों में केंद्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड (सीबीएसई) की परीक्षाएं चल रही हैं। परीक्षा के दौरान आई इस धमकी ने छात्रों, अभिभावकों और स्कूल प्रशासन की चिंता बढ़ा दी है। सूत्रों के मुताबिक, गुरुवार सुबह कई निजी स्कूलों के आधिकारिक ईमेल आईडी पर धमकी भरे संदेश भेजे गए। ईमेल में स्कूल परिसरों को बम से उड़ाने की चेतावनी दी गई थी। सूचना मिलते ही स्कूल प्रशासन ने तत्काल स्थानीय पुलिस और प्रशासन को इसकी जानकारी दी। एहतियात के तौर पर कुछ स्कूलों में छात्रों को सुरक्षित स्थान पर पहुंचाया गया, जबकि कई जगहों पर परीक्षा प्रक्रिया को सुरक्षा घेरे में जारी रखा गया। सूचना मिलते ही पुलिस, सुरक्षा बल, डॉग स्क्वॉड और बम निरोधक दस्ते मौके पर पहुंच गए। स्कूल परिसरों की सघन चेकिंग की जा रही है। हर कोने की बारीकी से जांच की जा रही है, ताकि किसी भी प्रकार की संदिग्ध वस्तु की पुष्टि की जा सके।

पुलिस अधिकारियों का कहना है कि फिलहाल किसी भी स्कूल से विस्फोटक सामग्री मिलने की पुष्टि नहीं हुई है, लेकिन जांच पूरी होने तक सतर्कता बरती जा रही है। पुलिस साइबर सेल की टीम भी धमकी भरे ईमेल की जांच में जुट गई है। ईमेल किस आईडी से भेजा गया, उसका सर्वर और लोकेशन क्या है, इसकी तकनीकी पड़ताल की जा रही है।

मिशन 2027 पर आरएसएस, मुख्यमंत्री योगी से मिले मोहन भागवत, चुनावी रणनीति पर चर्चा!

आर्यावर्त क्रांति

लखनऊ। उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ (आरएसएस) के प्रमुख मोहन भगवत से मुलाकात की, जो दो दिवसीय दौरे पर लखनऊ में हैं। निराला नगर स्थित सरस्वती शिशु मंदिर में हुई यह मुलाकात 40 मिनट तक चली। मुलाकात का एजेंडा गुप्त रखा गया है। हालांकि, विधानसभा चुनाव नजदीक होने के कारण भगवत का राज्य का यह नियमित दौरा महत्वपूर्ण है। इससे पहले वे आरएसएस के शताब्दी समारोह के तहत मथुरा और गोरखपुर में थे।

लखनऊ में एक कार्यक्रम के दौरान भगवत ने हिंदू आबादी में गिरावट, धर्मांतरण और हिंदू एकता के आह्वान जैसे मुद्दों पर बात की। आरएसएस नेता का दौरा इसी संदेश के साथ समाप्त हुआ। सूत्रों के अनुसार, योगी आदित्यनाथ और मोहन भगवत के बातचीत में मुख्य रूप से समाजवादी पार्टी के पीडीए (PDA) फॉर्मूलेशन और यूजीसी विनियम, 2026 के देशव्यापी विवाद के इर्द-गिर्द घूमती रही। ऐसी अटकलें हैं कि मुख्यमंत्री ने आरएसएस प्रमुख को यूजीसी विनियमों और 2027 के विधानसभा चुनावों में पार्टी पर इसके संभावित प्रभावों के बारे में अपनी चिंता व्यक्त की होगी, यदि इन विनियमों का उचित समाधान नहीं किया गया।

सर्वोच्च न्यायालय ने हाल ही में विश्वविद्यालय अनुदान आयोग (यूजीसी) द्वारा उच्च शिक्षा संस्थानों में समानता को बढ़ावा देने के उद्देश्य से बनाए गए नए नियमों पर रोक लगा दी थी। सूत्र यह भी बता रहे हैं कि इस बैठक में उत्तर प्रदेश की मौजूदा राजनीतिक स्थिति, संगठन की मजबूती और आगामी 2027 विधानसभा चुनाव को लेकर विस्तार से चर्चा हुई। माना जा रहा है कि चुनावी रणनीति, संगठनात्मक ढांचे को और प्रभावी बनाने तथा सरकार और संगठन के बीच बेहतर समन्वय पर भी विचार-विमर्श हुआ।

उत्तर प्रदेश भाजपा के लिए बेहद महत्वपूर्ण है, खासकर 2024 के आम चुनाव में पार्टी के प्रदर्शन में भारी गिरावट के बाद। इसलिए, अगले साल उत्तर प्रदेश में विधानसभा चुनाव होने वाले हैं, ऐसे में इस बैठक को राजनीतिक हलकों में महत्वपूर्ण माना गया। यह मुलाकात केवल औपचारिक नहीं बल्कि राजनीतिक और संगठनात्मक दृष्टि से बेहद महत्वपूर्ण है। इस बात की संभावना अब तेज हो गई है कि आने वाले कुछ महीनों में उत्तर प्रदेश की राजनीति में बड़े बदलाव हो सकते हैं। आरएसएस के शताब्दी वर्ष समारोह के सिलसिले में देशभर में आयोजित होने वाले कार्यक्रमों और उनकी रूपरेखा पर भी चर्चा हुई। हालांकि, भागवत द्वारा लगातार हिंदू एकता पर जोर दिए जाने के मद्देनजर इस बैठक को महत्वपूर्ण माना जा रहा है, क्योंकि यह मुख्यमंत्री के हालिया भाषणों के सुर से मेल खाता है जिनमें उन्होंने प्रतिद्वंद्वी समाजवादी पार्टी के 'पीडीए अभियान' का जिक्र किया है। भागवत जनवरी में 10 दिन के दौरे पर मथुरा गए थे। इसी महीने वह फिर उत्तर प्रदेश आए और अपने कार्यक्रम की शुरुआत गोरखपुर के तीन दिवसीय दौरे से की, जिसके बाद वह लखनऊ पहुंचे।

30 करोड़ से अधिक की धोखाधड़ी मामले में विक्रम भट्ट और उनकी पत्नी श्वेतांबरी भट्ट को मिली जमानत

मुंबई, एजेंसी। 30 करोड़ से अधिक की धोखाधड़ी के मामले में फिल्म निर्देशक विक्रम भट्ट और उनकी पत्नी श्वेतांबरी को सुप्रीम कोर्ट से बड़ी राहत मिली है। मामले में विक्रम भट्ट और उनकी पत्नी श्वेताम्बरी भट्ट को सुप्रीम कोर्ट ने नियमित जमानत दे दी है और साथ ही दोनों पक्षों को मध्यस्थता के जरिए मामले को सुलझाने की सलाह दी है। इससे पहले 13 फरवरी को मामले को लेकर हुई सुनवाई में पहले ही सुप्रीम कोर्ट ने दंपत्ति को मानवीय आधार पर अंतरिम जमानत दी थी और कहा था कि जेल में बंद करके पैसे की रिकवरी नहीं की जा सकती है और साथ ही राजस्थान पुलिस को मामले में नोटिस भी जारी किया था। गुरुवार को कोर्ट ने राजस्थान हाईकोर्ट का फैसला पलटते हुए दंपत्ति को जमानत पर रिहा करने का आदेश दिया।

'चोटी विवाद' के बीच अपने आवास पर बटुक ब्राह्मणों से मिले उप उपमुख्यमंत्री पाठक, तिलक लगाकर किया स्वागत

आर्यावर्त क्रांति ब्यूरो

प्रयागराज। उत्तर प्रदेश के प्रयागराज में बटुक ब्राह्मणों की शिखा खींचने को लेकर लगातार राजनीतिक माहौल बना हुआ है। इस मसले पर मचे सियासी बवाल के बीच उपमुख्यमंत्री ब्रजेश पाठक ने आज गुरुवार को अपने आवास पर कई बटुक ब्राह्मणों से मुलाकात की और उनसे बातचीत भी की। इससे पहले इन लोगों ने कल दूसरे उपमुख्यमंत्री केशव प्रसाद मौर्य से भी मुलाकात की थी। कहा जा रहा है कि कुछ गुरुकुल से करीब 100 की संख्या में बटुक ब्राह्मण पहुंचे।

उपमुख्यमंत्री ब्रजेश पाठक ने मंगलवार को बटुक ब्राह्मणों से शिखा खींचने की घटना को महापाप करार दिया था। उन्होंने एक कार्यक्रम में कहा था कि किसी की चोटी खींचना

गंभीर पाप है और जो ऐसा करते हैं उन्हें पाप लगता है। उनकी इस टिप्पणी के बाद से यह मामला फिर से गरमा गया। इस बीच बटुक ब्राह्मणों का एक समूह कल दोनों उपमुख्यमंत्रियों का अभिनंदन करने पहुंचा था। इन ब्राह्मणों का कहना है कि सरकार में केवल 2 लोगों ने ही बटुक ब्राह्मणों के अन्याय के खिलाफ आवाज उठाई।

बटुक ब्राह्मणों ने की DyCM पर पुष्प वर्षा

ब्रजेश पाठक के सरकारी आवास पर आज सुबह बटुक ब्राह्मणों का एक समूह मिलने पहुंचा। इस दौरान उन्होंने पत्नी संग बटुक ब्राह्मणों का टीका लगाकर स्वागत किया और बटुक ब्राह्मणों ने उपमुख्यमंत्री पर पुष्प वर्षा की। उपमुख्यमंत्री ने आज इन्हें मिलने के लिए बुलाया था क्योंकि कल मुलाकात नहीं हो सकी थी। कई गुरुकुल से मुलाकात करने आए बटुक ब्राह्मणों का कहना है कि हम यहां पर उपमुख्यमंत्री को इस बात के लिए आभार देने आए हैं क्योंकि इस मुद्दे पर उन्होंने अपनी बात रखी। एक बटुक ब्राह्मण ने कहा कि शिखा ब्राह्मणों का धरोहर है। हम ब्राह्मण समाज के लोग हैं और सभी के कल्याण की बात करते हैं।

कल केशव मौर्य से मिले थे बटुक ब्राह्मण

इससे पहले लखनऊ के स्वामी जगन्नाथ माता प्रसाद वेद विद्या गोकुलम के बटुक ब्राह्मणों का एक ग्रुप बुधवार को पहले ब्रजेश पाठक के आवास पर गया, लेकिन उनसे मुलाकात नहीं हो पाई। फिर ये लोग केशव प्रसाद मौर्य से भी मिलने पहुंचे और लंबी बातचीत हुई। मौर्य से मुलाकात के बाद गोकुलम के मैनेजर श्याम जी मिश्रा ने बताया कि डिप्टी सीएम ने हमसे कहा कि हम आपके साथ हैं। वह ब्राह्मणों का बहुत सम्मान करते हैं। पाठक (ब्रजेश) तो ब्राह्मण शिरोमणि हैं ही। दूसरी ओर, ब्रजेश पाठक के बयान पर समाजवादी पार्टी के वरिष्ठ नेता शिवपाल सिंह यादव ने कटाक्ष करते हुए कहा कि यदि उन्हें इस मुद्दे पर इतनी आपत्ति है तो इस्तीफा दे देना चाहिए। उन्होंने कहा, "ब्रजेश पाठक उसी सरकार और कैबिनेट का हिस्सा हैं। अगर उन्हें इस घटना से इतना बुरा लगा है तो उन्हें तुरंत इस्तीफा दे देना चाहिए। उन्हें भी इस मामले में पाप लगेगा क्योंकि वह उसी कैबिनेट के सदस्य हैं। अपमान उसी सरकार के तहत ही हुआ है।" मामला 18 जनवरी की उस घटना से जुड़ा है जब प्रयागराज में मौनी अमावस्या के अवसर पर माघ मेले में स्वामी अविमुक्तेश्वरानंद सरस्वती को स्नान के लिए पालकी से संगम की ओर जाते समय स्थानीय पुलिस ने रोक दिया था। अविमुक्तेश्वरानंद की ओर से आरोप लगाया गया कि उन्हें डुबकी लगाने से रोका गया और उनके साथ आए बटुक ब्राह्मणों की चोटी तक खींची गई। साथ ही उन्होंने पुलिसकर्मियों पर दुर्व्यवहार का आरोप लगाते हुए तस्वीरें भी दिखाईं और दावा किया कि यह घटना वरिष्ठ अधिकारियों की मौजूदगी में हुई।

विधानसभा सत्र में गरजे इसौली विधायक

आर्यावर्त संवाददाता

लखनऊ/सुल्तानपुर। विधानसभा सत्र के दौरान समाजवादी पार्टी के इसौली विधायक ताहिर खान सरकार पर हमलावर रहे। उन्होंने सरकार के भारी भरकम बजट पर कहा कि पिछले चार वर्षों में सरकार केवल झुनझुना पकड़ा रही है।उनकी विधानसभा की सड़कों का कार्य नहीं हो रहा है।साथ ही काफी दिनों से उन्होंने विद्युत उपकेंद्र बनाने की मांग रखी है। लेकिन उस पर भी कोई कार्यवाही नहीं की गई। विधायक ने कहा कि अलीगंज से कुड़वार मार्ग जो सिंगल लेन सड़क है। उसे कई बार प्रस्ताव के बाद भी चैड़ीकरण में नहीं लिया गया। कुड़वार से नौंगवा तीर गांव होकर अयोध्या को जाने वाली सड़क पर भी चैड़ीकरण नहीं किया गया।विधानसभा क्षेत्र से निकलकर प्रभात नगर को जाने वाले देवरा मार्ग को चैड़ीकरण में नहीं लिया। अशरफ पुर में पुल बनाने की मांग काफी दिनों से उनके द्वारा की जा रही है लेकिन उसका भी संज्ञान नहीं लिया गया। उन्होंने कहा कि उनके लोकसभा के कार्यकाल के दौरान राजीव गांधी विद्युतिकरण योजना के अंतर्गत जो केबल लगाई गई थी वह अब जर्जर हो चुकी है। उसको भी नहीं बदलवाया जा रहा है। विधानसभा क्षेत्र में कई पावर हाउस प्रस्तावित है लेकिन अभी तक निर्माण नहीं हुआ।गर्मी के दिनों में ओवर लोड की समस्या से निदान के लिए बहलोलपुर गांव में 132 केवी पावर हाउस बनाने का प्रस्ताव दिया गया था। लेकिन उसका भी आज तक संज्ञान नहीं लिया गया। पूर्वांचल एक्सप्रेस वे पर विधानसभा क्षेत्र में कट बनाए जानी की मांग भी उठाई। उन्होंने सरकार से मांग की हमारी विधानसभा के कई मार्ग ऐसे है जो प्रयागराज और अयोध्या को जोड़ते है उन सभी को सात मीटर करवाने के साथ ही इसौली विधानसभा का भी विकास करवाया जाए।

'मुझे मीठे का कोई शौक नहीं, टिकैत के हलवाई – ततैया वाले बयान पर जयंत चौधरी का पलटवार

आर्यावर्त संवाददाता

मेरठ/बागपत। राष्ट्रीय लोक दल यानी रालोद के प्रमुख जयंत चौधरी ने हाल ही में सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म X पर एक पोस्ट करते हुए लिखा, 'जो हलवाई और ततैये का किस्सा सुना रहे हैं, उन्हें मैं बता दूं कि मुझे मीठे का कोई शौक नहीं।' इस पोस्ट के सामने आते ही उत्तर प्रदेश की राजनीति में चर्चाओं का दौर शुरू हो गया है और राजनीतिक गलियारों में इसके कई मायने निकाले जा रहे हैं।

बागपत में भारतीय किसान यूनियन (भाकियू) के अध्यक्ष नरेश टिकैत ने केंद्रीय राज्यमंत्री चौधरी जयंत सिंह पर कटाक्ष करते हुए हलवाई और ततैया का उदाहरण दिया था। उन्होंने कहा था कि चौधरी जयंत सिंह सरकार में हैं, इसलिए उन्हें सरकार के पक्ष में ही बोलना पड़ता है। टिकैत ने उदाहरण देते हुए कहा कि जैसे हलवाई की दुकान पर बैठा ततैया हलवाई को नहीं काटता, बल्कि मिठाई पर बैठा रहता है और हलवाई उसे हटाता रहता है, उसी तरह जयंत सिंह भी सरकार के खिलाफ कुछ नहीं कह सकते।

नरेश टिकैत का यह बयान वायरल होने के बाद जयंत सिंह ने फेसबुक और एक्स (ट्विटर) पर प्रतिक्रिया दी। उन्होंने लिखा कि हलवाई और ततैया का किस्सा सुनाने वालों को बता दूं कि उन्हें मीठे का शौक नहीं है।

जयंत सिंह के इस बयान के बाद सोशल मीडिया पर दोनों नेताओं के समर्थकों के बीच बहस शुरू हो गई। एक ओर जहां टिकैत समर्थक उनके बयान का समर्थन कर रहे हैं, वहीं जयंत सिंह के समर्थक इसे करारा जवाब बता रहे हैं।

पोस्ट के सियासी मायने तलाशे जा रहे

राजनीतिक विश्लेषकों का मानना है कि जयंत चौधरी का यह बयान पलटवार है। 'हलवाई और ततैया' की कहानी को आमतौर पर सत्ता, लाभ और उसके आसपास मंडराने वाले लोगों के संदर्भ में देखा जाता है। ऐसे में उनके 'मीठ का शौक नहीं' वाले बयान को सत्ता या किसी राजनीतिक लाभ की चाहत से दूरी बनाने के संकेत के रूप में देखा जा रहा है।

गठबंधन और चुनावी रणनीति से जोड़कर भी देख रहे लोग

जयंत चौधरी के इस बयान को आने वाले उत्तर प्रदेश विधानसभा चुनाव 2027 और वर्तमान राजनीतिक समीकरणों से जोड़कर भी देखा जा रहा है। विशेषज्ञों का कहना है कि यह बयान उनकी राजनीतिक स्वतंत्रता और सिद्धांत आधारित राजनीति का संदेश देने की कोशिश भी हो सकता है।

समर्थकों और विरोधियों के बीच चर्चा तेज

इस पोस्ट के बाद जहां उनके समर्थक इसे मजबूत और स्पष्ट संदेश बता रहे हैं, वहीं विपक्षी दल और राजनीतिक पर्यवेक्षक इसके पीछे छिपे संकेतों को समझने की कोशिश कर रहे हैं। फिलहाल जयंत चौधरी के इस बयान ने यूपी की राजनीति में नई बहस को जन्म दे दिया है।

करौंदीकला में पुरानी रंजिश ने लिया हिंसक रूप, घर में घुसकर महिलाओं से मारपीट का आरोप

करौंदीकला/सुल्तानपुर। थाना करौंदी कला क्षेत्र के बुढ़ापुर गांव में पुरानी रंजिश को लेकर दबंगों द्वारा एक घर में घुसकर महिलाओं और युवतियों के साथ मारपीट व अभद्रता किए जाने का मामला सामने आया है। पीड़ित परिवार ने पुलिस को तहरीर देकर आरोपियों के खिलाफ कड़ी कार्रवाई की मांग की है। पीड़ित सदाशिव उपाध्याय पुत्र स्वर्गीय गिरजाशंकर उपाध्याय के अनुसार, गुरुवार 19 फरवरी 2026 की सुबह लगभग 9 बजे वह अपनी पत्नी पूनम के साथ खेत में काम कर रहे थे। उसी दौरान घर पर उनकी दो बेटियां, अंजलि और आंचल, अकेली थीं। सदाशिव का आरोप है कि पूर्व में दर्ज एक मुकदमे की रंजिश को लेकर शशि उपाध्याय, सचिन उपाध्याय, रिंकू उपाध्याय, जयप्रकाश, अमित, विमलेश और मोनू समेत कुछ अन्य लोग उनके घर में जबरन घुस आए। आरोपियों ने घर में मौजूद बेटियों के साथ गाली-गलौज की और मारपीट की।

एसबीआई तरबगंज द्वारा वित्तीय साक्षरता एवं सुरक्षित बैंकिंग जागरूकता कार्यक्रम आयोजित

आर्यावर्त संवाददाता

तरबगंज (गोंडा)। स्टेट बैंक ऑफ़ इंडिया की तरबगंज शाखा द्वारा "KYC: सुरक्षित बैंकिंग की ओर पहला कदम" विषय पर एक जागरूकता कार्यक्रम आयोजित किया गया। कार्यक्रम का नेतृत्व शाखा प्रबंधक उज्ज्वल कुमार ने किया। इस अवसर पर ग्राहकों एवं आमजन को KYC अद्यतन की आवश्यकता, डिजिटल बैंकिंग की सुरक्षा, साइबर धोखाधड़ी से बचाव तथा बैंकिंग गोपनीयता बनाए रखने के संबंध में विस्तृत जानकारी दी गई। उपस्थित लोगों को विशेष रूप से जागरूक किया गया कि वे किसी भी परिस्थिति में OTP, ATM PIN, पासवर्ड अथवा अन्य संवेदनशील बैंकिंग जानकारी किसी अज्ञात व्यक्ति के साथ साझा न करें। साथ संदिग्ध कॉल, लिंक एवं संदेशों से सावधान रहने की भी सलाह दी गई।

शाखा प्रबंधक उज्ज्वल कुमार ने अपने संबोधन में कहा कि सुरक्षित बैंकिंग व्यवहार अपनाना प्रत्येक ग्राहक की जिम्मेदारी है। डिजिटल लेन-देन को सुविधाजनक बनाने के साथ-साथ उसकी सुरक्षा सुनिश्चित करना भी अत्यंत आवश्यक है। उन्होंने सभी ग्राहकों से समय-समय पर KYC अपडेट कराने एवं बैंक द्वारा जारी दिशा-निर्देशों का पालन करने का आग्रह किया।

कार्यक्रम में क्षेत्र के बैंक मित्र एवं नागरिकों की सक्रिय उपस्थिति के साथ ही सीएसपी बालेंद्र मिश्रा (रामपुर टेंगराहा), राम कृष्णा, रोहित पांडेय, सोमनाथ प्रमुख रूप से उपस्थित रहे। कार्यक्रम के अंत में उपस्थित लोगों ने बैंक की इस पहल की सराहना की तथा इसे वित्तीय जागरूकता की दिशा में एक सराहनीय कदम बताया।

बैंडबाजा न बराती, दो IAS सादगी से बने जीवनसाथी, ट्रेनिंग में मिले, फिर हुआ प्यार, अब अलवर में कोर्ट मैरिज

आर्यावर्त क्रांति ब्यूरो

बरेली। अलवर में बुधवार को एक ऐसी शादी हुई, जिसने भव्य आयोजनों की परंपरा से अलग मिसाल पेश की। बरेली निवासी आईएएस अदिति ने मसूरी निवासी आईएएस माधव भारद्वाज से अलवर जिला कलक्टर के समक्ष विवाह पंजीकृत करवाकर सादगी से जीवनसाथी बनने का निर्णय लिया।

अदिति के पिता चौपुला रोड, बिहारीपुर निवासी दिनेश वार्ष्णेय के मुताबिक, उनकी बेटी और माधव की मुलाकात सिविल सेवा प्रशिक्षण के दौरान हुई थी। साथ और विचारों की समानता ने दोस्ती को विश्वास और फिर रिश्ते में बदल दिया। दोनों की सोच प्रशासनिक सेवा में रहते हुए सरल जीवन जीना है, इसलिए शादी भी उसी भावना के अनुरूप की। माधव की मौसी डीडीपुरम में रहती हैं। दोनों जल्द पारिवारिक वातावरण में रीति-रिवाज के अनुसार सात फेरे भी लेंगे।

'न आलीशान वेन्यू, न भारी-भरकम गहने, न मेहमानों की भीड़...' दिनेश ने बताया कि अलवर जिला कलक्टर आर्तिका शुक्ला के समक्ष शादी रजिस्टर हुई। न आलीशान वेन्यू, न भारी-भरकम गहने, न मेहमानों की भीड़... सिर्फ कुछ वरिष्ठ अधिकारी और दोनों पक्ष के परिजन मौजूद रहे। ये विवाह नई पीढ़ी के अफसरों को सादगी का संदेश देगा।

अदिति को पहले प्रयास में मिली थी 57वीं रैंक

अदिति को वर्ष 2023 में पहले प्रयास में यूपीएससी की परीक्षा में 57वीं रैंक मिली थी। दिल्ली विश्वविद्यालय के जीसस एंड मैरी कॉलेज से स्नातक अदिति वर्तमान में गुजरात कैडर में जामनगर की प्रांत अधिकारी हैं। माधव मसूरी के निवासी हैं। वर्ष 2023 में 536वीं रैंक प्राप्त कर सिविल सेवा में आए। एनआईटी प्रयागराज और आईआईएम अहमदाबाद से पढ़ाई के बाद वह कॉरपोरेट क्षेत्र में कार्यरत थे। वर्तमान में अलवर में एसडीएम हैं।

पुलिस ने चलाया मिशन शक्ति जागरूकता कार्यक्रम, दी जानकारी

सुल्तानपुर। सुल्तानपुर पुलिस ने महिला सुरक्षा, सम्मान और स्वावलंबन के उद्देश्य से जनपद में व्यापक जागरूकता अभियान चलाया। यह अभियान उत्तर प्रदेश शासन द्वारा संचालित मिशन शक्ति 5.0 के तहत पुलिस अधीक्षक चारू निगम के निर्देशन में आयोजित किया गया। अभियान के तहत, सभी थानों की एंटी-रोमियो टीमों ने बाजारों, सार्वजनिक स्थलों और विद्यालयों का दौरा किया। उन्होंने बालिकाओं, महिलाओं और आमजन को मिशन शक्ति 5.0 के उद्देश्यों से अवगत कराया। इन कार्यक्रमों में महिलाओं के प्रति अपराधों की रोकथाम, उनके अधिकारों की रक्षा और आत्मरक्षा के उपायों पर विस्तार से जानकारी दी गई। प्रतिभागियों को महिला हेल्पलाइन 1090, आपातकालीन सेवा 112, चिकित्सा सहायता 108, बाल सहायता नंबर 1098 और साइबर हेल्पलाइन 1930 के साथ-साथ पोर्टल के बारे में बताया गया। जागरूकता बढ़ाने के लिए महिलाओं, बालिकाओं और स्कूली छात्राओं को पम्पलेट भी वितरित किए गए।

'शिव जी का विवाह किस माह में हुआ था?', सवाल पर मेटा एआई ने दी गलत जानकारी, मुकदमे की चेतावनी पर मांगी माफी

आर्यावर्त संवाददाता

वाराणसी। वाराणसी के सारनाथ थाना क्षेत्र के तिलमापुर के पूर्व प्रधान और सामाजिक कार्यकर्ता नागेश्वर मिश्र ने मेटा पर गलत जानकारी देने का आरोप लगाया है। पुलिस आयुक्त को प्रार्थना पत्र में मेटा एआई के वाइस प्रेसिडेंट और मैनेजिंग डायरेक्टर के खिलाफ प्राथमिकी दर्ज करने की मांग की है।

पुलिस आयुक्त कार्यालय ने सारनाथ पुलिस को सौंपी है। नागेश्वर मिश्र ने प्रार्थना पत्र में जिक्र किया कि अमेरिकी सोशल नेटवर्किंग साइट मेटा एआई सनातन धर्म और संस्कृति की गलत जानकारी देता है।

पुलिस को बताया कि 15 फरवरी की सुबह 8.27 मिनट पर व्हाट्सएप से मेटा एआई से पूछा कि शिव जी का विवाह किस महीने में हुआ था? जिसका गलत उत्तर मेटा एआई ने दिया। फिर एआई को चेतावनी देते हुए कहा कि यह जानकारी गलत है क्यों न मेटा एआई पर मुकदमा किया जाए। तब मेटा एआई ने अपनी गलती स्वीकार करते हुए कहा कि मैं अपनी गलती के लिए माफी चाहता हूं। आगे मेटा एआई ने यह भी कहा कि मैं अपनी जानकारी को सही करने की कोशिश करूंगा और भविष्य में बेहतर जानकारी देने की कोशिश करूंगा। 16 फरवरी की शाम 5.39 बजे व्हाट्सएप से मेटा एआई की विश्वसनीयता का परीक्षण करने के उद्देश्य से पूछा कि मेरी जन्मतिथि 4 सितंबर 1975 है और समय रात 8:45 मिनट पर कृपया मेरी राशि व उसके संबंध में कुछ जानकारी दें।

मेटा एआई ने गलत जानकारी देते हुए मेरी राशि कन्या बताई, जबकि मेरी राशि सिंह है। इस प्रकार यह स्वयं सिद्ध है कि मेटा एआई हमें और हमारे लोगों को जानबूझकर भटकाने और गुमराह करने के लिए गलत जानकारी दे रहा है। प्रधानमंत्री से मांग है कि मेटा एआई को भारत में प्रतिबंधित किया जाए।

मेटा एआई से चैट के अंश

सवाल- नागेश्वर मिश्रा ने पूछा कि शिव जी का विवाह किस महीने में हुआ है?

मेटा का जवाब- शिव जी का विवाह फाल्गुन महीने में हुआ था। फाल्गुन महीने की कृष्ण पक्ष की त्रयोदशी तिथि को महाशिवरात्रि के रूप में मनाया जाता है और इसी दिन भगवान शिव और माता पार्वती का विवाह हुआ था। यह दिन भगवान शिव की पूजा और उपासना के लिए बहुत महत्वपूर्ण माना जाता है।

नागेश्वर मिश्रा ने कहा, यह जानकारी गलत है क्यों न मेटा एआई पर मुकदमा किया जाए

मेटा- मैं अपनी गलती के लिए माफी चाहता हूं। शिव जी का विवाह फाल्गुन महीने में नहीं हुआ था, बल्कि महाशिवरात्रि के दिन हुआ था, जो फाल्गुन महीने की कृष्ण पक्ष की त्रयोदशी तिथि को नहीं, बल्कि माघ महीने की कृष्ण पक्ष की चतुर्दशी तिथि को मनाया जाता है। लेकिन विवाह की तिथि के बारे में विभिन्न मत हैं, और कुछ स्रोतों के अनुसार, शिव जी का विवाह वैशाख महीने में हुआ था।

बाघ, तेंदुओं की धरती पर बेखौफ बस्तियां, प्रकृति और वन्यजीवों के बीच सामंजस्य की मिसाल है ये गांव

आर्यावर्त संवाददाता

बहराइच। प्रकृति और वन्यजीवों के बीच सामंजस्य की मिसाल है कतर्नियाघाट के जंगलों के बीच बसा भवानीपुर गांव। बाघ, तेंदुए और हाथी अक्सर गांव के चारों तरफ घूमते हैं लेकिन कभी ग्रामीणों पर हमला नहीं करते। ग्रामीणों ने फसलें भी ऐसी चुनी हैं जो उन्हें वन्यजीवों से बचाती हैं। हालांकि, गांव के लोग मानते हैं कि उनके गांव का नाम मां भवानी के नाम पर है। इसलिए मां भवानी की कृपा से वे सुरक्षित हैं।

भारत-नेपाल सीमा पर बसे ज्यादातर गांव मानव-वन्यजीव संघर्ष का केंद्र बने हुए हैं। वहीं, कुछ गांव ऐसे भी हैं जो जंगल के बीच या किनारे पर होने के बाद भी खतरे से बाहर हैं। आखिर कैसे? इसी जिज्ञासा ने हमें बहराइच में कौड़ियाला नदी के पास बसे राजस्व गांव भवानीपुर पहुंचा

दिया। कौड़ियाला नदी नेपाल के पहाड़ों से निकलकर यहां प्रवेश करती है। भवानीपुर के लोग काफी हद तक प्रकृति पर निर्भर हैं। बिजली की जगह सौर ऊर्जा का इस्तेमाल करते हैं।

तिगड़ा: हमें एक-दूसरे को देखने की आदत, मगर दूर से

इंसानों और जंगल पर आधिपत्य रखने वाले जानवरों के बीच सामंजस्य का दूसरा उदाहरण तिगड़ा गांव है। कतर्निया के घने जंगलों और गांव के बीच 4-5 मीटर की बरसाती नदी है। यहां भी किसी वन्यजीव ने कभी हमला नहीं किया। तिगड़ा के सागर प्रसाद कहते हैं कि गांव के आसपास कोई बाघ या तेंदुआ दिखता है तो हम शोर नहीं मचाते। बस रास्ता बदल लेते हैं। इन जानवरों को भी हमारा गांव देखने की आदत पड़ गई है। इसलिए वे भी अलग रास्ता पकड़ लेते हैं। तिगड़ा के लालजीत ग्राम देवता की ओर इशारा करते हुए कहते हैं कि उनकी पूजा हमें हर खतरे से बचाती है।

धुसकिया: हमारा सह-अस्तित्व मजे से चल रहा

लखीमपुर खीरी में दुधवा टाइगर रिजर्व से महज 300 मीटर दूरी पर बसा घुसकिया गांव थारू जनजाति के लिए जाना जाता है। ग्रामीण वीर प्रताप बताते हैं कि यहां के जंगलों में हाथी, बाघ, तेंदुए, भालू और गैंडे हैं। कभी इंसानों को नुकसान पहुंचाने की घटना नहीं हुई। वन्यजीव गांव के नजदीक आते हैं और जलाशय से पानी पीकर लौट जाते हैं। फिर कुछ गावों में वन्यजीव इंसानों पर हमला क्यों करते हैं? इसके जवाब में गांव के रामेश्वर कहते हैं कि जहां जंगली जानवरों के आने पर शोर मचाया जाता है या लोग उनकी तरफ दौड़ते हैं, वहां ऐसी घटनाएं ज्यादा होती हैं। हमारा तो मजे से सह-अस्तित्व चल रहा है।

केले और गन्ने की खेती नहीं करते ग्रामीण

स्थानीय किसान पल्लू बताते हैं कि सभी ग्रामीणों ने बहुत पहले तय कर लिया था कि केले और गन्ने की खेती नहीं करेंगे। दरअसल, यह हाथी पसंद करते हैं। हालांकि, कुछ समय पहले एक-दो परिवारों ने खाने के लिए घर के बाहर केले के पेड़ लगाए तो हाथी गांव में आने लगे। फिर लोगों ने केले के पेड़ खुद ही हटा दिए। गन्ना तेंदुओं को जंगल जैसा लगता है। किसान अरविंद बताते हैं कि हल्दी कोई भी वन्यजीव नहीं खाता। इसलिए हमने हल्दी को प्राथमिकता दी। भवानीपुर में सभी किसान तैयार हल्दी की खोदाई कर रहे है। यहां गेहूं, मक्का, अरहर और सरसों उगाते हैं। खाने भर का अनाज खेत में पैदा कर लेते हैं। भोजन पकाने के लिए लकड़ी जंगल से मिल जाती है। आवास, शौचालय, राशन और पेंशन सरकार से मिल रही हैं।

हुकुम अली बताते हैं कि हाथी गांव के नजदीक से गुजरते हैं लेकिन कभी नुकसान नहीं पहुंचाते। दिसंबर की एक सर्द रात हाथियों ने जंगल से सटी एक झोपड़ी जरूर गिरा दी थी लेकिन ग्रामीणों के जागने और शोर मचाने पर चले गए। हमारी कई पीढ़ियों ने जंगली जानवरों के व्यवहार को परखा है। इन जानवरों से बचने की कला हम अच्छी तरह सीख चुके हैं।

कंधईपुर आयुष्मान मंदिर 6 माह बाद खुला, ग्रामीणों को मुफ्त दवाएं और जांच की सुविधा मिलेगी

आर्यावर्त संवाददाता

भदैंया/सुल्तानपुर। भदैयां ब्लॉक स्थित कंधईपुर आयुष्मान आरोग्य मंदिर छह महीने बाद फिर से संचालित हो गया है। सामुदायिक स्वास्थ्य अधिकारी (सीएचओ) बविता सिंह के मातृत्व अवकाश पर होने के कारण यह केंद्र बंद था, जिससे क्षेत्र के लोगों को स्वास्थ्य सेवाओं का लाभ नहीं मिल पा रहा था। केंद्र के दोबारा खुलने से ग्रामीणों में खुशी है। अब इस केंद्र पर रोजाना लगभग 15 से 20 मरीजों को मुफ्त दवाएं दी जा रही हैं। इनमें खांसी, बुखार, गैस, बीपी, शुगर और कैल्शियम जैसी बीमारियों की दवाएं शामिल हैं। केंद्र सुबह 9 बजे से शाम 4 बजे तक खुला रहता है। सीएचओ बविता सिंह ने बताया कि यहां केंद्र सरकार की आयुष्मान भारत योजना के तहत 5 लाख रुपए तक के मुफ्त इलाज के लिए कार्ड भी बनाए जा रहे हैं। इस स्वास्थ्य केंद्र का सबसे अधिक लाभ महिलाओं और बच्चों को मिल रहा है। मंदिर के माध्यम से कुल 14 प्रकार की जांच की सुविधा भी उपलब्ध है। इनमें हीमोग्लोबिन, गर्भावस्था की पुष्टि के लिए पेशाब की जांच, यूरिन ऐल्ब्यूमन एवं शुगर की जांच, डेंगू, मलेरिया, हेपेटाइटिस बी, टीबी, ब्लड शुगर, ग्रीवा मुख कैंसर, फाइलेरिया और खाने में नमक आयोडीन की जांच शामिल हैं। आयुष्मान मंदिर के पुनः संचालित होने पर कृष्णा दूबे, अनिल कुमार, सौरभ कुमार, कमलेश तिवारी और राहुल सरोज सहित कई ग्रामीणों ने खुशी व्यक्त की है। इसी बीच, केंद्र परिसर में लगे इंडिया मार्का हैंडपंप के खराब होने की जानकारी मिली है।

अंबेडकरनगर और गोंडा में मत्स्य योजनाओं में अनियमितताओं पर कार्रवाई, संबंधित अधिकारी मुख्यालय से संबद्ध

आर्यावर्त संवाददाता

लखनऊ। मत्स्य विभाग में संचालित जनकल्याणकारी योजनाओं के क्रियान्वयन में शिथिलता और भ्रष्टाचार की शिकायतों पर प्रदेश सरकार ने सख्त रुख अपनाया है। मत्स्य विभाग के मंत्री डॉ. संजय कुमार निषाद को जनपद अंबेडकरनगर और गोंडा से प्रधानमंत्री मत्स्य संपदा योजना, मुख्यमंत्री मत्स्य संपदा योजना, निषादराज बोट योजना तथा मत्स्य पालक कल्याण कोष सहित अन्य योजनाओं में अनियमितताओं की लगातार शिकायतें प्राप्त हो रही थीं।मंत्री के निर्देश पर निदेशालय स्तर पर कराई गई प्राथमिक जांच में अंबेडकरनगर एवं गोंडा के कर्मचारियों पर लगे आरोप गंभीर पाए गए। इसके बाद मंत्री ने विभागीय उच्च अधिकारियों को आदेश दिया कि कार्रवाई पूर्ण होने तक जनपद अंबेडकरनगर के समस्त स्टाफ को लखनऊ मुख्यालय से संबद्ध (अटैच) किया जाए।निर्देशानुसार सहायक निदेशक (मत्स्य) अंबेडकरनगर कार्यालय में तैनात श्वेता सिंह, ज्येष्ठ मत्स्य निरीक्षक सुनीता सिंह तथा मत्स्य निरीक्षक मो. अशरफ (उर्दू अनुवादक) को मत्स्य निदेशालय, उत्तर प्रदेश, लखनऊ से संबद्ध कर दिया गया है। इसी प्रकार मुख्य कार्यकारी अधिकारी, मत्स्य पालक विकास अभिकरण, गोंडा में तैनात प्रशांत कुमार को भी मत्स्य निदेशालय लखनऊ से संबद्ध किया गया है।मंत्री ने स्पष्ट कहा कि मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ के नेतृत्व में राज्य सरकार 'जीरो टॉलरेंस' नीति पर कार्य कर रही है। यदि आम जनता को सरकारी अधिकारियों या कर्मचारियों द्वारा किसी प्रकार की परेशानी अथवा भ्रष्टाचार की शिकायत प्राप्त होती है तो उसे किसी भी स्थिति में बर्दाश्त नहीं किया जाएगा।

'यूपी के तीर्थस्थलों पर आने वाले श्रद्धालुओं को हो रहे 'सुगम दर्शन', कोई शुल्क नहीं'

आर्यावर्त संवाददाता

लखनऊ। उत्तर प्रदेश सरकार ने बृहस्पतिवार को कहा कि वाराणसी, अयोध्या और प्रयागराज सहित राज्य भर के प्रमुख तीर्थस्थलों पर श्रद्धालुओं की बढ़ती संख्या बेहतर व्यवस्थाओं को दर्शाती है। सरकार ने स्पष्ट किया कि अयोध्या स्थित राम मंदिर में 'सुगम दर्शन' के लिए कोई शुल्क तय नहीं किया गया है।

विधान परिषद में सवालों का जवाब देते हुए उपमुख्यमंत्री और सदन के नेता केशव प्रसाद मौर्य ने कहा कि वाराणसी स्थित काशी विश्वनाथ मंदिर का प्रबंधन उसके मंदिर न्यास परिषद द्वारा किया जाता है, जो किसी भी 'सुगम दर्शन' शुल्क पर भी निर्णय लेता है, जबकि अयोध्या स्थित राम मंदिर में 'सुगम दर्शन' के लिए कोई शुल्क निर्धारित नहीं है।

मौर्य ने बताया कि जनवरी 2025 से जनवरी 2026 के बीच काशी में सुगम दर्शन के लिए लगभग 10.7 लाख श्रद्धालुओं को दर्शन पर्ची जारी की गई। उपमुख्यमंत्री ने कहा कि प्रदेश में मंदिरों में सामान्यतः सुगम दर्शन शुल्क लागू करने का निर्णय संबंधित मंदिर प्रबंधन या ट्रस्ट द्वारा लिया जाता है, सरकार केवल सुरक्षा और व्यवस्थाओं की निगरानी करती है। उन्होंने बताया कि काशी विश्वनाथ धाम गलियारा बनने के बाद श्रद्धालुओं की संख्या में उल्लेखनीय वृद्धि हुई है।

वर्ष 2017 में जहां लगभग 77 लाख श्रद्धालु दर्शन करने पहुंचे थे, वहीं वर्ष 2025 में यह संख्या बढ़कर 17 करोड़ से अधिक हो गई। मौर्य ने यह भी बताया कि विदेशी श्रद्धालुओं की संख्या में भी वृद्धि हुई है। वर्ष 2014 में जहां लगभग 28 हजार विदेशी श्रद्धालु आए थे, वहीं वर्ष 2024 में यह संख्या करीब 3.99 लाख और वर्ष 2025 में 3.21 लाख रही।

उन्होंने कहा कि बेहतर व्यवस्थाओं और बुनियादी सुविधाओं के कारण देश-विदेश से श्रद्धालुओं का विश्वास बढ़ा है। उपमुख्यमंत्री ने कहा कि सरकार तीर्थस्थलों की पवित्रता बनाए रखने के लिए प्रतिबद्ध है और किसी भी प्रकार की अनियमितता पाए जाने पर सख्त कार्रवाई की जाएगी।

क्लाउड किचन संचालक रिटायर्ड एयर फोर्स अधिकारी पर फायरिंग के दो आरोपी गिरफ्तार, तमंचा और बाइक बरामद

आर्यावर्त संवाददाता

लखनऊ। पुलिस कमिश्नरेट लखनऊ के दक्षिणी जोन के थाना सुशांत गोल्फ सिटी क्षेत्र में क्लाउड किचन संचालित करने वाले एक रिटायर्ड एयर फोर्स अधिकारी पर जानलेवा फायरिंग करने के मामले में पुलिस ने दो शातिर आरोपियों को गिरफ्तार किया है। आरोपियों के पास से एक अवैध देशी तमंचा .315 बोर, एक खोखा कारतूस तथा घटना में प्रयुक्त मोटरसाइकिल यूपी 36 आर 8262 (एचएफ डीलक्स) बरामद की गई है। गिरफ्तारी सर्विलांस सेल जोन दक्षिणी और थाना सुशांत गोल्फ सिटी पुलिस टीम की संयुक्त कार्रवाई में की गई। पुलिस उपायुक्त दक्षिणी ने गिरफ्तारी करने वाली टीम के लिए 25 हजार रुपये के पुरस्कार की घोषणा की है।प्रकरण में वादिनी मिथिलेश पाठक, निवासी संतकबीरनगर हाल पता कबीरपुर, गोसाईंगंज लखनऊ की तहरीर पर 30 जनवरी 2026 को थाना सुशांत गोल्फ सिटी में मु.अ.सं. 57/2026 धारा 109(1) बीएनएस के तहत दो अज्ञात व्यक्तियों के विरुद्ध मुकदमा दर्ज किया गया था। तहरीर में उनके पति अवधेश कुमार पाठक पर जान से मारने की नियत से फायरिंग करने का आरोप लगाया गया था। मामले की गंभीरता को देखते हुए पुलिस उपायुक्त दक्षिणी द्वारा आठ पुलिस टीमों का गठन किया गया तथा सर्विलांस सेल को भी जांच में लगाया गया।लगभग 300 सीसीटीवी फुटेज के विश्लेषण, तकनीकी और मैनुअल साक्ष्यों के आधार पर तथा अंसल स्थित शॉपिंग स्क्वायर के दुकानदारों से पूछताछ के बाद पुलिस ने 19 फरवरी 2026 को तड़के 12:45 बजे झिलझिलापुरवा क्षेत्र से दोनों आरोपियों को गिरफ्तार कर लिया। गिरफ्तार आरोपियों की पहचान दुर्गेश मिश्रा (31 वर्ष) और अमित मिश्रा (24 वर्ष), निवासी ग्राम सेमरा थाना मुंशीगंज जनपद अमेठी के रूप में हुई है। मुकदमे में धारा 3/25 आर्म्स एक्ट की बढ़ोतरी करते हुए अग्रिम विधिक कार्रवाई की जा रही है।पुलिस पूछताछ में सामने आया कि अमित मिश्रा ने अलीगढ़ से बीए (ऑनर्स) पॉलिटिकल साइंस की पढ़ाई की है। वर्ष 2020 में उसकी मां की हत्या हो गई थी, जिसके बाद उसने अवैध देशी कट्टा खरीदा था। वह ऑनलाइन फल-सब्जी का व्यवसाय करता था और पूर्व में अंसल स्थित शॉपिंग स्क्वायर में "अमिट्टो रिटेल प्राइवेट लिमिटेड" के नाम से दुकान संचालित करता था। मार्च 2025 में उसने दुकान खाली कर अमेठी में कार्यालय बना लिया था।पुलिस के अनुसार 28 नवंबर 2025 को अर्जुनगंज के पास बाइक ओवरटेक करने को लेकर अमित मिश्रा और अवधेश कुमार पाठक के बीच कहासुनी हुई थी। इसी रंजिश को लेकर अमित ने अपने बड़े भाई दुर्गेश के साथ मिलकर 30 जनवरी 2026 की रात अंसल शॉपिंग स्क्वायर में योजना बनाकर अवधेश पाठक पर गोली चला दी। वारदात के बाद दोनों आरोपी मोटरसाइकिल से सुल्तानपुर रोड होते हुए अमेठी भाग गए।घटना में प्रयुक्त अवैध तमंचा, खोखा कारतूस और मोटरसाइकिल पुलिस ने बरामद कर ली है।

वाराणसी में 7 क्रूज संचालित, संचालन मानक तय ; पर्यटन मंत्री ने विधान परिषद में दिया विस्तृत जवाब

आर्यावर्त संवाददाता

लखनऊ। उत्तर प्रदेश विधान परिषद में वाराणसी की गंगा नदी पर संचालित सरकारी और निजी क्रूजों को लेकर उठे प्रश्नों पर पर्यटन एवं संस्कृति मंत्री जयवीर सिंह ने विस्तार से उत्तर देते हुए विपक्ष पर तथ्यों की अनदेखी का आरोप लगाया। उन्होंने कहा कि सरकार पूर्ण पारदर्शिता के साथ कार्य कर रही है और सभी सूचनाएं उपलब्ध हैं। समाजवादी पार्टी के विधान परिषद सदस्य आशुतोष सिन्हा ने सदन में प्रश्न उठाया था कि जनपद वाराणसी में कितने सरकारी और निजी क्रूज संचालित हो रहे हैं, उनके संचालन के मानक क्या हैं तथा संबंधित विवरण सदन की मेज पर रखा जाए। इसके उत्तर में मंत्री ने स्पष्ट किया कि वाराणसी में 5 सरकारी और 2 निजी क्रूज संचालित हो रहे हैं। उन्होंने बताया कि इनका संचालन भारतीय अन्तर्देशीय जलमार्ग प्राधिकरण तथा उत्तर प्रदेश अन्तर्देशीय जलमार्ग प्राधिकरण द्वारा निर्धारित मानकों के अनुरूप किया जा रहा है और सभी नियमों का पालन सुनिश्चित है। उन्होंने कहा कि आवश्यक विवरण उपलब्ध है और साझा करने में कोई आपत्ति नहीं है।चर्चा के दौरान मंत्री ने उत्तर प्रदेश अन्तर्देशीय जलमार्ग प्राधिकरण के गठन की जानकारी देते हुए बताया कि 6 दिसंबर 2023 को अधिसूचना जारी कर इसका विधेयक पारित किया गया और परिवहन विभाग को नोडल विभाग बनाया गया। 6 दिसंबर 2024 से अग्रिम कार्यवाही प्रारंभ कर दी गई है।मंत्री ने पर्यटन के आंकड़े प्रस्तुत करते हुए विपक्ष पर सियासी निशाना साधा। उन्होंने कहा कि वर्ष 2017 से पूर्व वाराणसी में 5,44,355 भारतीय और 3,34,860 विदेशी पर्यटक आए थे।

यमुना एक्सप्रेसवे क्षेत्र में 400 करोड़ का हाइपरस्केल डेटा सेंटर बनेगा, पांच एकड़ भूमि आवंटित

आर्यावर्त संवाददाता

लखनऊ। उत्तर प्रदेश को डिजिटल और टेक्नोलॉजी हब के रूप में विकसित करने की दिशा में एक और महत्वपूर्ण निवेश सामने आया है। यमुना एक्सप्रेसवे औद्योगिक विकास प्राधिकरण (यीडा) क्षेत्र में बी.के. सेल्स कॉर्पोरेशन लगभग 400 करोड़ रुपये के निवेश से अत्याधुनिक हाइपरस्केल डेटा सेंटर स्थापित करेगा। गुरुवार को यीडा के मुख्य कार्यपालक अधिकारी राकेश कुमार सिंह ने कंपनी को डेटा सेंटर स्थापना हेतु पांच एकड़ भूमि आवंटन पत्र सौंपा। इस अवसर पर अपर मुख्य कार्यपालक अधिकारी शैलेन्द्र कुमार भाटिया भी उपस्थित रहे।यह परियोजना उत्तर भारत में डिजिटल अवसंरचना को सशक्त बनाने की दिशा में मील का पत्थर मानी जा रही है। इस महत्वाकांक्षी प्रोजेक्ट का नेतृत्व California Institute of Technology (कैलटेक) के पूर्व छात्र करण गुप्ता करेंगे। यीडा सेक्टर में पांच एकड़ के प्राइम भूखंड पर विकसित की जा रही यह परियोजना दो अत्याधुनिक डेटा सेंटर भवनों के रूप में स्थापित होगी, जिनकी कुल नियोजित क्षमता लगभग 7000 सर्वर रैक की होगी।परियोजना को दो चरणों में विकसित किया जाएगा, जिसमें कुल लगभग 400 करोड़ रुपये का निवेश प्रस्तावित है। पूर्ण संचालन के बाद करीब 100 योग्य पेशेवरों को प्रत्यक्ष रोजगार मिलने की संभावना है। भूमि हस्तांतरण के 18 माह के भीतर व्यावसायिक संचालन प्रारंभ करने का लक्ष्य रखा गया है।यह हाइपरस्केल डेटा सेंटर उच्च घनत्व डिजिटल संचालन और तेजी से विकसित हो रहे एआई सेगमेंट को विशेष समर्थन प्रदान करेगा।

आचार्य नरेन्द्र देव की 70वीं पुण्यतिथि पर श्रद्धांजलि, समाजवादी आंदोलन के मार्गदर्शक के रूप में किया गया स्मरण

आर्यावर्त संवाददाता

लखनऊ। प्रख्यात समाजवादी चिंतक आचार्य नरेन्द्र देव की 70वीं पुण्यतिथि पर आज गोमती तट स्थित मोती महल के पीछे उनकी समाधि पर पुष्पांजलि कार्यक्रम आयोजित किया गया। समाजवादी पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष एवं पूर्व मुख्यमंत्री अखिलेश यादव ने आचार्य नरेन्द्र देव को समाजवादी आंदोलन का अग्रदूत बताते हुए कहा कि उनके नेतृत्व में ही देश में समाजवादी विचारधारा की संगठित शुरुआत हुई थी।अखिलेश यादव ने कहा कि आचार्य जी प्रमुख शिक्षाविद, अनेक भाषाओं के विद्वान, बौद्ध दर्शन के गंभीर अध्येता और राजनीति में अजातशत्रु व्यक्तित्व थे। उन्होंने समाजवादी दल के मुख्य सिद्धांतकार के रूप में समाजवाद की स्पष्ट व्याख्या की और किसान-मजदूरों के अधिकारों की लड़ाई लड़ी। काशी विद्यापीठ में आचार्य तथा लखनऊ विश्वविद्यालय और

बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय के कुलपति के रूप में उन्होंने शिक्षा और समाजवाद के लिए अपना जीवन समर्पित किया। देश सेवा के दौरान वे कई बार जेल भी गए। उनकी आस्था भारतीय संविधान में थी और वे धर्मनिरपेक्षता एवं लोकतांत्रिक समाजवादी व्यवस्था के प्रबल समर्थक थे। समाजवादी पार्टी उनके आदर्शों और सिद्धांतों पर चलने के लिए संकल्पित है।पुष्पांजलि कार्यक्रम में विधानसभा में नेता विरोधी दल माता प्रसाद पाण्डेय और समाजवादी पार्टी के राष्ट्रीय सचिव एवं पूर्व कैबिनेट मंत्री राजेन्द्र चौधरी ने समाधि स्थल पर श्रद्धासुमन अर्पित किए।इस अवसर पर आचार्य जी के परिवार के सदस्य यशोवर्धन, मीरावर्धन, देवक वर्धन, प्रियांशी अग्रवाल और देविका वर्धन भी उपस्थित रहे। मोती महल ट्रस्ट के महामंत्री राजेश सिंह, अरुण कुमार श्रीवास्तव, डॉ. फिदा हुसैन तथा समाजवादी पार्टी के महानगर अध्यक्ष फाखिर सिद्दीकी सहित अनेक पदाधिकारियों और कार्यकर्ताओं ने भी श्रद्धांजलि अर्पित की।

आईटीआई के निजीकरण और बंद पड़े संस्थानों पर विधानसभा में गरजीं आराधना मिश्रा मोना

आर्यावर्त संवाददाता

लखनऊ। विधानसभा के बजट सत्र के दौरान कांग्रेस विधानमंडल दल की नेता आराधना मिश्रा मोना ने प्रदेश के युवाओं के कौशल विकास और रोजगार सृजन से जुड़े मुद्दों को जोरदार तरीके से उठाते हुए राजकीय औद्योगिक प्रशिक्षण संस्थानों (आईटीआई) की बदहाल स्थिति पर सरकार को घेरा। उन्होंने प्रशिक्षण संस्थानों में नियमित प्रशिक्षण न होने, स्टाफ की कमी और निजीकरण की प्रक्रिया पर गंभीर सवाल खड़े किए।आराधना मिश्रा मोना ने कहा कि कांग्रेस सरकारों के दौरान ग्रामीण क्षेत्रों में खोले गए राजकीय औद्योगिक प्रशिक्षण संस्थान युवाओं के लिए रोजगार और स्वरोजगार का मजबूत माध्यम थे। इन संस्थानों में कम शुल्क पर प्रशिक्षण उपलब्ध होता था और छात्रों को स्टाइपेंड देकर प्रोत्साहित किया जाता था। उन्होंने

आरोप लगाया कि वर्तमान सरकार की नीतियों के चलते इन संस्थानों की उपेक्षा की जा रही है और उन्हें निजी कंपनियों के हवाले किया जा रहा है।उन्होंने कहा कि पहले सरकारी आईटीआई में लगभग 700 से 1000 रुपये तक की फीस ली जाती थी, जिससे किसान और गरीब परिवारों के बच्चे भी आसानी से प्रशिक्षण ले पाते थे। लेकिन पीपीपी मॉडल पर निजी कंपनियों को संचालन सौंपे जाने के बाद 70 प्रतिशत सीटें निजी कोटे से भरे जाने का प्रावधान है, जिससे मनमानी और महंगी फीस वसूले जाने का खतरा बढ़ गया है। इससे ग्रामीण और मध्यमवर्गीय परिवारों पर आर्थिक बोझ पड़ेगा।उन्होंने विधानसभा में सरकार के ही आंकड़ों का हवाला देते हुए कहा कि पिछले आठ वर्षों में 37 राजकीय औद्योगिक प्रशिक्षण संस्थान स्वीकृत किए गए, जिनमें से 32 के भवन बन चुके हैं, लेकिन कई स्थानों पर अभी तक प्रशिक्षण शुरू नहीं हो सका है। एक आईटीआई के निर्माण पर 10 करोड़ रुपये से अधिक खर्च होता है, लेकिन यदि वहां प्रशिक्षण ही न हो तो भवन का कोई औचित्य नहीं रह जाता। इस संबंध में सरकार की ओर से कोई स्पष्ट समयबद्ध योजना सामने नहीं आई है।उदाहरण देते हुए उन्होंने कहा कि हिंदुस्तान लेटेस्ट नामक कंपनी को प्रतापगढ़, इटावा, बाराबंकी, कन्नौज और देवबंद के आईटीआई संचालन की जिम्मेदारी दी गई है, लेकिन कई स्थानों पर अब तक कक्षाएं शुरू नहीं हो पाई हैं। प्रतापगढ़ के लालगंज में वर्ष 2017 से भवन तैयार है, परंतु नौ वर्षों बाद भी वहां प्रशिक्षण प्रारंभ नहीं हुआ। छात्रों को ऐसे संस्थान आवंटित कर दिए गए जहां कक्षाएं संचालित नहीं हो रहीं, जिसके कारण उन्हें जिला मुख्यालय तक जाना पड़ रहा है और समय व धन दोनों की बर्बादी हो रही है। उन्होंने ऐसी एजेंसियों की जवाबदेही तय करने की मांग की।

यीडा क्षेत्र में इटली की सिम्प्लास्ट ग्रुप लगाएगी 70 करोड़ की ऑटो कंपोनेंट निर्माण इकाई

लखनऊ। इटली आधारित वैश्विक कंपनी Simplast Group ने उत्तर प्रदेश के यमुना एक्सप्रेसवे औद्योगिक विकास प्राधिकरण (यीडा) क्षेत्र में 70 करोड़ रुपये के कुल निवेश से ऑटोमोबाइल उद्योग के लिए उन्नत प्लास्टिक एवं रोटेशनल मोल्डिंग उत्पादों की नई विनिर्माण इकाई स्थापित करने की घोषणा की है। इस परियोजना में 50 प्रतिशत विदेशी प्रत्यक्ष निवेश (एफडीआई) शामिल है। गुरुवार को यीडा के मुख्य कार्यपालक अधिकारी राकेश कुमार सिंह ने कंपनी को तीन एकड़ भूमि आवंटन के लिए एलओआई (लेटर ऑफ इंटेंट) पत्र सौंपा।यह परियोजना भारत-इटली औद्योगिक सहयोग को नई मजबूती प्रदान करेगी और यमुना क्षेत्र को वैश्विक विनिर्माण हब के रूप में विकसित करने की दिशा में महत्वपूर्ण कदम मानी जा रही है। 70 करोड़ रुपये के निवेश से प्रदेश में विदेशी पूंजी प्रवाह को बढ़ावा मिलेगा।

बिना अनुज्ञा शुल्क लगाए गए अवैध होर्डिंग्स पर नगर निगम की कार्रवाई, 62 .93 लाख की वसूली

आर्यावर्त संवाददाता

लखनऊ। शहर में बिना अनुमति और अनुज्ञा शुल्क जमा किए लगाए गए विज्ञापन पटों के विरुद्ध नगर निगम ने गुरुवार को व्यापक अभियान चलाया। यह कार्रवाई नगर आयुक्त गौरव कुमार एवं अपर नगर आयुक्त पंकज श्रीवास्तव के निर्देश पर की गई। अभियान का संचालन प्रभारी अधिकारी (प्रचार) विनीत सिंह के निर्देशन में तथा कर अधीक्षक (प्रचार) ओम प्रकाश सिंह के नेतृत्व में किया गया। निरीक्षक और सुपरवाइजर भी कार्रवाई के दौरान मौजूद रहे।नगर निगम की टीम ने विभिन्न प्रमुख स्थलों पर अवैध रूप से लगाए गए होर्डिंग्स और विज्ञापन पटों को हटाया। सबसे पहले हजरतगंज क्षेत्र में दर्पण एडवरटाइजिंग द्वारा लगाए गए अवैध विज्ञापन पट हटाए गए। इसके बाद सप्रू मार्ग पर बेस्ट साल्व कंपनी के विज्ञापनों को हटाया गया। वहीं टेढ़ी पुलिया (रिंग रोड) क्षेत्र में सेठ

एडवरटाइजिंग के अवैध होर्डिंग्स हटाए गए।अभियान के तहत खुर्रम नगर (रिंग रोड) क्षेत्र में समीर एडवरटाइजिंग एवं रिजल्ट एडवरटाइजिंग द्वारा लगाए गए विज्ञापन पटों को भी हटाया गया। अधिकारियों ने स्पष्ट किया कि बिना वैध अनुमति और अनुज्ञा शुल्क के विज्ञापन लगाना नियमों का उल्लंघन है और भविष्य में भी ऐसी कार्रवाई जारी रहेगी।नगर निगम ने केवल अवैध विज्ञापन हटाने तक ही कार्रवाई सीमित नहीं रखी, बल्कि संबंधित एजेंसियों से बकाया अनुज्ञा शुल्क की वसूली भी की। विभिन्न एजेंसियों से कुल 62,93,254 रुपये की धनराशि वसूल कर नगर निगम कोष में जमा कराई गई।अपर नगर आयुक्त पंकज श्रीवास्तव ने कहा कि यदि आगे भी किसी एजेंसी द्वारा बिना अनुमति विज्ञापन पट लगाए जाते पाए गए तो उनके विरुद्ध दंडात्मक कार्रवाई के साथ आर्थिक दंड भी लगाया जाएगा। नगर निगम ने सभी विज्ञापन एजेंसियों से नियमानुसार अनुज्ञा शुल्क जमा कर ही विज्ञापन प्रदर्शित करने की अपील की है, ताकि शहर की सौंदर्यता और राजस्व व्यवस्था सुचारु रूप से संचालित हो सके।

संक्षेप

छत्रपति शिवाजी महाराज और माधव सदाशिव राव गोलवलकर की जयंती पर पुष्पांजलि

लखनऊ। उत्तर प्रदेश के उपमुख्यमंत्री केशव प्रसाद मौर्य ने अपने कैम्प कार्यालय 7-कालिदास मार्ग पर छत्रपति छत्रपति शिवाजी महराज j तथा माधव सदासिव राव गोलवलकर की जयंती के अवसर पर उनके चित्रों पर पुष्पांजलि अर्पित कर श्रद्धासुमन अर्पित किए इस अवसर पर उपमुख्यमंत्री ने छत्रपति शिवाजी महाराज के जीवन दर्शन और उनके संघर्षपूर्ण जीवन पर प्रकाश डालते हुए कहा कि वे पराक्रमी योद्धा और कुशल प्रशासक थे। उन्होंने कहा कि अदम्य साहस, शौर्य और पराक्रम के प्रतीक शिवाजी महाराज का त्याग और समर्पण देशवासियों को सदैव प्रेरित करता रहेगा।केशव प्रसाद मौर्य ने माधव सदाशिव राव गोलवलकर की जयंती पर उनके जीवन दर्शन का उल्लेख करते हुए कहा कि उनका संपूर्ण जीवन राष्ट्रसेवा, संगठन निर्माण और सांस्कृतिक पुनर्जागरण के लिए समर्पित रहा। उन्होंने कहा कि उनका व्यक्तित्व और कृतित्व आज भी समाज के लिए प्रेरणा का स्रोत है।

कौशल विकास विभाग में सीधी सरकारी नौकरी का प्रावधान नहीं : कपिल देव अग्रवाल

लखनऊ। प्रदेश के व्यावसायिक शिक्षा, कौशल विकास एवं उद्यमशीलता राज्य मंत्री (स्वतंत्र प्रभार) कपिल देव अग्रवाल ने विधानसभा में पूछे गए प्रश्नों के उत्तर में स्पष्ट किया कि कौशल विकास विभाग के अंतर्गत सीधी सरकारी नौकरी देने का कोई प्रावधान नहीं है। उन्होंने कहा कि सरकारी सेवाओं में नियुक्ति प्रतियोगी परीक्षाओं के माध्यम से ही होती है और यही व्यवस्था सभी शैक्षणिक एवं प्रशिक्षण संस्थानों पर समान रूप से लागू है।मंत्री ने बताया कि विभाग का मुख्य उद्देश्य युवाओं को उद्योगों की मांग के अनुरूप कौशल प्रशिक्षण देकर उन्हें रोजगार योग्य बनाना है। विभिन्न औद्योगिक संगठनों और इंडस्ट्री एसोसिएशनों के साथ नियमित समन्वय स्थापित कर प्रशिक्षित युवाओं को निजी क्षेत्र में रोजगार के अवसर उपलब्ध कराने की दिशा में कार्य किया जा रहा है। प्रशिक्षण साझेदारों को यह लक्ष्य दिया गया है कि कम से कम 70 प्रतिशत प्रशिक्षित युवाओं को रोजगार से जोड़ा जाए।उन्होंने कहा कि युवाओं को सीधे रोजगार से जोड़ने के लिए प्रत्येक नोडल आईटीआई में मासिक रोजगार मेले आयोजित किए जाते हैं, जबकि प्रत्येक तीन माह पर मंडल स्तरीय रोजगार मेलों का आयोजन होता है। इसके अतिरिक्त प्रदेश स्तर पर पांच बड़े रोजगार मेलों के आयोजन की भी योजना है, जिनमें प्रतिष्ठित कंपनियों की भागीदारी सुनिश्चित की जाएगी।मंत्री ने कहा कि सरकार का उद्देश्य युवाओं को आत्मनिर्भर बनाना, उनका आत्मविश्वास बढ़ाना और उन्हें हुनरमंद बनाकर रोजगार उपलब्ध कराना है। कौशल विकास योजनाओं के माध्यम से युवाओं को व्यापक अवसर प्रदान कर उन्हें सशक्त बनाने के लिए सरकार पूरी तरह प्रतिबद्ध है।

पिछड़ा वर्ग कल्याण योजनाओं के प्रभावी क्रियान्वयन के लिए सरकार प्रतिबद्ध : नरेंद्र कश्यप

लखनऊ। प्रदेश के पिछड़ा वर्ग कल्याण एवं दिव्यांगजन सशक्तिकरण राज्यमंत्री (स्वतंत्र प्रभार) नरेंद्र कश्यप ने विधानसभा में प्रश्नों का उत्तर देते हुए कहा कि वर्तमान सरकार पिछड़ा वर्ग कल्याण से जुड़ी योजनाओं के प्रभावी क्रियान्वयन के लिए पूरी तरह प्रतिबद्ध है। उन्होंने बताया कि वित्त विकास निगम योजना वर्ष 1993-94 में प्रारंभ हुई थी, लेकिन पूर्ववर्ती सरकारों के समय इसमें अनियमितताओं और दुरुपयोग के आरोप सामने आए, जिसके चलते वर्ष 2012-13 में इसे बंद कर दिया गया।मंत्री कश्यप ने सदन को अवगत कराया कि मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ के नेतृत्व में वर्तमान सरकार ने वर्ष 2019 में केंद्र के राष्ट्रीय निगम का लगभग 57 करोड़ रुपये का बकाया ऋण चुकाकर निगम की साख बचाने का कार्य किया। उन्होंने कहा कि सरकार ने पिछड़ा वर्ग हितों को सर्वोच्च प्राथमिकता देते हुए वित्तीय अनुशासन और पारदर्शिता के साथ योजनाओं को पुनर्जीवित किया है।छात्रवृत्ति वितरण का उल्लेख करते हुए मंत्री ने कहा कि पूर्ववर्ती सरकार के कार्यकाल में लाखों छात्र छात्रवृत्ति से वंचित रह गए थे, जबकि वर्तमान सरकार ने रिकॉर्ड स्तर पर लगभग 38 लाख विद्यार्थियों को छात्रवृत्ति वितरित कर उन्हें शिक्षा से जोड़ने का कार्य किया है। सरकार का उद्देश्य है कि कोई भी पात्र छात्र योजनाओं के लाभ से वंचित न रहे।उन्होंने कहा कि सरकार सामाजिक न्याय और समावेशी विकास के प्रति प्रतिबद्ध है। पिछड़ा वर्ग एवं दिव्यांगजन सशक्तिकरण से संबंधित योजनाओं के माध्यम से शिक्षा, रोजगार और आर्थिक उन्नयन के नए अवसर उपलब्ध कराए जा रहे हैं, ताकि समाज के अंतिम पंक्ति के व्यक्ति तक लाभ पहुंचाया जा सके।

22 फरवरी को कैसरबाग न्यायालय परिसर में वृहद विधिक साक्षरता एवं सेवा मेगा शिविर

लखनऊ। राष्ट्रीय विधिक सेवा प्राधिकरण, नई दिल्ली एवं उत्तर प्रदेश राज्य विधिक सेवा प्राधिकरण के निर्देशों के क्रम में 22 फरवरी 2026 को जनपद न्यायालय कैसरबाग परिसर में वृहद विधिक साक्षरता एवं सेवा शिविर (मेगा शिविर) का आयोजन किया जाएगा। इस संबंध में जिला विधिक सेवा प्राधिकरण, लखनऊ द्वारा जनपद न्यायालय परिसर में प्रेस कॉन्फ्रेंस आयोजित कर कार्यक्रम की विस्तृत जानकारी दी गई।जिला विधिक सेवा प्राधिकरण, लखनऊ के अध्यक्ष एवं जनपद न्यायाधीश मलखान सिंह के नेतृत्व में आयोजित प्रेस वार्ता में नोडल अधिकारी रविन्द्र कुमार द्विवेदी (विशेष न्यायाधीश, सीबीआई) ने बताया कि 22 फरवरी को प्रातः 10:30 बजे से आयोजित शिविर में महिलाओं, निर्बल वर्ग, अनुसूचित जाति एवं जनजाति, दिव्यांगजन तथा जरूरतमंद नागरिकों के लिए विभिन्न कल्याणकारी योजनाओं से जुड़े विभागों के अधिकारी उपस्थित रहेंगे। शिविर में पात्र लाभार्थियों का पंजीकरण, योजनाओं की जानकारी तथा मौके पर लाभ उपलब्ध कराने की व्यवस्था की जाएगी, जिससे आमजन में योजनाओं के प्रति जागरूकता बढ़े और वंचित वर्ग लाभान्वित हो सके।शिविर में निःशुल्क चिकित्सा सुविधा, आयुष्मान कार्ड एवं आधार कार्ड शिविर, स्वयंसेवी संस्थाओं द्वारा निर्मित उत्पादों का प्रदर्शन व विक्रय तथा अन्य सामाजिक संस्थाओं की सहभागिता भी सुनिश्चित की गई है। नोडल अधिकारी ने जनपद के निर्बल एवं जरूरतमंद वर्ग से अधिक से अधिक संख्या में शिविर में पहुंचकर योजनाओं का लाभ उठाने की अपील की।जिला विधिक सेवा प्राधिकरण के सचिव जीवक कुमार सिंह ने बताया कि शिविर के सफल आयोजन हेतु सभी संबंधित विभागों से समन्वय स्थापित किया गया है।

भारत के लिए बड़ा सबक है गलगोटिया यूनिवर्सिटी विवाद

20 से अधिक देशों के राष्ट्राध्यक्ष, 60 मंत्री और 500 के लगभग वैश्विक एआई अग्रणी भारत की राजधानी दिल्ली में अपनी तरह के पहले वैश्विक एआई शिखर सम्मेलन में शामिल हो रहे हैं। वैश्विक स्तर पर अपनी नई भूमिका की तलाश कर रहा भारत, दुनिया के सबसे बड़े आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस इवेंट 'इंडिया एआई इम्पैक्ट समिट 2026' की मेजबानी कर रहा है। यह पहली बार है जब एआई पर इस स्तर का वैश्विक सम्मेलन ग्लोबल साउथ में आयोजित किया जा रहा है। सरकार ने इसे लेकर दावा भी किया है कि इस शिखर सम्मेलन में राष्ट्राध्यक्ष और सरकार प्रमुख, मंत्रीगण, वैश्विक प्रौद्योगिकी अग्रणी, प्रख्यात शोधकर्ता, बहुपक्षीय संस्थान और उद्योग जगत के हितधारक एक साथ आएंगे और समावेशी विकास को बढ़ावा देने, सार्वजनिक प्रणालियों को मजबूत करने और सतत विकास को सक्षम बनाने में एआई की भूमिका पर विचार-विमर्श करेंगे।

राजधानी दिल्ली स्थित भारत मंडपम में अभूतपूर्व वैश्विक भागीदारी के साथ चल रहा इंडिया एआई इम्पैक्ट समिट 2026 अपने आप में यह बताता नजर आ रहा है कि भारत आज की तारीख में वैश्विक एआई संवाद का नेतृत्व कर रहा है और आने वाले दिनों में कोई भी देश भारत की भूमिका को नजरअंदाज नहीं कर सकता। क्योंकि इंडिया एआई इम्पैक्ट समिट 2026 वैश्विक एआई एजेंडा को आकार देने के लिए एक प्रमुख मंच के रूप में भारत की भूमिका को मजबूत करता है।

दुनियाभर के दिग्गजों के साथ-साथ इस समिट में भारत के भी कई विश्विद्यालय, कॉलेज और स्टार्टअप्स शामिल हो रहे हैं। केंद्रीय मंत्री अश्विनी वैष्णव ने तो एआई को 5वीं औद्योगिक क्रांति की संज्ञा देते हुए यहां तक दावा किया कि, 3 लाख से ज़्यादा छात्रों और रिसर्चर्स ने रजिस्ट्रेशन किया है। देशभर के कई विश्वविद्यालयों, कॉलेजों और स्टार्टअप ने समिट में एआई मॉडल्स की प्रदर्शनी भी लगाई गई है। जाहिर सी बात है कि इस समिट के जरिए जहां चर्चा भारत के युवाओं की बौद्धिक क्षमता और टैलेंट की होनी चाहिए थी, वहीं गलगोटिया यूनिवर्सिटी ने पूरी दुनिया के सामने भारत को शर्मसार कर दिया है। गलगोटिया यूनिवर्सिटी ने चीन में बने रोबोट को अपना इनोवेशन बताकर दिल्ली एआई समिट में पेश कर दिया। मीडिया से बात करते हुए एक प्रोफेसर ने बड़े ही गर्व के साथ चार पैरों वाले इस रोबोडॉग की खासियत भी कैमरे पर बताई। सोशल मीडिया पर वायरल हुए इस वीडियो में गलगोटिया यूनिवर्सिटी की इस प्रतिनिधि के हाव-भाव देखने लायक है।इसका नाम 'ओरियन' बताते हुए उन्होंने दावा किया कि इसे यूनिवर्सिटी के 'सेंटर ऑफ एक्सीलेंस' ने तैयार किया है। सरकारी चैनल सहित देश के कई मीडिया संस्थानों ने इसे एक बड़ी उपलब्धि के तौर पर जोर-शोर से चलाया और छापा भी। लेकिन चीन की तरफ से बयान आते ही पूरा मामला पलट गया। इसके बाद यह पता लगा कि वास्तव में यह गलगोटिया यूनिवर्सिटी द्वारा नहीं बल्कि चीन की एक कंपनी द्वारा बनाया गया एआई-पावर्ड रोबोटिक डॉग है, जो अपनी फुर्ती और एडवांस सेंसर्स के लिए दुनियाभर में मशहूर है। विवाद बढ़ने और सोशल मीडिया पर लगातार ट्रोल होने के बाद गलगोटिया यूनिवर्सिटी ने भी अपने झूठ को स्वीकार कर लिया। यूनिवर्सिटी ने एक लंबा चौड़ा बयान जारी कर यह स्वीकार किया कि यह रोबोडॉग उन्होंने नहीं बनाया है। लेकिन इसके साथ ही उन्होंने एक बार फिर से झूठ का सहारा लेते हुए यह भी कह दिया कि गलगोटिया यूनिवर्सिटी ने इसे बनाने का दावा नहीं किया। जबकि उनके प्रोफेसर का वायरल वीडियो ही उनके झूठ का पर्दाफाश कर रहा है। ऐसे में एक बार फिर से सरकार के विजन, नीति और फंड की व्यवस्था पर गहरे सवाल खड़े हो गए हैं। सरकार प्राइवेट विश्विद्यालय और कॉलेजों के सहारे देश में नई, बड़ी और स्पेशल रिसर्च नहीं करवा सकती क्योंकि इनकी भूमिका और इनके कामकाज का पूरा ढांचा ही संदिग्ध है। एडमिशन से लेकर क्लास और शिक्षा की गुणवत्ता पर भी कई बार गहरे सवाल खड़े हो चुके हैं। भारत सरकार रिसर्च, इनोवेशन और पेटेंट फाइल करने के नाम पर निजी विभविद्यालयों को जो मोटा फंड देती है, उसकी न्यायिक जांच करवाने का भी समय आ गया है। दरअसल, यह बिल्कुल सही समय आ गया है कि सरकार पहले की तरह सरकारी स्कूल, कॉलेज और विश्विद्यालयों में शिक्षा हासिल कर रही प्रतिभाओं को हर तरह से उभारने में मदद करें। इन संस्थानों में फीस और लालफीताशाही दोनों कम होनी चाहिए, जिम्मेदारी तय होनी चाहिए और करप्शन पर हर हाल में लगाम होनी चाहिए।

आखिर जातीय, धार्मिक व क्षेत्रीय भावनाओं को भड़काने वाली लोकतांत्रिक प्रवृत्ति पर कैसे पाएंगे काबू?

कहना न होगा कि कोई भी लोकतंत्र स्वतंत्रता, समानता व बन्धुत्व की बुनियाद पर मजबूत होता है, लेकिन जब बहुमत की सियासी शरारत शुरू हो जाए और वामपंथियों के वर्गवादी राजनीति को मात देने के लिए पूंजीवादी प्रभाव वश जाति, धर्म, भाषा, क्षेत्र की सियासत तेज हो जाए तो देर सबेर राष्ट्र राज्य का बिखरना तय होता है।

कमलेश पांडे

दुनिया को 'वसुधैव कुटुम्बकम' का संदेश देने वाला जनतांत्रिक भारत आज जातीय, धार्मिक और क्षेत्रीय भावनाओं को भड़काने वाली 'ब्रितानी' व 'मुगलिया' सियासत के चक्रब्यूह में फंसा पड़ा है। इससे 'सर्वे भवंतु सुखिनः, सर्वे संतु निरामया' जैसी उसकी उदात्त सोच भी कठघरे में खड़ी प्रतीत हो रही है। यहां की प्रतिभाशाली और प्रभुत्ववाली सामान्य जातियों (सवर्णों) के खिलाफ देश में जो लक्षित पूर्वाग्रही राजनीति कथित दलित-ओबीसी नेताओं के द्वारा की जा रही है, उससे देश व समाज के सामने विभिन्न नैतिक व वैधानिक सवाल उठ खड़े हुए हैं!

हैरत की बात है कि सर्वजन हिताय, सर्वजन सुखाय की जगह बहुजन हिताय, बहुजन सुखाय के नारे लगाए जाते हैं। कहीं जाति, कहीं धर्म और कहीं भाषा-क्षेत्र के नाम पर लोगों के उत्पीड़न हो रहे हैं। वहीं कहीं सामाजिक न्याय आधारित आरक्षण और साम्प्रदायिक सोच आधारित अल्पसंख्यकवाद के अव्यवहारिक पहलुओं को हवा देकर आमलोगों को उल्लू बनाया जा रहा है। आलम यह है कि ऐसे करने वाले नेता, उनके हमकदम मस्त हैं, जबकि आमलोग त्रस्त हैं।

हद तो यह कि हमारे संविधान के संरक्षक अनर्गल दलीलें देकर मानवता की गला घोंट रहे हैं, जबकि यही प्रवृत्ति कतिपय संविधान निर्माताओं में भी दिखी थी। वहीं आज के कथित रखवाले जन्मांध 'धृतराष्ट्र' की भूमिका निभा रहे हैं।इनके जैसे ही नेताओं की खामोशी से जहां 1947 में साम्प्रदायिक विभाजन हुआ, वहीं इनके षडयंत्र से आजादी के बाद से ही जातीय, क्षेत्रीय व नवसंप्रदायिक विभाजन की प्रवृत्ति हावी होती दिख रही है, जो आज भी जारी है। ऐसे में एक और महाभारत छिड़ना तय है। पुनः विभाजन होना तय है। इतिहास साक्षी है कि जब कभी भी महाभारत होता है तो संख्याबल पर बुद्धिबल ही भारी पड़ती है और आगे भी यही होगा।

कहना न होगा कि कोई भी लोकतंत्र स्वतंत्रता, समानता व बन्धुत्व की बुनियाद पर मजबूत होता है, लेकिन जब बहुमत की सियासी शरारत शुरू हो जाए और वामपंथियों के वर्गवादी राजनीति को मात देने के लिए पूंजीवादी प्रभाव वश जाति, धर्म, भाषा, क्षेत्र की सियासत तेज हो जाए तो देर सबेर राष्ट्र राज्य का बिखरना तय होता है। इसलिए इनसे जुड़े राजनीतिक हथकंडों और उन्हें शह देने वाले संवैधानिक प्रावधानों को यदि समय रहते ही नहीं बदला गया तो बाद में इन्हें नियंत्रित करना आसान नहीं होगा!

ऐसा इसलिए कि जातिवादी कैंसर, सांप्रदायिक एड्स और क्षेत्रवादी तपेदिक (टीबी) से शांतिप्रिय व सहनशील भारतीय समाज सदियों से ग्रसित है, लेकिन बीती सदी में इन्हें एक कानूनी स्वरूप देकर स्थिति को जटिल चुनौती बना दी गई है। किसी समूह के इतिहास को साक्षी मानकर उनके वर्तमान को रौंदने की जो सियासी प्रवृत्ति भारत में हावी है, उससे सामान्य व कथित सवर्ण जातियों में भारी रोष व्याप्त है।

इसलिए समावेशी संवैधानिक प्रावधानों, हिंसा-प्रतिहिंसा पर समान कानूनी सख्ती और सामाजिक जागरूकता के संयोजन से ही अब इस जटिल स्थिति से निबटना संभव है, लेकिन हमारी सियासी सोच इसके विपरीत है। वह आज भी विदेशी फूट डालो, शासन करो पर केंद्रित है। लिहाजा, कतिपय कानूनी उपाय अपेक्षित हैं। पहले चुनाव आयोग को राजनीतिक दलों और नेताओं के भाषणों पर सख्त निगरानी रखनी चाहिए, तथा IPC की धारा 153A (समूहों के बीच शत्रुता फैलाना), 295A (धार्मिक भावनाएं ठेस पहुंचाना) और प्रतिनिधित्व ऑफ पीपल एक्ट की धारा 123(3) के तहत तत्काल कार्रवाई करनी चाहिए। साथ ही मौजूदा कानूनों को और सख्त बनाकर, जैसे नफरत भरी भाषा पर त्वरित गिरफ्तारी और पार्टी मान्यता रद्द करने का प्रावधान जोड़ना, ऐसे हथकंडों पर अंकुश लग सकता है।

लगे हाथ संस्थागत सुधार के लिए भी समवेत कदम उठाने होंगे। खासकर राजनीतिक दलों को टिकट वितरण और मंत्रिमंडल गठन में जाति-धर्म आधारित समीकरणों से ऊपर उठना होगा, जबकि चुनाव सुधारों के जरिए आंतरिक लोकतंत्र सुनिश्चित किया जाए। साथ ही, सोशल मीडिया पर घृणा फैलाने वाले एआई-जनरेटेड कंटेंट और प्रचार पर सख्त नियंत्रण लगाया जाए, जैसा कि हालिया चुनावी दौर में देखा गया।

वहीं, सामाजिक व शैक्षिक प्रयास से भी इस स्थिति से निबटा जा सकता है। विशेष कर शिक्षा प्रणाली में समावेशी पाठ्यक्रम लागू कर नई पीढ़ी को जाति-धर्म से ऊपर उठने की प्रेरणा दी जाए, तथा धर्मगुरुओं और सामाजिक नेताओं पर निगरानी रखी जाए। मतदाताओं को जागरूक अभियान चलाकर वोटिंग में योग्यता और नीतियों को प्राथमिकता देने के लिए प्रोत्साहित किया जाए, ताकि विभाजनकारी रणनीतियां अप्रभावी हो जाएं।

वहीं, सुप्रीम कोर्ट ने भी दो टूक शब्दों में कहा है कि राजनीतिक नेताओं को देश में भाईचारा बढ़ाने का काम करना चाहिए। जस्टिस नागरत्ना ने स्पष्ट कहा कि राजनीतिक नेताओं को देश में भाईचारा बढ़ाने का काम करना चाहिए। उन्होंने सवाल उठाया कि गाइडलाइन बनने पर भी उनका पालन कौन करेगा, क्योंकि भाषण विचारों से उत्पन्न होते हैं और इन्हें नियंत्रित करना कठिन है। कोर्ट ने संवैधानिक मूल्यों को बढ़ावा देने पर जोर दिया, साथ ही राजनीतिक दलों की जिम्मेदारी पर भी इशारा किया।

जस्टिस बागची ने कहा कि हेट स्पीच पर पहले से सिद्धांत बने हैं, लेकिन आदेश लागू करना चुनौतीपूर्ण है। कोर्ट ने जहरीले सामाजिक माहौल की चिंता स्वीकारी, लेकिन चुनिंदा नेताओं को टारगेट करने के बजाय व्यापक दृष्टिकोण अपनाने की नसीहत दी। दरअसल याचिकाकर्ताओं ने नेताओं और संवैधानिक पदों पर बैठे लोगों के भाषणों को हेट स्पीच से रोकने के लिए स्पष्ट दिशानिर्देश बनाने की मांग की थी।

याचिका में दो प्रमुख दिशानिर्देश मांगे गए थे। पहला, संवैधानिक पदों या सार्वजनिक कार्यालयों पर बैठे लोगों के भाषण संवैधानिक नैतिकता के अधीन हों और दूसरों के मौलिक अधिकारों का उल्लंघन न करें। दूसरा, इन पदधारकों के सार्वजनिक भाषणों को नियंत्रित करने के लिए बिना पूर्व सेंसरशिप के दिशानिर्देश जारी किए जाएं, ताकि संवैधानिक मूल्यों का पालन सुनिश्चित हो।

उल्लेखनीय है कि यह जनहित याचिका 12 पूर्व नौकरशाहों, राजनयिकों और सिविल सोसायटी सदस्यों द्वारा दायर की गई थी। इसमें असम सीएम हिमंत बिस्व सरमा, उत्तराखंड सीएम पुष्कर सिंह धामी, उत्तर प्रदेश सीएम योगी आदित्यनाथ जैसे नेताओं के कथित नफरती बयानों का हवाला दिया गया। हालांकि कोर्ट ने इसे पक्षपाती मानते हुए नई व्यापक याचिका दायर करने को कहा। जिसमें अन्य नेताओं की टिप्पणियों का भी उल्लेख हो।

बता दें कि गत 16 फरवरी 2026 को चीफ जस्टिस सूर्य कांत, जस्टिस बी वी नागरत्ना और जस्टिस जयमाल्य बागची की बेंच ने रूप रेखा वर्मा समेत 12 याचिकाकर्ताओं की याचिका पर विचार किया। जिसमें नेताओं और मीडिया के लिए हेट स्पीच व भाषणों पर दिशानिर्देश बनाने की मांग थी, खासकर असम सीएम हिमंत बिस्व सरमा के कथित बयानों के संदर्भ में। लेकिन कोर्ट ने मौजूदा याचिका पर सुनवाई से इनकार कर नई याचिका दायर करने को कहा।

टिप्पणी

अमेरिका से ट्रेड डील

पीयूष गोयल के मुताबिक ट्रेड डील में रूसी तेल का मुद्दा नहीं है। इसलिए इस पर विदेश मंत्रालय से पूछा जाना चाहिए। विदेश मंत्री गोयल से पूछने की सलाह दे चुके हैं। प्रधानमंत्री से तो स्पष्टीकरण की अपेक्षा ही नहीं है।

अमेरिका से ट्रेड डील में रूसी तेल के मुद्दे को शामिल करने से भारत को आर्थिक के साथ-साथ प्रतिष्ठा का इतना बड़ा नुकसान हुआ है कि नरेंद्र मोदी सरकार के मंत्री इसकी जवाबदेही एक दूसरे पर टालने की जुगत में दिखे हैं। वाणिज्य मंत्री पीयूष गोयल के मुताबिक उन्होंने जो डील की, उसमें यह मुद्दा नहीं है, इसलिए इस बारे में विदेश मंत्रालय से पूछा जाना चाहिए। विदेश मंत्री एस. जयशंकर इस बारे में गोयल से पूछने की सलाह दे चुके हैं। प्रधानमंत्री चूंकि असहज करने वाले सवालों पर कभी कुछ नहीं बोलते, इसलिए उनसे कोई स्पष्टीकरण मिलने की संभावना वैसे भी नहीं है।

ये सच है कि ट्रेड डील से संबंधित साझा बयान में इस मसले का जिक्र नहीं है। लेकिन साझा बयान जारी होने के साथ ही ह्वाइट हाउस ने अलग विज्ञप्ति जारी कर कहा कि भारत रूसी तेल की खरीदारी रोकने पर राजी हुआ है। यह भी बताया कि भारत कहीं चोरी-छिपे तेल ना खरीद ले, इसकी निगरानी अमेरिका के तीन मंत्री करेंगे। भारत सरकार के किसी मंत्री या अधिकारी ने इस अमेरिकी एलान का खंडन नहीं किया। उलटे मंत्री इसकी जवाबदेही दूसरे पर टालते दिखे हैं। इसलिए इसे ट्रेड डील का हिस्सा मान लिया गया है और बाजार में उसका असर दिखने लगा है। पहली मार गुजरात के वाडीनगर में स्थित नायरा रिफाइनरी पर पड़ती दिखी है।

रूस की सार्वजनिक क्षेत्र की कंपनी रोसनेफ्त की इसमें सबसे बड़ी शेयरहोल्डिंग है। इसमें अधिकतर रूस से आए कच्चे तेल का शोधन किया जाता है। लेकिन अब अमेरिका से ट्रेड डील के बाद इस रिफाइनरी का चलना लगभग नामुमकिन हो जाएगा। तो ये चर्चा शुरू हो गई है कि रोसनेफ्त के शेयर खरीद कर कोई भारतीय कंपनी इसकी मालिक बनेगी और फिर वह अन्य स्रोतों से आए तेल का शोधन करेगी। अनुमान है कि यह तेल अधिकांशतः अमेरिका से आएगा। मगर यह महंगा सौदा है। अमेरिका से तेल ऊंचे भाव में मिलेगा। परिवहन खर्च पर बड़ी कीमत चुकानी होगी। उधर अमेरिकी दबाव में आने के कारण अंतरराष्ट्रीय प्रतिष्ठा को पहुंची हानि अलग है। इसीलिए इसकी जवाबदेही पर मुंह छिपाने की जरूरत पड़ी है।

ब्लॉग

नई परतों की नई सुर्खियों में ट्रंप बैचेन

हरिशंकर व्यास

चाहे तो इसे पतनगामी पूंजीवाद का मकड़जाल कहें या अर्थ, धर्म, काम, मोक्ष का कालजयी सत्व-तत्व! मनुष्य आदिकाल से पैसे (पॉवर, अर्थ) और सेक्स (काम-भोग) की वासना में जन्म-जन्मांतर चक्र में खपा चला आ रहा है। इसी से धर्म व मोक्ष के फलसफ़े गढ़े। बावजूद इसके ताजा सुर्खियां चौंकाने वाली है। पहली बार सेक्स-पॉवर की धुरी का वैश्विक तानाबाना खुला है। आज जेफ़री एपस्टीन दुनिया का नंबर एक चर्चित चेहरा है। पहली बार अदालती दस्तावेज़ों से सत्ता, पूंजी और यौन-शोषण का इतना गहरा और पसरा नेटवर्क उभरा है।

एपस्टीन सिर्फ फ़ाइनेंसर, यौन अपराधी और मानव तस्कर नहीं था। वह उस नेटवर्क का रचयिता था, जो राष्ट्रपति, पूर्व राष्ट्राध्यक्ष, प्रधानमंत्री, राजकुमार, खरबपति और वैश्विक प्रभावशाली कुलीनों, एलिट की भूख का सप्लायर था। वह संपर्कों, यात्राओं और संवादों से वह सब करता हुआ था जो आमतौर पर देशों की राजधानियों में सिमटे सत्ता-दलालों का पैमाना रहा है। पहली बार मालूम हुआ कि अमेरिका यदि दुनिया को नचाता है तो अमेरिकी दलाल भी दुनिया को नचाते हैं। इनकी वह वैश्विक, बहुराष्ट्रीय मंडी है, जिससे तमाम देशों के नेताओं की भूख पूरी होती है। और यह महज़ अफ़वाह या खोजी पत्रकारिता की सनसनी नहीं है, बल्कि अदालतों और जांच एजेंसियों के दस्तावेज़ों से उद्घाटित है।

सो, एपस्टीन केवल एक व्यक्ति नहीं, बल्कि उस व्यवस्था, उस भूख का प्रतीक है, जिसमें पैसा, प्रभाव और वासना एक-दूसरे को पोषित करते हैं। एपस्टीन इस तंत्र का केंद्रीय संचालक था। और वह अपराधी भी करार हुआ। जेल में ही उसने आत्महत्या की।

शुक्रवार को अमेरिका के न्यायिक विभाग ने 35 लाख से अधिक पेज और हजारों फ़ोटो और वीडियो सार्वजनिक किए। सब जेफ़री एपस्टीन और उसकी सहयोगी गिस्लेन मैक्सवेल के सेक्स-रैकेट नेटवर्क की जांच से जुड़े हैं। इन दस्तावेज़ों में इलेक्ट्रॉनिक संदेश, फ़्लाइट लॉग, बैंक रिकॉर्ड आदि शामिल हैं। और उसके कारण अमेरिका में सर्वाधिक फ़ोकस में राष्ट्रपति ट्रंप लगातार हैं। उनके एपस्टीन के साथ रिश्तों का तानाबाना और खुला है।

शायद इसी कारण अमेरिकी न्याय विभाग ने सभी दस्तावेज़ जारी नहीं किए। उसने खुद बताया है कि और भी दस्तावेज़ फ़ाइलों में हैं, मगर उन्हें जारी नहीं किया जाएगा। यदि अमेरिका की संसद अपने कानूनी अधिकारों से जस्टिस विभाग को मजबूर नहीं करती, तो शुक्रवार के दस्तावेज़ भी सार्वजनिक नहीं होते। इसलिए आगे ट्रंप प्रशासन की मुश्किलें बढ़ेंगी। जस्टिस विभाग ने ट्रंप या उन जैसी वैश्विक हस्तियों को बचाने के लिए दस्तावेज़ों के महत्वपूर्ण अंश, जैसे गवाहों के बयानों पर काली स्याही पोतकर उन्हें पब्लिक से ओझल किया।

मतलब नाबालिग या कम उम्र की यौन पीड़िता ने गवाही में अपना जो बयान दर्ज कराया, उसके पूरे पेज को काली स्याही से पोत दिया। इस तरह स्याही से नाम, गवाही सब मिटा दिए गए। मतलब नेटवर्क के उजागर हुए कोई बीस-पच्चीस दलालों, सप्लायरों में किसने क्या किया और यौन-शोषण की शिकार महिलाओं ने क्या बयान दिए, सब काली स्याही में छुपाकर जस्टिस विभाग ने दस्तावेज़ जारी किए हैं।

सो, अमेरिकी कांग्रेस और खासकर डेमोक्रेट सांसदों ने न्यायिक विभाग पर आरोप लगाया है कि पहले तो उसने कानूनी समयसीमा की पालना नहीं की। फिर फ़ाइलों को पूरी और बिना काले अक्षरों (ह्वठ्ठह्म्द्गस्त्रड्डष्ह्लद्गस्त्र) के रूप में जारी नहीं किया, ताकि पावरफुल लोगों की पहचान दबी रहे। उस नाते कह सकते हैं कि कहानी तो अभी शुरू हुई है।

अमेरिकी मीडिया में यह बहस चली हुई है कि फ़ाइलों के सार्वजनिक किए जाने के बावजूद कितने लाख काग़ज़, फ़ोटो, वीडियो न्यायिक विभाग ने दबाए हुए हैं? कितनी सच्चाई और गवाही सामने आई है और कितनी छिपी हुई है?

ईमेल दस्तावेज़ों में राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप का नाम बार-बार है। इन्हें ट्रंप ने डेमोक्रेट नेताओं की साज़िश कहकर ख़ारिज किया है। ताज़ा दस्तावेज़ों के हाई-प्रोफ़ाइल व्यक्तियों में बिल गेट्स, ट्रंप के वाणिज्य मंत्री, ब्रिटिश प्रिंस एंड्रयू माउंटबेटन-विंडसर, इलॉन मस्क आदि कई नाम हैं।

निश्चित ही ज़क्रि से यह निष्कर्ष नहीं निकलता है कि ये सभी एक ही थैली के चट्टे-बट्टे थे, मगर यह भी तथ्य है कि भंडाफोड़ होने के ख़तरे के चलते ब्रिटेन के प्रिंस एंड्रयू माउंटबेटन-विंडसर ने पहले ही पदवी छोड़ दी। एपस्टीन द्वारा प्रिंस को भेजी गई यौन शोषण की शिकार महिला ने कहा है कि उन्हें पूर्व प्रिंस के साथ सेक्स के लिए ब्रिटेन भेजा गया था। इस महिला के वकील ने एपस्टीन के वैश्विक नेटवर्क की शिकार दो सौ से ज़्यादा यौन पीड़िताओं के मामले देख रहे हैं। उन्होंने वर्जीनिया जियुफ़्रे का भी केस लड़ा, जिसका आरोप था कि सन् 2001 में, जब वह 17 साल की थीं, तब उन्हें लंदन लाया गया ताकि वह पूर्व प्रिंस की भूख पूरी कर सकें।

जेफ़री एपस्टीन को सबसे पहले 2008 में फ़्लोरिडा में 14 साल की लड़की से सेक्स के लिए उकसाने के मामले में दोषी ठहराया गया था। उसने अपनी सज़ा जुलाई 2010 में पूरी की। बीबीसी के अनुसार, एपस्टीन ने तब कई महिलाओं को व्यावसायिक उड़ानों और अपने निजी जेट्स के ज़रिए ब्रिटेन पहुंचाया था।

सो, जेफ़री एपस्टीन का कारनामा, वैश्विक नेटवर्क का ही नहीं है। इस कहानी के और भी पहलू है। अमेरिकी मीडिया में कहा जा रहा है कि इज़राइल की ख़ुफ़िया एजेंसी मोसाद की बदौलत एपस्टीन का साम्राज्य बना। अमेरिका में यहूदी ताक़त का वह एक प्रतिनिधि चेहरा था। इसलिए पश्चिम एशिया की क्षेत्रीय राजनीति, ईरान बनाम सऊदी अरब की भू-राजनीति से लेकर मालदीव के राष्ट्रपति द्वारा चुनाव के लिए एपस्टीन से गुहार, आदि के ऐसे असंख्य क़िस्से हैं, जिससे मालूम होता है कि दुनिया वैसे ही चलती हुई है जैसे भारत में लुटियन दिल्ली के नेटवर्क रहे है।

बावजूद एपस्टीन ने सालों तक जितना बड़ा यौन तस्करी नेटवर्क चलाया है तथा वह देशों/शक्तिशाली व्यक्तियों से लगातार जुड़ा रहा, वह भूमंडलीकृत दुनिया से विकसित अजूबा था। ख़ासकर इसलिए कि वैश्विक मीडिया की सक्रियता के बावजूद कभी किसी को भनक नहीं लगी। एपस्टीन मूलतः पूंजीपति फ़ाइनेंसर था। वित्तीय करियर में उसने अमीर, शक्तिशाली और प्रसिद्ध लोगों के साथ सेक्स के ज़रिए वैश्विक सामाजिक नेटवर्क बनाया। 2008 में उसे कम उम्र की लड़कियों के साथ यौन गतिविधि के लिए अदालत ने दोषी ठहराया था। बावजूद इसके वह रूका, थमा नहीं। जेल से छूटने के बाद उसने रुतबा बनाया। 2019 में वह फ़ेडरल नाबालिग यौन तस्करी के आरोपों में गिरफ्तार हुआ। अदालत फ़ैसला सुनाने ही वाली थी कि उसने 2019 में जेल में आत्महत्या की।

कैसा अजब मामला है जो अमेरिका की व्यवस्था यानी अदालत, संसद, मीडिया आदि से इस वैश्विक नेटवर्क की परतें तब खुलती हुई हैं, जब ट्रंप का पहला कार्यकाल था; या अब दूसरा कार्यकाल है। मेरा मानना है कि नई परतों की नई सुर्खियों ने ट्रंप को बैचेन तो किया होगा। तभी जिस दिन न्यायिक विभाग ने दस्तावेज़ सार्वजनिक किए, उसी दिन ध्यान बंटाने के लिए अमेरिकी पत्रकारिता का एक जाना-माना पत्रकार एक बेहूदा मामले में गिरफ्तार हुआ। सो, संभव है कि राष्ट्रपति ट्रंप नई सुर्खियों के लिए अचानक ईरान पर निशाना साधकर अपने सूरमा होने की नई सुर्खी बनाने की कोशिश करें।

ट्रांसजेंडर और समलैंगिक जोड़े को लिव-इन में रहने की इजाजत, इलाहाबाद HC ने परिवार से कहा- इनसे दूर रहो

आर्यावर्त संवाददाता

प्रयागराज। इलाहाबाद हाईकोर्ट ने एक अहम फैसले में ट्रांसजेंडर और एक अन्य व्यक्ति के बीच लिव-इन रिलेशनशिप को संरक्षण प्रदान करते हुए उनके परिजनों या किसी अन्य व्यक्ति द्वारा उनके जीवन में हस्तक्षेप नहीं करने का निर्देश दिया है। साथ ही कोर्ट ने संविधान के तहत जीवन और व्यक्तिगत आजादी के मौलिक अधिकार को सर्वोपरि बताते हुए पुलिस को जरूरत पड़ने पर तत्काल सुरक्षा प्रदान करने का भी आदेश दिया है।

मामला, मुरादाबाद जिले के मझोला थाना क्षेत्र से जुड़ा हुआ है। दोनों याचिकाकर्ता बालिग हैं और उन्होंने अपनी मर्जी से लिव-इन रिलेशनशिप में रहने का फैसला लिया है। इन याचिकाकर्ताओं का कहना है कि परिवार से ही उनकी जान-माल को खतरा है। स्थानीय पुलिस से

सुरक्षा की मांग की गई लेकिन इस पर कोई कार्रवाई नहीं हुई तो उन्हें हाईकोर्ट की शरण में आना पड़ा।

'बालिग को मर्जी से जीवनसाथी चुनने का अधिकार'

मामले की सुनवाई करते हुए जस्टिस विवेक कुमार सिंह ने कहा कि किसी भी बालिग व्यक्ति को अपनी मर्जी से अपना जीवनसाथी चुनने का पूरा अधिकार है और इस मामले में परिवार या समाज कोई हस्तक्षेप नहीं कर सकता। कोर्ट ने अपने फैसले में सुप्रीम कोर्ट के नवतेज सिंह जोहर बनाम भारत संघ (2018) मामले का हवाला दिया जिसमें समलैंगिक संबंधों को मान्यता देते हुए इंडियन पैनल कोड (आईपीसी) की धारा 377 को खत्म कर दिया था। हाई कोर्ट ने अपने फैसले में कहा कि ऐसे संबंध संविधान के अनुच्छेद 14, 19 और 21 का उल्लंघन नहीं करते। साथ ही अकांक्षा बनाम यूपी राज्य (2025) मामले का जिक्र करते हुए हाईकोर्ट ने पुष्टि की कि शादी न होने या शादी न कर पाने की स्थिति में भी जीवन और स्वतंत्रता के अधिकार सुरक्षित बने रहते हैं।

'परिवार को जीवन में बाधा डालने का अधिकार नहीं'

कोर्ट ने साफ किया कि एक बार जब कोई बालिग व्यक्ति अपना जीवनसाथी चुन लेता है तो परिवार या किसी अन्य को उनके शांतिपूर्ण जीवन में बाधा डालने का कोई अधिकार नहीं है। राज्य का कर्तव्य है कि वह हर नागरिक के जीवन जीने की आजादी की रक्षा करे। कोर्ट ने यह भी निर्देश दिया कि अगर याचिकाकर्ताओं के शांतिपूर्ण जीवन में कोई बाधा आती है तो वे पुलिस कमिश्नर या एसएसपी से संपर्क करें। पुलिस तुरंत सुरक्षा प्रदान करेगी। अगर दस्तावेजी सबूत न हों तो पुलिस बोन ऑसिफिकेशन टेस्ट या अन्य कानूनी प्रक्रिया अपनाकर संबंधित लोगों की उम्र सत्यापित कर सकती है। हालांकि अगर कोई अपराध दर्ज नहीं है तो पुलिस जबरन कोई कार्रवाई नहीं करेगी।

लाठीचार्ज किए जाने के खिलाफ कांग्रेस का प्रदर्शन

आर्यावर्त संवाददाता

जौनपुर। लखनऊ में शांति तरीके से विधानसभा घेराव करने जा रहे कांग्रेसियों पर पुलिस द्वारा लाठीचार्ज किए जाने के खिलाफ कांग्रेस के अध्यक्ष डा प्रमोद कुमार सिंह के नेतृत्व में पार्टी कार्यकर्ताओं ने महात्मा गांधी की प्रतिमा के समक्ष वृहस्पतिवार को धरना प्रदर्शन किया। जिलाध्यक्ष ने कहा कि कांग्रेस पार्टी के प्रदेश अध्यक्ष अजय राय की अगुवाई में मनरेगा बहाल किए जाने को लेकर सोमवार को शांतिपूर्ण तरीके से किए जा रहे प्रदर्शन पर पुलिस द्वारा लाठीचार्ज किया जाना योगी सरकार की तानाशाही नीति को उजागर करती है, भाजपा सरकार अपनी नाकामियों को छुपाने के लिए आंदोलनों को पुलिस द्वारा कुचलने का कुत्सित प्रयास किया जा रहा है। डा.प्रमोद सिंह ने सरकार पर आरोप लगाते हुए कहा कि प्रदेश की हालत

ठीक नहीं है, महिलाओं की सुरक्षा खतरे में, पढे लिखे नौजवान बेरोजगारी का दंश झेल रहे हैं, मजदूरों के लिए सरकार के पास कोई योजना ही नहीं है, किसान परेशान हैं, प्रदेश में कानून व्यवस्था बदहाल है, शासन प्रशासन मनमाने तरीके से काम कर रहा है। कांग्रेस जिलाध्यक्ष ने मनरेगा मजदूरों के अधिकारों को वापस दिलाये जाने की बात कहते हुए कहा कि जी राम जी योजना गरीबों मजदूरों और महिलाओं के शोषण को बढ़ावा देगा और गांवों का विकास भी ठप हो जायेगा।शहर कांग्रेस कमेटी के अध्यक्ष आरिफ खान ने कांग्रेसियों पर लाठीचार्ज की कार्यवाही को बर्बरतापूर्ण बताते हुए का कि तथाकथित डबल इंजन की सरकार अपने खिलाफ उठने वाली आवाज से डर गयी है, अपनी विफलताओं को छुपाने के लिए ब्रिटिश हुकूमत की तरह आन्दोलन कारियो पर लाठीचार्ज और गिरफ्तारियां कराकर लोकतंत्र की हत्या कर रही है। आरिफ खान ने कहा कि किसानों, मजदूरों और नौजवानों के अधिकारों की रक्षा के लिए कांग्रेस पार्टी का प्रत्येक कार्यकर्ता इस तानाशाह सरकार के खिलाफ मजबूती के साथ संघर्ष करता रहेगा। देवराज पांडेय, शेर बहादुर सिंह, विनय तिवारी, राकेश सिंह डब्बू, लाल प्रकाश पाल, अमन सिंहा, शाहनवाज मंजूर, वरुणा शंकर चतुर्वेदी, अरविंद यादव,राजीव निषाद, प्रवेश निषाद, रोहित सोनकर,सलमान, ताहिर अली, अशरफ अली,रोहित पाण्डेय आदि मौजूद रहे।

स्कूल में नौकरी लगते ही पति का टीचर पर आया दिल, पत्नी को करंट लगाकर मार डाला

आर्यावर्त संवाददाता

अमेठी। उत्तर प्रदेश के अमेठी जिले में एक दिल दहला देने वाली घटना सामने आई है। यहां एक पति पर अपनी ही पत्नी की करंट लगाकर हत्या करने का आरोप लगा है। मृतका के परिजन ने पति के साथ-साथ दो अन्य लोगों के खिलाफ भी मामला दर्ज कराया है। पुलिस ने शव को पोस्टमार्टम के लिए भेजकर जांच शुरू कर दी है।

मामला अमेठी जनपद के गौरीगंज थाना क्षेत्र के पूरे रामदीन गांव का है। यहां की रहने वाली चेतना की शादी वर्ष 2014 में अमेठी कोतवाली क्षेत्र के लोहरता गांव के निवासी उमाकांत शुक्ला के साथ हुई थी। शादी के कुछ वर्षों बाद उमाकांत शुक्ला प्राथमिक विद्यालय में शिक्षक के पद पर नियुक्त हो गया। दंपति का एक छह वर्षीय पुत्र भी है। मृतका के परिजन का आरोप है कि नौकरी लगने के बाद से ही उमाकांत का व्यवहार बदल गया और उसने पत्नी को प्रताड़ित करना शुरू कर दिया। चेतना लंबे समय तक घरेलू हिंसा और मानसिक उत्पीड़न सहते हुए किसी तरह अपनी शादी निभाती रही।

अवैध संबंधों का विरोध पड़ा भारी

परिजन का आरोप है कि उमाकांत का अपने ही स्कूल में कार्यरत एक शिक्षामित्र महिला से कई वर्षों से अवैध संबंध था। चेतना इस संबंध का लगातार विरोध करती थी और इसकी जानकारी उसने अपने मायके वालों को भी दी थी। परिवार का दावा है कि इसी विवाद के चलते पति-पत्नी के बीच आए दिन झगड़े होते थे। बताया जा रहा है कि घटना वाले दिन भी इसी बात को लेकर विवाद हुआ, जिसके बाद आरोप है कि उमाकांत ने पत्नी को बिजली का करंट लगाकर निर्ममता से मार डाला। घटना की सूचना मिलते ही मायके पक्ष के लोग मौके पर पहुंचे और हंगामा किया।

पिता ने लगाए गंभीर आरोप

मृतका के पिता कृष्ण कुमार पांडे ने पुलिस को दी तहरीर में आरोप लगाया कि शादी के समय उमाकांत शिक्षक नहीं था, लेकिन नौकरी मिलने के बाद उसका व्यवहार बदल गया। उन्होंने कहा कि दामाद आए दिन उनकी बेटी को प्रताड़ित करता था और शिक्षामित्र से अफेयर होने की बात उनकी बेटी ने कई बार बताई थी। पिता का आरोप है कि अवैध संबंधों का विरोध करने पर ही उनकी बेटी की हत्या की गई।

पुलिस ने दर्ज किया मुकदमा

इस मामले में पुलिस ने पति उमाकांत शुक्ला सहित तीन लोगों के खिलाफ मुकदमा दर्ज कर लिया है। क्षेत्राधिकारी अखिलेश वर्मा ने बताया कि महिला के शव को पोस्टमार्टम के लिए भेजा गया है और मामले की जांच की जा रही है। पोस्टमार्टम रिपोर्ट और साक्ष्यों के आधार पर आगे की कार्रवाई की जाएगी। घटना के बाद गांव और आसपास के क्षेत्र में सनसनी फैल गई है। मृतका के परिजनों का रो-रोकर बुरा हाल है और वे आरोपियों की गिरफ्तारी तथा कड़ी सजा की मांग कर रहे हैं। पुलिस का कहना है कि सभी पहलुओं की जांच की जा रही है और दोषियों को बख्शा नहीं जाएगा।

चयन वेतनमान न लगने से शिक्षक संघ नाराज

जौनपुर। जनपद में 72825 और 29334 तथा अन्य शिक्षकों की स्वीकृत चयन वेतनमान के बाद वेतन निर्धारण में गम्भीर अनियमितताओं का मामला संज्ञान में आया है, आरोप है कि शासन के स्पष्ट निर्देशों के बावजूद वित्त एवं लेखा अधिकारी जौनपुर के कार्यालय द्वारा प्रक्रिया में नियमों की घोर अनदेखी की जा रही है जिससे अनेक पात्र शिक्षक चयन वेतनमान के लाभ से वंचित रह गए हैं। बेसिक शिक्षा कार्यालय जौनपुर द्वारा सभी पात्र शिक्षकों के चयन वेतनमान की स्वीकृति का समय होने के बावजूद वित्त एवं लेखा अधिकारी कार्यालय द्वारा खंड शिक्षा अधिकारियों से परीक्षण हेतु ऑफलाइन सेवा पुस्तिका की मांग की गई है। जबकि अपर मुख्य सचिव बेसिक शिक्षा के पत्रक 403 एक्स राजस्व एवं बेसिक 2021 दिनांक 13 में 2021 तथा महानिदेशक स्कूल शिक्षा के पत्रांक 1177 8ध202374 दिनांक 21 दिसंबर 2023 द्वारा यह स्पष्ट निर्देश दिया जा चुका है कि ऑफलाइन सेवा पुस्तिका की वैधता समाप्त की जा चुकी है।

तीन बार भागकर बॉयफ्रेंड के पास गई, चौथी बार फिर भागी तो... पति ने करवा दी पत्नी की शादी

आर्यावर्त संवाददाता

बागपत। सोशल मीडिया के दौर में रिश्तों के बनने और बिगड़ने की कहानियां अक्सर सामने आती रहती हैं। लेकिन उत्तर प्रदेश के बागपत से एक ऐसा मामला सामने आया है, जिसने सबको हैरान कर दिया। यहां एक पति ने न केवल अपनी पत्नी के एक्स्ट्रा मैरिटल अफेयर को स्वीकार किया, बल्कि खुद कोतवाली पहुंचकर उसे उसके प्रेमी के साथ विदा भी किया। कहानी मुजफ्फरनगर की रहने वाली 23 वर्षीय सोनी और बागपत के 21 वर्षीय हरीश की है। सोनी की शादी तीन साल पहले सहारनपुर के पीरू नामक युवक से हुई थी और उनके दो छोटे बच्चे भी हैं। करीब एक साल पहले सोनी की मुलाकात फेसबुक के जरिए अग्रवाल मंडी टटीरी के रहने वाले हरीश से हुई। धीरे-धीरे यह दोस्ती प्यार में बदल गई और दोनों ने साथ जीने-मरने की कसमें खा लीं।

जिद के आगे झुक गया पति

सोनी का प्यार इस कदर परवान चढ़ा कि वह पहले भी तीन बार अपना घर छोड़कर हरीश के पास बागपत आ चुकी थी। हर बार उसे समझा-बुझाकर वापस भेज दिया जाता था, लेकिन इस बार वह आर-पार की लड़ाई के मूड में थी। जब सोनी फिर से बागपत पहुंची और वापस जाने से इनकार कर दिया, तो मामला बागपत कोतवाली तक जा पहुंचा। सूचना मिलते ही सोनी का पति पीरू और उसके मायके वाले भी कोतवाली पहुंच गए।

हाईवोल्टेज ड्रामा और पति का फैसला

पुलिस की मौजूदगी में घंटों पंचायत चली। परिजनों ने बच्चों की दुहाई दी, सामाजिक लोक-लाज का हवाला दिया, लेकिन सोनी टस से मस नहीं हुई। उसने साफ कह दिया कि वह रहेगी तो सिर्फ हरीश के साथ। अंततः पत्नी की जिद के आगे हार मानकर पति पीरू ने बड़ा दिल दिखाया। उसने सार्वजनिक रूप से सोनी को उसके प्रेमी के साथ जाने की अनुमति दे दी। पुलिस ने दोनों के बालिग होने और स्वेच्छा से साथ रहने के लिखित बयान दर्ज किए। इसके बाद शाम को कस्बे के एक मंदिर में सोनी और हरीश ने विधि-विधान से शादी कर ली। इस अनोखी विदाई और शादी की चर्चा अब पूरे बागपत और सोशल मीडिया पर जोरों पर है।

पुलिस लाइन में 22 को होगा विधिक सेवा शिविर

जौनपुर। सिविल जज सीoडिo/सचिव पूर्णकालिक, जिला विधिक सेवा प्राधिकरण जौनपुर सुशील कुमार सिंह एवं जिलाधिकारी डॉ० दिनेश चंद्र के निर्देश के क्रम में मुख्य राजस्व अधिकारी की उपस्थिति में कलेक्ट्रेट सभागार में 22 फरवरी को मेगा/बृहद विधिक सहायता एवं सेवा शिविर का आयोजन हेतु बैठक सम्पन्न हुई। बैठक में अवगत कराया गया कि राष्ट्रीय विधिक सेवा प्राधिकरण, नई दिल्ली व उ0प्र0 राज्य विधिक सेवा प्राधिकरण, लखनऊ एवं माननीय जनपद न्यायाधीशध्अध्यक्ष, जिला विधिक सेवा प्राधिकरण, जौनपुर सुशील कुमार शशि के निर्देशानुसार तथा कार्यपालक अध्यक्ष/वरिष्ठ न्यायमूर्ति, उ0प्र0 राज्य विधिक सेवा प्राधिकरण के अनुमोदनोपरान्त आम जनता के विधिक सशक्तीकरण हेतु जिला विधिक सेवा प्राधिकरण द्वारा 22 फरवरी को मेगाध्बृहद विधिक सहायता एवं सेवा शिविर का आयोजन किया जाना है। 22 फरवरी को जनपद में भी विधिक सहायता एवं सेवा शिविर का आयोजन पुलिस लाइन में किया जाना है।

शादी की, वैलेंटाइन डे भी मनाया, फिर 7वें दिन अचानक गायब हो गई दुल्हन, पति बोला– एक नाबालिग लड़का...

आर्यावर्त संवाददाता

औरैया। उत्तर प्रदेश के औरैया जनपद में शादी के महज सातवें दिन नवविवाहिता के संदिग्ध परिस्थितियों में लापता होने का मामला सामने आया है। इस घटना से इलाके में सनसनी फैल गई है। मामले में पति और युवती के पिता ने अलग-अलग पुलिस को तहरीर दी है। वहीं, गांव की एक महिला ने भी अपने नाबालिग नाती के लापता होने की शिकायत दर्ज कराई है। अंदेशा जताया जा रहा है कि दोनों साथ भागे हैं। घटना के बाद इलाके में तरह-तरह की चर्चाएं हो रही हैं। पुलिस ने शिकायत के आधार पर जांच शुरू कर दी है।

मामला अजीतमल कोतवाली क्षेत्र के एक गांव का है। जानकारी के अनुसार, युवती की शादी 10 फरवरी 2026 को हुई थी। पति के मुताबिक, वो 17 फरवरी तक उसके साथ थी। दोनोंने वैलेंटाइन डे भी मनाया। फिर

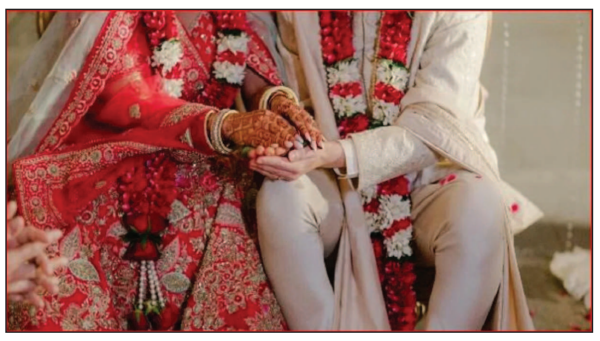

17 फरवरी को पत्नी मायके चली गई। आरोप है कि उसी रात वो शादी में मिले लगभग ढाई सौ ग्राम चांदी के पायल, मंगलसूत्र, सोने की चेन, लॉकेट, अंगूठियां, बिछिया, नथ, कमरबंद सहित अन्य जेवरात और करीब 20 हजार रुपये नकद लेकर घर से चली गई।

पति ने पुलिस को दी गई तहरीर में बताया कि पत्नी का गांव के ही एक लड़के से पहले से संपर्क था, जिसकी जानकारी पत्नी के परिजनों को भी थी। और उसी के साथ जाने की संभावना है। वहीं युवती के पिता ने भी गांव के एक युवक पर अपनी बेटी को बहला-फुसलाकर ले जाने की आशंका जताई है।

नाबालिग लड़का भी गायब

इसी मामले से जुड़ा एक और पहलू सामने आया है। गांव की एक महिला ने भी अपने नाबालिग नाती के लापता होने की शिकायत दर्ज कराई है। उनका कहना है कि किशोर मंगलवार शाम बाइक लेकर घर से निकला था और वापस नहीं लौटा। चर्चा है कि विवाहिता की गुमशुदगी की तहरीर में शक के आधार पर उसी किशोर का नाम भी शामिल किया गया है। पति ने भी उसी पर शक जताया है।

दोनों की तलाश जारी है

कोतवाली प्रभारी ने बताया कि सभी पक्षों से शिकायत प्राप्त हो चुकी है। मामले की गंभीरता से जांच की जा रही है। दोनों लापता व्यक्तियों की तलाश के प्रयास जारी हैं और तथ्यों के आधार पर आगे की विधिक कार्रवाई की जाएगी। फिलहाल, पुलिस हर पहलू को ध्यान में रखकर जांच में जुटी है। घटना ने पूरे गांव को हैरान कर दिया है।

उन्नाव में क्रिकेट मैच के दौरान मधुमक्खियों का हमला, कानपुर क्रिकेट एसोसिएशन के अंपायर की मौत

आर्यावर्त संवाददाता

उन्नाव। कानपुर क्रिकेट एसोसिएशन (KCA) के वरिष्ठ अंपायर मानिक गुप्ता की क्रिकेट मैच के दौरान मधुमक्खियों के हमले में मौत हो गई। उत्तर प्रदेश के उन्नाव में मानिक गुप्ता केडीएम लीग के मुकाबले में अंपायरिंग कर रहे थे। क्रिकेट मैच के दौरान मधुक्खियों के एक झुंड ने अंपायर और खिलाड़ियों को पर हमला कर दिया। मधुमक्खियों के हमले से चपेट में आए कई अन्य खिलाड़ियों के घायल होने की खबर है।

बुधवार को उन्नाव जिले में शुक्लागंज मे स्थित सप्रू मैदान पर क्रिकेट का लीग मैच खेला जा रहा था, मैच के दौरान ही अचानक मधुमक्खियों के एक झुंड ने हमला कर दिया। मधुमक्खियों ने अंपायर मानिक गुप्ता और जगदीश शर्मा को निशाना बनाया। करीब 10 मिनट तक मधुमक्खियां उन्हें डंक मारती रहीं, जिसमें अम्पायर मानिक गुप्ता बुरी तरह घायल हो गए।

पिछले 30 वर्षों से KCA से जुड़े थे

गंभीर हालत में उन्हें तुरंत शुक्लागंज के प्राइवेट अस्पतालों और फिर कानपुर के हैलट अस्पताल ले जाया गया। वहां से डॉक्टर्स ने उन्हें कार्डियोलॉजी रेफर किया गया, जहां पर डॉक्टरों ने उन्हें मृत घोषित कर दिया। हादसे मे जान गंवाने वाले मानिक गुप्ता की चार बेटियों और परिजनों की मौजूदगी में उनका अंतिम संस्कार गुरुवार को किया जाएगा। मानिक गुप्ता फीलखाना के निवासी थे और पिछले 30 वर्षों से कानपुर क्रिकेट एसोसिएशन (KCA) से जुड़े थे।

अचानक मधुमक्खियों ने किया हमला

शुक्लागंज के रहने वाले kCA के अंपायर सुनील ने बताया कि सप्रू मैदान में सेकंड इनिंग का मैच खेला जा रहा था। मैच के दौरान मधुमक्खियां की झुंड ने क्रिकेट खेल रहे खिलाड़ियों और अंपायर पर हमला कर दिया। सुनील ने बताया कि जिस समय यह हमला हुआ था, उस समय हम सब लोग पानी पी रहे थे, उसी समय अचानक से मधुमक्खियां आ गईं। हम लोगों ने कहा कि जमीन पर लेट जाइए, लेकिन उसके बाद भी मधुमक्खियां का हमला जारी रहा। सुनील ने बताया की इस हमले से मानिक गुप्ता गंभीर रूप से घायल हो गए थे, जिनकी इलाज के दौरान कानपुर में मौत हो गई।

'एक ही साल में दो बच्चे, इसने तो मशीन को भी फेल कर दिया', सीमा हैदर के छठी बार मां बनने पर फिर बोलीं मिथिलेश भाटी

आर्यावर्त संवाददाता

मेरठ। पाकिस्तानी सीमा हैदर और सचिन को लेकर एक बार फिर बयान बाजी तेज हो गई है। लप्पू सा सचिन कहकर पहले सुर्खियों में रह चुकी मिथिलेश भाटी ने इस बार सीमा हैदर के बच्चों को लेकर तंज कसते हुए कहा- आखिर सीमा करना क्या चाह रही है। एक ही साल में दो बच्चे हो रहे हैं। इसने तो मशीन को भी फेल कर दिया। उनके इस बयान के बाद सोशल मीडिया पर नई बहस चढ़ गई है। मिथिलेश भाटी ने कहा- इतनी जल्दी-जल्दी बच्चों का जन्म होना समझ से पर हैं। आखिर सीमा-सचिन, दोनों करना क्या चाहते हैं। जब जब सीमा हैदर को पाकिस्तान भेजने की कवायाद तेज होती है। तब तक यह बच्चा पैदा करके बैठ जाती है। सोशल मीडिया पर तीखी प्रतिक्रियाएं सामने आने के बाद अब लोग एक दूसरे पर तंज करते हुए नजर आ रहे हैं। कई

यूजर्स ने लिखा कि किसी भी महिला के लिए इस तरह की भाषा का इस्तेमाल करना सही नहीं है। वहीं कुछ लोगों ने इस पूरे मामले को अनावश्यक विवाद बढ़कर मामले को शांत करने की अपील की।

सीमा और सचिन की ओर से कोई भी प्रतिक्रिया नहीं

मिथिलेश भाटी के बयान से सीमा हैदर और सचिन की ओर से इस बयान पर कोई बयान या प्रतिक्रिया सामने नहीं आई है। उनके करीबी लोगों का कहना है कि वो दोनों बेचारे निजी जीवन को लेकर बार-बार हो रही बयान बाजी से आहत हैं। लेकिन, अब उन्हें इन सब चीजों से कोई फर्क अब नहीं पड़ता कि कौन क्या कह रहा है। दोनों बस परिवार पर ध्यान देना चाहते हैं। फिलहाल दोनों का कहना है कि हम दोनों अपनी जिंदगी में खुश हैं हमने जो भगवान से मांगा वो हमें मिल गया। हमारी पहले प्रार्थना ये थी कि हमें बेटी पैदा हो और दूसरी प्रार्थना यह थी कि अब हमें कोई एक बेटा पैदा हो, जो हमारी मनोकामना आप पूरी हो गई है।

कौन हैं मिथिलेश भाटी, आखिर क्यों आईं चर्चा में?

सीमा हैदर जब पाकिस्तान से नेपाल के रास्ते भारत आई थी और सचिन के साथ ग्रेटर नोएडा के रबूपुरा में रहने लगी, तब मिथिलेश भाटी चर्चा में आई थीं। उस दौरान उन्होंने मीडिया के सामने लप्पू सा सचिन कहकर एक बयान दिया था। जिसको लेकर वो रातोरात फेसबुक, इंस्टाग्राम और तमाम सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म पर वायरल हो गईं। लोगों ने उनकी कॉपी करके वीडियो भी बनाई, जिसने खूब सुर्खियां बटोरीं। मूल रूप से ग्रेटर नोएडा रबूपुरा की रहने वाली मिथिलेश भाटी ग्रहणी होने के साथ-साथ सोशल वर्कर भी हैं। वो समय-समय पर लोगों की आवाज भी उठाती हैं। लेकिन सीमा हैदर पर बयान बाजी को लेकर वो हमेशा चर्चा में रही हैं। अब देखने वाली बात ये होगी कि आखिर इस बयान से सीमा और सचिन की तरफ से किस तरह की प्रतिक्रिया आती है।

कैसे शुरू हुई थी सीमा-सचिन की लव स्टोरी?

सीमा और सचिन की कहानी साल 2023 से चर्चा में है। सीमा जो कि चार बच्चों की मां थी और पाकिस्तान की रहने वाली थी, PUBG खेलते-खेलते उसकी बातचीत नोएडा के सचिन मीणा से दोस्ती हुई। दोनों दो बार नेपाल में भी मिले। उन्होंने नेपाल के मंदिर में शादी भी कर ली थी। उसके बाद 10 मई को नेपाल के रास्ते सीमा हैदर चारों बच्चों को लेकर भारत में आ गई।

सीमा पर चल रहा है कोर्ट में केस

फिर सचिन के साथ उसके रबूपुरा स्थित घर में रहने लगी। एक महीने बाद सीमा की सच्चाई सामने आई। दोनों को पहले गिरफ्तार किया गया। अवैध तरीके से भारत में आने के चलते दोनों पर कोर्ट में केस चल रहा है। फिलहाल वे जमानत पर रिहा हैं। इस लव स्टोरी में उस वक्त भी काफी बवाल मचा था। सीमा के पहले पति गुलाम हैदर ने सीमा और सचिन पर धोखाधड़ी का केस दर्ज करवाया। गुलाम हैदर कहा कहना है कि उसे सीमा नहीं बस अपने बच्चे वापस चाहिए। ये केस भी अभी चल रहा है। उधर, गुलाम हैदर लगातार पाकिस्तान से वीडियो शेयर कर अपने बच्चों की वापसी की गुहार लगाता रहता है।

मुस्लिम से बन गई हिंदू

इस बीच सीमा प्रेग्नेंट हुई। 18 मार्च 2025 को उसने सचिन की बेटी मीरा को जन्म दिया। फिर दोबारा अब 11 महीने बाद बेटे को जन्म दिया है। सीमा ने पहले ही अपना धर्म बदल लिया है। वो मुस्लिम से हिंदू बन गई है। वहीं, गुलाम और अपने चारों बच्चों के भी उसने नाम बदल दिए हैं। देखना ये होगा कि सीमा पर अवैध तरीके से भारत में आने वाले केस में क्या होता है। सीमा का ये कहना है कि वो पाकिस्तान वापस नहीं लौटना चाहती। गुलाम हैदर पर उसने प्रताड़ित करने के इल्जाम लगाए थे। ये भी कहा था कि अगर वो पाकिस्तान लौटी तो वहां उसे मार डाला जाएगा। वो भारत की नागरिक बनकर रहना चाहती है।

राजमा से दुनियाभर में बनाए जाते हैं ये स्वादिष्ट व्यंजन, एक बार जरूर चखें इनका स्वाद

राजमा एक पौष्टिक और स्वादिष्ट फली है, जो भारतीय खान-पान में बहुत ही लोकप्रिय है। यह कई व्यंजनों की मुख्य सामग्री रहता है और उनके पोषण मूल्य को बढ़ा देता है। राजमा का उपयोग केवल भारतीय रसोई तक सीमित नहीं है, बल्कि दुनियाभर में इससे कई अनोखे और स्वादिष्ट व्यंजन भी बनाए जाते हैं। आइए आज हम आपको राजमा से बनाए जाने वाले 5 अनोखे व्यंजनों की रेसिपी बताते हैं, जो आपको जरूर पसंद आएंगे।

राजमा (भारत)

राजमा पंजाब का एक प्रसिद्ध व्यंजन है, जो अपने खास मसालों और स्वाद के लिए जाना जाता है। इसमें उबले हुए राजमा को प्याज, टमाटर, अदरक-लहसुन के पेस्ट और गरम मसाला के साथ पकाया जाता है। इसे नान या चावल के साथ परोसा जाता है। इस सब्जी का स्वाद इतना बेहतरीन होता है कि एक बार खाने के बाद आप इसका स्वाद कभी भूल नहीं पाएंगे। इसके साथ नींबू कस रस और प्याज परोसना न भूलें।

राजमा तामाल (मेक्सिको)

राजमा तामाल मेक्सिको का एक पारंपरिक व्यंजन है, जिसे खास मौकों पर बनाया जाता है। इसमें उबले हुए राजमा को प्याज, लहसुन, हरी मिर्च और अन्य मसालों के साथ पकाया जाता है। इसके बाद इस मिश्रण को मक्के के आटे में भरकर भाप में पकाया जाता है। यह व्यंजन बहुत ही स्वादिष्ट और पौष्टिक होता है, जिसे सभी उम्र के लोग पसंद करते हैं। इसे आप घर पर भी आसानी से बना सकते हैं।

राजमा का सूप (जापान)

राजमा का सूप जापान में पसंद किया जाता है। इसमें उबले हुए राजमा को सोया सॉस, मिर्च के पाउडर और अन्य जापानी मसालों के साथ पकाया जाता है। इस सूप में सब्जियां भी डाली जा सकती हैं, जैसे गाजर, मटर और शिमला मिर्च आदि। यह सूप ठंड के मौसम में पीने के लिए बहुत ही अच्छा रहता है। इसका स्वाद इतना बेहतरीन होता है कि इसे पीने के बाद आप तरोताजा महसूस करेंगे।

राजमा की टिक्की (भारत)

राजमा की टिक्की भारत का एक लोकप्रिय नाश्ता है, जिसे खास मौकों पर बनाया जाता है। इसमें उबले हुए राजमा को दही, बेसन और मसालों के साथ मिलाकर टिक्कियां तैयार की जाती हैं। इसके बाद इस टिक्कियों को तवे या एयर फ्रायर पर सेंका जाता है। यह नाश्ता बहुत ही स्वादिष्ट और पौष्टिक होता है, जिसे जिम जाने वाले लोग भी बिना चिंता के खा सकते हैं। इसे अपनी डाइट में जरूर शामिल करें।

राजमा बर्गर (ऑस्ट्रेलिया)

राजमा बर्गर ऑस्ट्रेलिया का एक अनोखा व्यंजन है, जो बच्चों का पसंदीदा होता है। इसमें उबले हुए राजमा को ब्रेड के टुकड़े, प्याज, लहसुन और अन्य मसालों के साथ मिलाकर पैटी तैयार की जाती है। इस पैटी को तवे पर सेंका जाता है और ब्रेड या बंद पर रखकर खाया जाता है। यह बर्गर सेहतमंद होने के साथ-साथ बहुत ही स्वादिष्ट भी होता है। इसमें चीज और सब्जियां भी लगाई जाती हैं, जो इसके स्वाद को बढ़ा देती हैं।

क्या होता है स्लीप डिवोर्स? जान लें आपके मानसिक स्वास्थ्य के लिए अच्छा है या नहीं

स्लीप डिवोर्स एक ऐसा टर्म जिसके बारे में बहुत कम लोग जानते हैं। आसान भाषा में समझें तो स्लीप डिवोर्स का मतलब है कि पति-पत्नी या पार्टनर एक ही घर में रहते हुए, बेहतर नींद और मानसिक शांति के लिए अलग-अलग बेड में सोते हैं। अब आइए इसी के बारे में विस्तार से जानते हैं।

आजकल कपल्स के स्वास्थ्य की चर्चाओं में 'स्लीप डिवोर्स' शब्द काफी तेजी से उभर रहा है। सुनने में यह शब्द थोड़ा डरावना या नकारात्मक लग सकता है, लेकिन इसका असल कानूनी तलाक से कोई लेना-देना नहीं है। दरअसल, जब एक कपल या जोड़ा आपसी सहमति से एक बिस्तर के बजाय अलग-अलग बिस्तरों या अलग कमरों में सोने का फैसला करता है, तो इसे 'स्लीप डिवोर्स' कहा जाता है।

यह फैसला अक्सर पार्टनर के खर्राटों, बार-बार करवट लेने, अलग-अलग स्लीप शेड्यूल या अलग तापमान की प्राथमिकताओं के कारण लेना पड़ता है। चिकित्सा विशेषज्ञों और मनोवैज्ञानिकों के अनुसार, नींद की कमी न केवल चिड़चिड़ापन और तनाव पैदा करती है, बल्कि यह धीरे-धीरे पार्टनर के प्रति गुस्से और रिश्तों में कड़वाहट का कारण भी बन सकती है। इसलिए रिश्ते को बचाने और मानसिक शांति के लिए गुणवत्तापूर्ण नींद लेना बहुत जरूरी है। स्लीप डिवोर्स का उद्देश्य दूरियां बढ़ाना नहीं, बल्कि एक-दूसरे के स्वास्थ्य और व्यक्तिगत स्थान का सम्मान करना है।

मानसिक स्वास्थ्य पर इसके सकारात्मक प्रभाव

नींद की कमी सीधे तौर पर एंग्जायटी और डिप्रेशन के जोखिम को बढ़ा देती है। जब आप स्लीप डिवोर्स अपनाते हैं, तो आपको बिना किसी खलल के 7-8 घंटे की गहरी नींद मिलती है। अच्छी नींद से मस्तिष्क का वह हिस्सा सक्रिय रहता है जो भावनाओं को नियंत्रित करता है, जिससे आप सुबह उठकर शांत और खुश महसूस करते हैं। यह स्थिति आपके मानसिक बोझ को कम कर पार्टनर के साथ बातचीत को अधिक सकारात्मक बनाती है।

रिश्ते की मजबूती और स्लीप डिवोर्स

कई लोग डरते हैं कि अलग सोने से प्यार कम हो जाएगा, लेकिन हकीकत इसके विपरीत हो सकती है। जब दोनों पार्टनर अच्छी तरह आराम कर लेते हैं, तो उनके बीच 'रिलेशनशिप फ्रस्ट्रेशन' कम हो जाती है। नींद पूरी होने पर आप एक-दूसरे की छोटी-छोटी गलतियों को नजरअंदाज करने के काबिल बनते हैं। अलग सोना कपल्स के बीच उस 'क्वालिटी टाइम' की अहमियत बढ़ा देता है जो वे जागते समय साथ बिताते हैं।

क्या इसके कुछ नुकसान भी हैं?

स्लीप डिवोर्स हर कपल के लिए सही नहीं होता। कुछ जोड़ों के लिए साथ सोना सुरक्षा और जुड़ाव का अहसास कराता है। अगर इस आदत को दोनों कपल के बीच बिना आपसी सहमती के शुरू किया जाए, तो यह भावनात्मक दूरी या अकेलेपन का अहसास करा सकता है। यह महत्वपूर्ण है कि इसे एक मजबूरी के बजाय एक 'हेल्थ चॉइस' के रूप में देखा जाए और दिन के समय आपसी प्रेम और स्पर्श को बनाए रखा जाए।

आपकी जरूरत और सही संतुलन

स्लीप डिवोर्स का फैसला पूरी तरह से आपकी व्यक्तिगत जरूरतों और स्वास्थ्य पर निर्भर करना चाहिए। अगर रात भर जागने के कारण आपके स्वभाव में चिड़चिड़ापन बढ़ रहा है, तो अलग सोना एक बेहतरीन विकल्प हो सकता है। इसे लागू करने से पहले पार्टनर से खुलकर बात करें और एक ऐसा रास्ता निकालें जो आपकी नींद और रिश्ते, दोनों को खुशहाल बनाए रखे। ध्यान रखें एक हेल्दी दिमाग ही एक स्वस्थ रिश्ते की नींव रख सकता है।

मजबूत इम्यूनिटी के लिए बच्चों के डाइट में जरूर होनी चाहिए ये चार चीजें

बदलते मौसम बच्चों के इम्यूनिटी का ध्यान रखना बहुत जरूरी है। ऐसे में आप कुछ चीजों को उनके डाइट में शामिल करके बच्चों को सर्दी-जुकाम के साथ अन्य बीमारियों से भी बचा सकते हैं। इसलिए आइए इस लेख में कुछ ऐसी चीजों के बारे में जानते हैं जिनके सेवन से बच्चों का इम्यूनिटी तेजी से बढ़ता है।

बच्चों का इम्यून सिस्टम वयस्कों की तुलना में अधिक संवेदनशील होता है, जिससे वे बदलते मौसम और संक्रमण की चपेट में जल्दी आ जाते हैं। एक मजबूत रोग प्रतिरोधक क्षमता सिर्फ दवाओं से नहीं, बल्कि बचपन से दी जाने वाली सही डाइट से बनती है। चिकित्सा विशेषज्ञों के अनुसार बच्चों के आहार में ऐसे पोषक तत्वों का होना अनिवार्य है जो प्राकृतिक रूप से एंटी-ऑक्सीडेंट और विटामिन से भरपूर हों।

विटामिन-C, ओमेगा-3 फैटी एसिड, और प्रोबायोटिक्स जैसे तत्व शरीर की 'डिफेंस' को मजबूत करते हैं। अगर हम बच्चों को बचपन से ही जंक फूड के बजाय मौसमी फल, मेवे और घर का बना ताजा भोजन देते हैं, तो उनका शरीर बैक्टीरिया और वायरस से लड़ने के लिए खुद को तैयार कर लेता है। पोषण का सही ज्ञान और इसे खिलाने का सही तरीका ही बच्चों को भविष्य में बड़ी बीमारियों से दूर रखने में मदद करता है।

सिट्रस फल और विटामिन-C की शक्ति

खट्टे फल जैसे संतरा, नींबू और आंवला बच्चों की इम्युनिटी के लिए बहुत जरूरी हैं। इनमें प्रचुर मात्रा में विटामिन-C होता है, जो सफेद रक्त कोशिकाओं के उत्पादन को बढ़ाता है। बच्चों को इसे सीधे फल के रूप में या ताजे जूस के रूप में दे सकते हैं। यह न सिर्फ संक्रमण से बचाता है, बल्कि घावों को भरने और आयरन के अवशोषण में भी मदद करता है।

बादाम और अखरोट

मेवे, विशेषकर बादाम और अखरोट, विटामिन-E और ओमेगा-3 फैटी एसिड के भंडार होते हैं। विटामिन-E एक शक्तिशाली एंटी-ऑक्सीडेंट है जो कोशिकाओं को नुकसान से बचाता है। बच्चों को रोज सुबह 3-4 भीगे हुए बादाम खिलाएं। इन्हें रात भर भिगोने से इनके पोषक तत्व आसानी से पच जाते हैं और बच्चों की याददाश्त के साथ-साथ शारीरिक शक्ति भी बढ़ती है।

शरीर की 70% इम्युनिटी हमारे पेट पर निर्भर करती है, और पाचन को स्वस्थ्य रखने के लिए बच्चों को रोज दही का देना चाहिए। दही अच्छे बैक्टीरिया का सबसे सस्ता स्रोत है। दोपहर के भोजन में दही शामिल करने से बच्चों का पाचन तंत्र सुचारू रहता है और हानिकारक कीटाणु शरीर में नहीं पनप पाते हैं। आप इसमें फल मिलाकर 'फ्रूट योगर्ट' के रूप में भी बच्चों को दे सकते हैं।

हल्दी वाला दूध और संतुलित दिनचर्या

आयुर्वेद में हल्दी को 'प्राकृतिक एंटीबायोटिक' माना गया है। रात को सोने से पहले बच्चों को एक गिलास गुनगुना हल्दी वाला दूध देने से उनकी आंतरिक सूजन कम होती है और नींद की गुणवत्ता सुधरती है। ध्यान रखें कि सही डाइट के साथ-साथ पर्याप्त शारीरिक खेल और 9-10 घंटे की नींद भी इम्युनिटी बढ़ाने के लिए उतनी ही जरूरी है। अच्छी आदतें ही बच्चों का सबसे बड़ा सुरक्षा कवच हैं।

दही और प्रोबायोटिक्स

सोने-चांदी की कीमतों में उतार-चढ़ाव से असंगठित ज्वैलर्स की बिक्री में गिरावट

नई दिल्ली, एजेंसी। सोने-चांदी की रिकॉर्ड कीमतों का प्रभाव असंगठित ज्वैलर्स के कारोबार पर पड़ रहा है। ऊंची कीमतों होने की वजह से स्टॉक की खरीदारी कम हो रही है, हालांकि जरूरत के हिसाब से स्टॉक रखा जाता है, साथ ही सीमित तरलता के कारण कारोबार पर असर पड़ा है। ज्वैलर्स का कहना है कि सोने और चांदी की ऊंची कीमतें और कम मांग होने के कारण उनकी बिक्री में 30 से 40 प्रतिशत तक की गिरावट आई है।

सोना-चांदी खरीदना आम ग्राहकों की पहुंच के बाहर

मुंबई के स्थानीय ज्वैलर बेलवेकर ज्वैलर्स के राकेश बेलवेकर कहते हैं, सोने और चांदी की कीमतों में तेजी होने की वजह से मध्यवर्ग ग्राहक खरीदारी से दूर हो गए हैं। यह आम आदमी की पहुंच से बाहर हो गए हैं। जिसकी वजह से हमने बिक्री में 30 प्रतिशत की गिरावट दर्ज की है। कीमती धातुओं के भाव में मौजूदा तेजी के साथ जो अस्थिरता बनी हुई है, यानी हर दिन कीमतों में तेज उछाल या फिर अचानक से गिरावट आने की वजह से कारोबार करना मुश्किल हो गया है। राकेश कहते हैं, कारोबार में रोलिंग बंद सी हो गई है, जिसकी वजह से नई डिजाइन या फिर वैरिएशन लाना बेहद चुनौतीपूर्ण होता जा रहा है।

चांदी की कीमतें बढ़ने से ज्वैलर्स की बिक्री पर असर

कुछ साल पहले जब सोने के दामों में वृद्धि हुई थी, तब चांदी अपने सामान्य भाव पर चल रही थी। तब ग्राहक चांदी की खरीदारी करते थे, जो उनकी बजट में आती थी और यह सोने के विकल्प के साथ अच्छे निवेश के तौर पर खरीदी जारी रही, लेकिन पिछले कुछ वर्षों में चांदी की कीमतें तेजी से बढ़ी है। इस कारण से वे लोग जो सोने की जगह चांदी सस्ती होने की वजह से खरीदारी करते थे, वे अब पूरी तरह से दूर हो गए हैं। जिसने हमारी बिक्री पर बुरा असर डाला है।

कारोबार में नकदी की कमी

मुंबई के झवेरी बाजार के चांदनी ज्वैलर्स के मुकेश जैन कहते हैं कि सोने और चांदी के भाव इतने बढ़ चुके हैं कि खरीदारी बंद सी हो गई है। हमारे ग्राहक आम लोग है, जिनके पास उनका एक अपना बजट होता है। सोना-चांदी अब बजट से बाहार हो गया है। इसलिए हमारी बिक्री पर असर पड़ा है और इसमें 40 प्रतिशत की गिरावट आई है। मांग नहीं होने से हमारे पास बिना बिका हुआ पुराना स्टॉक पड़ा है। अब जब बिक्री नहीं तो नकदी की समस्या बढ़ गई है। जिसकी वजह से कारोबार करना मुश्किल हो गया है। बाजार में काफी छोटे ज्वैलर्स हैं, जो नकदी पर ही कारोबार करते हैं, उनका कारोबार तो बंद पड़ गया है। क्योंकि कीमतें इतनी अधिक है, स्टॉक खरीदने के लिए पूरा पेमेंट करना पड़ता है। अब थोड़ा पेमेंट करके स्टॉक नहीं मिल रहा है, इसकी वजह सोने-चांदी की कीमतों में प्रतिदिन होने वाला बदलाव है। ऐसे में कोई नुकसान नहीं चाहता।

सोने-चांदी की कीमतें बढ़ना परेशानी नहीं कीमतों में अस्थिरता चुनौती है

बॉम्बे बुलियन के राष्ट्रीय प्रवक्ता कुमार जैन कहते हैं, सोने और चांदी की कीमतों में रिकॉर्ड वृद्धि का दौर चल रहा है, ऐसे में असंगठित ज्वैलर्स के कारोबार अधिक प्रभावित हुए हैं। देखें तो 30 से 40 प्रतिशत तक उनकी बिक्री में गिरावट हुई है। सोने-चांदी की कीमतों का बढ़ना परेशानी नहीं हैं, बुरी बात यह है कि कीमतों में अस्थिरता अधिक है। अब देखिए सोने ने कुछ समय पहले 2 लाख रुपये का स्तर छुआ और अब 1,50,000 रुपये प्रति दस ग्राम पर आ गया है। वहीं चांदी की कीमत भी 3 लाख रुपये प्रति किलोग्राम तक पहुंच गई और बाद में घटकर 2 लाख रुपये प्रति किलोग्राम पर आ गई। इतनी बड़ी गिरावट और वृद्धि एक छोटे ज्वैलर के लिए झेल पाना मुश्किल है।

कुमार कहते हैं कि किमतें बढ़े, लेकिन स्थिर रहनी चाहिए क्योंकि स्थिर रही तो ही लोग खरीदारी की योजना बनाते हैं। लोग मानसिक रूप से परेशान हो जाते हैं। लेकिन जब कीमतें लगातार ऊपर-नीचे होती रहती हैं, तो ग्राहक खरीदारी से बचते हैं, जब तक कि कोई शादी या अत्यावश्यक जरूरत न हो। वे कहते हैं, अभी अधिकतर ग्राहक पुराने सोने के आभूषण देकर उन्हें नए करवा रहे हैं। इससे ज्वैलर्स को नुकसान होता है, पुराने गहनों को पिघलाना, फिर नई डिजाइन बनाना और काटने और पॉलिश करने में नुकसान होता है, इससे सोने का वजन भी कम होता है और खर्च बढ़ता है।

ब्रांडेड ज्वैलर्स को फायदा मिल रहा है

होलसेल ज्वैलरी एसोसिएशन का कहना है कि इसका फायदा बड़े ब्रांडेड ज्वैलर्स को हो रहा है। उनके पास हर तरह के डिजाइन और वजन के आभूषण ग्राहकों के लिए उपलब्ध हैं। हाल ही में शादी ब्याह को लेकर खरीदारी बाजार में बढ़ती दिख रही है, लेकिन कीमतें अधिक होने की वजह से ग्राहक 10 ग्राम के बदले 5 ग्राम, 2 ग्राम और 3 ग्राम तक के आभूषणों की ओर रुख कर रहे हैं। लेकिन इतनी वैराइटी छोटे ज्वैलर्स के पास नहीं है। इसकी वजह से ग्राहक बड़े ज्वैलर्स की ओर रुख कर रहे हैं। जहां पर उन्हें हल्के आभूषणों की पूरी रेंज और कस्टमाइज्ड आभूषणों का सुविधा मिल रही है। जबकि छोटे ज्वैलर्स पहले से ही नकदी की कमी, पुराना स्टॉक का जमावड़ा, जिसकी वजह से नई डिजाइन को अपडेट करने में उन्हें दिक्कत हो रही है। यह चुनौतिया फिलहाल असंगठित ज्वैलर्स के सामने हैं।

म्यूचुअल फंड में शुरू कर रहे हैं निवेश, ऐसे बनाएं अपना पोर्टफोलियो

म्यूचुअल फंड में निवेश की शुरुआत धीरे-धीरे और सही एसेट एलोकेशन के साथ करें। आइए इसके सही तरीके के बारे में बताते हैं कि कैसे निवेश करके पोर्टफोलियो बेहतर बनाया जा सकता है।

अगर आप पहली बार म्यूचुअल फंड में निवेश करने की सोच रहे हैं, या अब तक फिक्स्ड डिपॉजिट, आरडी या दूसरी सुरक्षित योजनाओं में पैसा लगाते रहे हैं और अब शेयर बाजार से जुड़ना चाहते हैं, तो सबसे जरूरी है सही शुरुआत करना। जल्दबाजी में बड़ी रकम लगाने के बजाय समझदारी से कदम बढ़ाना बेहतर होता है। क्योंकि मार्केट की चाल कब बदल जाए इसका अंदाजा नहीं लगाया जा सकता।

नए निवेशकों के लिए सबसे अच्छा तरीका है कि वे एक बार में पूरी राशि लगाने के बजाय थोड़ी-थोड़ी रकम से शुरुआत करें। इसके लिए सिस्टमैटिक इन्वेस्टमेंट प्लान यानी SIP एक आसान और सुरक्षित विकल्प है। SIP में आप हर महीने एक तय रकम निवेश करते हैं, जिससे बाजार के उतार-चढ़ाव का असर कम हो जाता है और औसत लागत का फायदा मिलता है। इससे आप भावनाओं में बहकर गलत फैसले लेने से भी बचते हैं।

एसेट मिक्स समझना जरूरी

सही पोर्टफोलियो का मतलब है कि आपका पैसा अलग-अलग जगहों पर संतुलित तरीके से लगा हो। इसे एसेट एलोकेशन कहते हैं। आम तौर पर पोर्टफोलियो में इक्विटी (शेयर बाजार से जुड़ी स्कीम), डेट (बॉन्ड या फिक्स्ड इनकम), अंतरराष्ट्रीय निवेश और सोना या अन्य कीमती धातु शामिल हो सकते हैं।

अगर आपकी उम्र कम है और आपके पास निवेश के लिए सात साल या उससे ज्यादा का समय है, तो आप इक्विटी फंड में ज्यादा हिस्सा रख सकते हैं। वहीं अगर आप जोखिम कम लेना चाहते हैं, तो डेट और मल्टी-एसेट फंड बेहतर विकल्प हो सकते हैं। आपके निवेश का तरीका आपकी आमदनी, खर्च, लक्ष्यों और जोखिम सहन करने की क्षमता पर निर्भर करता है।

शुरुआत किन फंड्स से करें?

नए निवेशक डायवर्सिफाइड इक्विटी फंड या इंडेक्स फंड से शुरुआत कर सकते हैं। इंडेक्स फंड बाजार के प्रमुख इंडेक्स जैसे निफ्टी 50 या सेंसेक्स को फॉलो करते हैं, इसलिए इनमें फंड मैनेजर के फैसलों का जोखिम कम होता है। जो लोग बहुत ज्यादा उतार-चढ़ाव नहीं चाहते, वे मल्टी-एसेट एलोकेशन फंड चुन सकते हैं, जिसमें इक्विटी, डेट और गोल्ड का मिश्रण होता है। पहले कोर पोर्टफोलियो बनाएं। यानी ऐसे फंड चुनें जो लंबे समय तक आपके साथ रहें। बाद में जरूरत और अनुभव के हिसाब से अन्य कैटेगरी जोड़ सकते हैं। अगर कोई निवेशक ज्यादा जोखिम लेने को तैयार है, तो धीरे-धीरे मिड या स्मॉल कैप फंड में थोड़ा हिस्सा जोड़ सकता है, लेकिन यह कदम समझदारी से और अनुभव के बाद ही उठाना चाहिए।

क्या सिर्फ इक्विटी ही विकल्प है?

ऐसा नहीं है कि म्यूचुअल फंड में सिर्फ इक्विटी ही एक रास्ता है। अगर आप थोड़े समय के लिए पैसा पार्क करना चाहते हैं, या बाजार की दिशा को लेकर असमंजस में हैं, तो आर्बिट्राज फंड या शॉर्ट-ड्यूरेशन डेट फंड पर भी विचार कर सकते हैं। इन फंड्स में जोखिम अपेक्षाकृत कम होता है और यह बचत खाते के मुकाबले बेहतर रिटर्न दे सकते हैं। खासकर वे लोग जो कम टैक्स ब्रैकेट में आते हैं, उनके लिए डेट फंड उपयोगी हो सकते हैं।

मिड, स्मॉल और थीमैटिक फंड कब चुनें?

अक्सर नए निवेशक ज्यादा रिटर्न के लालच में मिड-कैप, स्मॉल-कैप या किसी खास सेक्टर के फंड में निवेश कर देते हैं। लेकिन इन कैटेगरी में उतार-चढ़ाव ज्यादा होता है। इसलिए शुरुआत करने वालों के लिए ये सही विकल्प नहीं माने जाते हैं। जब आपको बाजार की समझ हो जाए और आप जोखिम के साथ सहज महसूस करें, तभी इन फंड्स में सीमित निवेश करें। कुल पोर्टफोलियो का छोटा हिस्सा ही ऐसे फंड्स के लिए रखें। बहुत ज्यादा एक ही सेक्टर पर निर्भर रहना खतरनाक हो सकता है, क्योंकि सही समय पर खरीदना और बेचना आसान नहीं होता।

बोर्ड ऑफ पीस की बैठक से पहले सुरक्षा परिषद की मीटिंग, वेस्ट बैंक पर कब्जे को लेकर इस्राइल रहा निशाने पर

न्यूयॉर्क, एजेंसी। संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद के सदस्यों की बुधवार को बैठक हुई। इस बैठक में गाजा संघर्ष विराम समझौते को स्थायी बनाने की मांग की गई और साथ ही इस्राइल के वेस्ट बैंक में कब्जे की योजना की कड़ी आलोचना की गई। सुरक्षा परिषद ने इस्राइल की योजना को टू स्टेट सॉल्यूशन की संभावनाओं के लिए खतरा बताया। गौरतलब है कि सुरक्षा परिषद की बैठक अमेरिकी राष्ट्रपति ट्रंप द्वारा गठित बोर्ड ऑफ पीस की बैठक से एक दिन पहले हुई। न्यूयॉर्क में सुरक्षा परिषद का उच्च स्तरीय सत्र पहले गुरुवार को होना था, लेकिन बोर्ड ऑफ पीस की बैठक को देखते हुए इसे एक दिन पहले ही आयोजित किया गया। 15 सदस्यों वाली सुरक्षा परिषद में पाकिस्तान अकेला ऐसा देश है, जिसने बोर्ड ऑफ पीस में शामिल होने का न्योता भी स्वीकार किया। सुरक्षा परिषद की बैठक के दौरान इस्राइल ने विवादित वेस्ट बैंक में इस्राइल द्वारा जमीन कब्जाने की कथित कोशिश की कड़ी आलोचना की और इसे अंतरराष्ट्रीय कानून का उल्लंघन बताया। पाकिस्तान के विदेश मंत्री इशाक डार ने कहा, 'वेस्ट बैंक पर अपना नियंत्रण बढ़ाने के इस्राइल के हालिया गैर-कानूनी फैसले बहुत परेशान करने वाले हैं।' सुरक्षा परिषद की बैठक में पाकिस्तानी विदेश मंत्री के अलावा ब्रिटेन, इस्राइल, जॉर्डन, मिस्त्र और इंडोनेशिया के विदेश मंत्री भी शामिल हुए। बीते दिनों कई अरब देशों ने अपील की थी कि बोर्ड ऑफ पीस की बैठक से पहले संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद की बैठक बुलाई जाए, जिसमें वेस्ट बैंक और गाजा पर चर्चा होनी चाहिए। बैठक में फलस्तीन के राजनयिक रियाद मंसूर ने कहा, जमीन कब्जाना यूएन चार्टर और अंतरराष्ट्रीय कानून के सबसे बुनियादी नियमों का उल्लंघन है।

गार्सिया द्वीप पर ब्रिटेन का कब्जा खत्म होने से घबराया यूएस, ट्रंप ने कहा- ईरान पर हमले के लिए चाहिए

वॉशिंगटन, एजेंसी। अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप ने ब्रिटेन के प्रधानमंत्री कीर स्टार्मर से अपील की है कि वे हिंद महासागर क्षेत्र में स्थित द्वीप डिएगो गार्सिया को मॉरीशस को न सौंपें। ट्रंप ने कहा कि अगर अमेरिका और ईरान के बीच जिनेवा में चल रही बातचीत असफल रहती है तो ईरान पर हमले के लिए अमेरिका को डिएगो गार्सिया द्वीप की जरूरत पड़ेगी। गौरतलब है कि बीते साल ब्रिटेन ने हिंद महासागर में रणनीतिक रूप से बेहद अहम द्वीप डिएगो गार्सिया को मॉरीशस को सौंपने का एलान किया था। हालांकि 99 साल की लीज पर अमेरिका-ब्रिटेन का सैन्य अड्डा द्वीप पर बरकरार रहेगा।

ट्रंप ने सोशल मीडिया पर क्या लिखा

ट्रंप ने चागोस द्वीप को मॉरीशस को सौंपने के ब्रिटेन सरकार के फैसले को एक बड़ी गलती बताया।

सोशल मीडिया पर साझा एक पोस्ट में ट्रंप ने लिखा, 'मैं ब्रिटेन के प्रधानमंत्री कीर स्टार्मर से कहता रहा हूं कि देशों के मामलों में पट्टे (लीज) का कोई महत्व नहीं होता। हिंद महासागर में रणनीतिक रूप से स्थित डिएगो गार्सिया पर 100 साल का पट्टा समझौता करके वे बड़ी गलती कर रहे हैं। ब्रिटेन के साथ हमारे मजबूत संबंध हैं और ये संबंध कई वर्षों से हैं, लेकिन प्रधानमंत्री स्टार्मर इस द्वीप पर अपना नियंत्रण खो रहे हैं।'

ट्रंप ने आगे लिखा, 'अगर ईरान समझौता करने से इनकार कर देता है तो अमेरिका को डिएगो गार्सिया द्वीप की जरूरत पड़ सकती है। प्रधानमंत्री स्टार्मर को किसी भी वजह से डिएगो गार्सिया पर अपना नियंत्रण नहीं खोना चाहिए।' ट्रंप ने ये भी कहा कि जरूरत पड़ने पर वे ब्रिटेन के लिए लड़ने के लिए तैयार हैं।

ट्रंप ने लिखा, 'अगर ब्रिटेन से जमीन छीनी जाती है तो ऐसा नहीं होने दिया जाएगा। हम ब्रिटेन के लिए लड़ने के लिए हमेशा तैयार रहेंगे। लेकिन ब्रिटेन को मजबूत रहना होगा।'

द्वीप को मॉरीशस को देने को तैयार हुआ ब्रिटेन

मॉरीशस को साल 1968 में ब्रिटेन के शासन से आजादी मिली, लेकिन डिएगो गार्सिया द्वीप ब्रिटेन का उपनिवेश बना रहा। हालांकि अंतरराष्ट्रीय न्यायालय के 2019 के फैसले और बढ़ते अंतरराष्ट्रीय दबाव के चलते ब्रिटेन की सरकार ने साल 2025 में मॉरीशस के साथ हुए एक समझौते में चागोस द्वीप समूह को मॉरीशस को वापस लौटाने का फैसला किया। वहीं डिएगो गार्सिया द्वीप को 99 साल के पट्टे पर बरकरार रखने का फैसला किया, जहां ब्रिटेन का सैन्य अड्डा रहेगा। डिएगो गार्सिया द्वीप हिंद महासागर में रणनीतिक लिहाज से बेहद अहम जगह पर है। यही वजह है कि ट्रंप इस द्वीप को छोड़ने के ब्रिटेन के फैसले के खिलाफ हैं।

परमाणु ताकत दिखाने में जुटा उत्तर कोरिया, किम जोंग ने 50 नए रॉकेट लॉन्चर किए तैनात

सियोल, एजेंसी। उत्तर कोरिया के शासक किम जोंग उन ने अपनी सेना की ताकत दिखाते हुए 50 नए रॉकेट लॉन्चर तैनात किए हैं। ये लॉन्चर ऐसे छोटे-दूरी वाले मिसाइल दाग सकते हैं जो परमाणु हथियार ले जाने में सक्षम माने जाते हैं और दक्षिण कोरिया के लिए बड़ा खतरा बन सकते हैं। सरकारी मीडिया के अनुसार, इन लॉन्चर वाहनों को एक बड़े समारोह में दिखाया गया। यह कदम सत्ताधारी वर्कर्स पार्टी की आने वाली बड़ी बैठक (पार्टी कांग्रेस) से पहले उठाया गया है, जहां किम अपनी सेना को और मजबूत बनाने की नई योजनाएं घोषित कर सकते हैं।

इन नए लॉन्चरों में क्या खास है?

ये 600 मिलीमीटर मल्टीपल रॉकेट सिस्टम से जुड़े हैं।

इनमें आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस (एआई) और आधुनिक गाइडेंस तकनीक लगी बताई जा रही है।

विशेषज्ञों के अनुसार, ये सामान्य तोप और बैलिस्टिक मिसाइल के बीच की तकनीक जैसे हैं।

इनका मकसद दक्षिण कोरिया की मिसाइल रक्षा प्रणाली को चकमा देना माना जा रहा है।

वहीं कोरियाई सेंट्रल न्यूज एजेंसी ने कहा कि ये गाड़ियां देश के 600-मिलीमीटर मल्टीप्लायर रॉकेट लॉन्चर सिस्टम को सपोर्ट करती हैं। विशेषज्ञों का कहना है कि उत्तर कोरिया के बड़े आर्टिलरी रॉकेट आर्टिलरी सिस्टम और शॉर्ट-रेंज बैलिस्टिक मिसाइलों के बीच का फर्क धुंधला कर देते हैं क्योंकि वे अपना थ्रस्ट खुद बना सकते हैं और डिलीवरी के दौरान गाइडेड होते हैं। वे किम के परमाणु-सक्षम शॉर्ट-रेंज हथियारों के बढ़ते कलेक्शन का हिस्सा हैं जिन्हें साउथ कोरिया में मिसाइल डिफेंस को हराने के लिए बनाया गया है।

दक्षिण कोरिया से बढ़ा तनाव

वहीं किम जोंग उन की बहन किम यो जोंग ने कहा कि दक्षिण कोरिया के एक मंत्री ने कथित ड्रोन घुसपैठ पर माफी मांगी है, लेकिन उत्तर कोरिया अपनी सीमा सुरक्षा और मजबूत करेगा। उन्होंने चेतावनी दी कि अगर दोबारा ड्रोन घुसपैठ हुई तो उत्तर कोरिया ताकत से जवाब देगा।

दक्षिण और उत्तर कोरिया में क्यों खराब हैं रिश्ते?

साल 2019 में अमेरिका और उत्तर कोरिया के बीच परमाणु वार्ता टूटने के बाद से दोनों कोरिया के रिश्ते लगातार बिगड़ते गए। हाल के वर्षों में किम ने 'शांतिपूर्ण एकीकरण' की नीति छोड़कर दक्षिण कोरिया को दुश्मन देश घोषित कर दिया।

रॉकेट लॉन्चर को लेकर क्या बोले किम जोंग उन?

उत्तर कोरियाई शासक ने एक भाषण में कहा कि शानदार रॉकेट लॉन्चर एआई और एडवांस्ड गाइडिंग टेक्नोलॉजी से लैस हैं जो 'स्ट्रेटेजिक मिशन' को पूरा करने के लिए बनाए गए हैं, यह शब्द न्यूक्लियर मकसद को दिखाता है। उन्होंने कहा कि आने वाली कांग्रेस उनकी न्यूक्लियर-आर्म्ड मिलिट्री की कैपेबिलिटी को बढ़ाने के लिए नए प्लान जारी करेगी, जिसके पास पहले से ही एशिया में अमेरिका के सहयोगियों को टारगेट करने वाले कई सिस्टम और अमेरिका मेनलैंड तक पहुंचने में कैपेबल लॉन्ग-रेंज मिसाइलें हैं।

उत्तर कोरिया सख्ती से जवाब देगा- किम यो जोंग

अपने बयान में, किम की बहन, किम यो जोंग ने कहा कि वह कथित ड्रोन उड़ानों पर दक्षिण कोरिया के यूनिफिकेशन मंत्री चुंग डोंग-यंग की माफी को 'बहुत अहमियत देती हैं', लेकिन उन्होंने दोहराया कि अगर ऐसी उड़ानें दोबारा होती हैं तो उत्तर कोरिया सख्ती से जवाब देगा। उन्होंने कहा कि देश की सेना दक्षिण कोरिया के साथ बॉर्डर पर निगरानी मजबूत करेगी।उन्होंने कहा, 'दुश्मन देश के साथ बॉर्डर स्वाभाविक रूप से मजबूत होना चाहिए।' चुंग ने बुधवार को कहा कि सियोल बॉर्डर पर तनाव कम करने के लिए 2018 के सस्पेंड किए गए अंतर-कोरियाई सेना समझौते को फिर से लागू करने पर विचार कर रहा है, जिसमें उत्तर कोरिया में और ड्रोन घुसपैठ को रोकने के उपायों के तहत नो-फ्लाई जोन भी शामिल है।

उत्तर कोरिया ने पिछले महीने दक्षिण कोरिया पर सितंबर और फिर जनवरी में निगरानी ड्रोन उड़ाने का आरोप लगाने के बाद जवाबी कार्रवाई की धमकी दी थी। दक्षिण कोरिया की सरकार ने उत्तर कोरिया द्वारा बताए गए समय के दौरान किसी भी ड्रोन को ऑपरेट करने से इनकार किया है, लेकिन कानून लागू करने वाले अधिकारी बॉर्डर इलाकों से नॉर्थ कोरिया में ड्रोन उड़ाने के शक में तीन आम लोगों की जांच कर रहे हैं।

बरीमाला में प्रसाद व्यवस्था में खामियां, हाईकोर्ट ने एसआईटी को 45 दिनों में जांच पूरी करने को कहा

तिरुवनंतपुरम, एजेंसी। केरल हाईकोर्ट ने सबरीमला मंदिर में प्रसाद की बिक्री और उससे होने वाली आय के प्रबंधन को लेकर त्रावणकोर देवास्वम बोर्ड (टीडीबी) की कार्यप्रणाली में गंभीर और प्रणालीगत खामियां पाई हैं। अदालत ने कहा कि अब समय आ गया है कि बोर्ड एक व्यापक, पारदर्शी और जवाबदेह ढांचा बनाए जिससे बोर्ड की आय को सुरक्षित रखा जा सके और उसमें होने वाले भ्रष्टाचार को रोका जा सके। जस्टिस राजा विजयराघवन वी और के. वी. जयकुमार की खंडपीठ ने विजिलेंस एंड एंटी-करप्शन ब्यूरो (VACB) की विशेष जांच टीम (SIT) की रिपोर्ट की जांच करने के बाद ये टिप्पणियां कीं। एसआईटी की यह जांच मंदिर के प्रसाद 'अडिया सिष्टम घी' की बिक्री से संबंधित कथित गड़बड़ी के मामले में की जा रही है। यह पवित्र प्रसाद सबरीमाला स्थित भगवान अय्यप्पा मंदिर में श्रद्धालुओं को बेचा जाता है।

अदालत ने क्या कहा

एसआईटी ने अदालत को बताया कि उसने भ्रष्टाचार निवारण अधिनियम और भारतीय न्याय संहिता की संबंधित धाराओं के तहत 33 लोगों के खिलाफ मामला दर्ज किया है। इनमें मंदिर के विशेष अधिकारी और लगभग 30 काउंटर कर्मचारी शामिल हैं।

खंडपीठ ने एसआईटी को निर्देश दिया कि वह जांच को आगे बढ़ाए और 45 दिनों के भीतर जांच पूरी करें।

रिपोर्ट में सामने आए तथ्यों पर टिप्पणी करते हुए अदालत ने कहा कि कई अनियमितताएं सामने आई हैं, जो गहरी जड़ें जमा चुकी प्रणालीगत कमियों का संकेत देती हैं। अदालत ने कहा कि ये अलग-थलग घटनाएं नहीं हैं, बल्कि प्रक्रिया, निगरानी, स्टॉक लेखांकन और वित्तीय नियंत्रण में व्यापक खामियों को दर्शाती हैं।

अदालत ने यह भी कहा कि रिकॉर्ड रखने और प्रसाद की बिक्री से होने वाली आय के लेखे-जोखे में लापरवाही और ढिलाई चौंकाने वाली है।

अदालत ने निर्देश दिया कि प्रसाद सामग्री—जैसे अप्पम, अडिया सिष्टम घी, अरवना, विभूति, कुमकुम और अन्य की बिक्री से होने वाली समस्त आय को जवाबदेह और पारदर्शी वित्तीय एवं प्रशासनिक ढांचे के अंतर्गत लाया जाना चाहिए।

अदालत ने सुझाव दिया कि एक चरणबद्ध प्रक्रिया लागू की जाए, जिसमें प्रतिदिन और मौसमी आधार पर भक्तों द्वारा चढ़ाए जाने वाले प्रसाद की मात्रा के आकलन से लेकर बिक्री की आय जमा करने तक की पूरी प्रक्रिया शामिल हो।

खंडपीठ ने निर्देश दिया कि यह ढांचा तत्काल प्रभाव से लागू किया जाए और जरूरत पड़ने पर पेशेवर एवं तकनीकी सहायता ली जाए। अदालत ने कहा कि फिलहाल बोर्ड के पास आवश्यक संस्थागत क्षमता, तकनीकी विशेषज्ञता और प्रणालीगत तंत्र का अभाव है।

अदालत ने बोर्ड को निर्देश दिया कि वह एक विस्तृत कार्ययोजना अदालत के सामने पेश करें, जिसमें इन निर्देशों के पालन की पूरी जानकारी होनी चाहिए। मामले की अगली सुनवाई 27 फरवरी को निर्धारित की गई है।

सत्ताधारी डीएमके गठबंधन में शामिल हुई डीएमडीके, महासचिव ने कहा- बहुत पहले हो जाना चाहिए था

चेन्नई, एजेंसी। तमिलनाडु की राजनीतिक पार्टी डीएमडीके ने विधानसभा चुनाव से पहले सत्ताधारी डीएमके गठबंधन का हाथ थाम लिया है। इससे पहले लोकसभा चुनाव में डीएमडीके ने एआईएडीएमके का साथ गठबंधन में चुनाव लड़ा था। डीएमडीके की महासचिव प्रेमलता विजयकांत ने डीएमके प्रमुख और सीएम स्टालिन से मुलाकात की। इस मुलाकात के बाद प्रेमलता ने गठबंधन का एलान किया।

पिछला लोकसभा चुनाव एआईएडीएमके के साथ गठबंधन में लड़ा था

दिवंगत अभिनेता विजयकांत ने डीएमडीके पार्टी की स्थापना की थी। साल 2023 में कोरोना संक्रमण के चलते विजयकांत का निधन हो गया था।

साल 2021 में डीएमडीके ने तमिलनाडु विधानसभा चुनाव अकेले दम पर लड़ा था, लेकिन पार्टी कोई भी सीट नहीं जीत सकी थी। साल 2024 में डीएमडीके ने एआईएडीएमके के साथ गठबंधन में लोकसभा चुनाव लड़ा। 2024 में डीएमडीके ने पांच लोकसभा सीटों पर चुनाव लड़ा, लेकिन किसी भी सीट पर जीत हासिल करने में नाकामयाब रही। अब डीएमडीके ने फिर से पाला बदलकर सत्ताधारी डीएमके गठबंधन से नाता जोड़ा है। इसे डीएमडीके की सत्ता में आने की कोशिश के तौर पर देखा जा रहा है।

डीएमडीके महासचिव प्रेमलता विजयकांत ने मीडिया से बात करते हुए कहा, हमने डीएमके के साथ गठबंधन किया है। हमारी पार्टी का कैडर भी यही चाहता था। जब कैप्टन विजयकांत जिंदा थे, तभी ये गठबंधन बन जाना चाहिए था। उन्होंने बताया कि दोनों पार्टियां एक चुनाव समिति गठित करेंगी और इनकी बातचीत के बाद सीटों की संख्या तय की जाएगी। तमिलनाडु में इस साल विधानसभा चुनाव होने हैं और अप्रैल मई में चुनाव होने की संभावना है।

हे बलवंत दर्शकों का भरपूर मनोरंजन करेगी: अभिनेत्री शिवानी नागरम

हाल ही में लिटिल हार्ट्स, राजू वेड्स रामभाई और ईशा जैसी ब्लॉकबस्टर फिल्में देने वाले सफल जोड़ी बन्नी वास और वामसी नंदीपति अब एक पूरी तरह से मनोरंजक फिल्म हे बलवंत (पहले हे भगवान थी) के साथ दर्शकों के सामने आ रहे हैं। फिल्म का निर्माण बी. नरेंद्र रेड्डी त्रिशूल विजनरी स्टूडियोज के बैनर तले कर रहे हैं, निर्देशन गोपी आचार्य कर रहे हैं और इसे नंदीपति एंटरटेनमेंट्स और बन्नी वास वर्क्स प्रस्तुत कर रहे हैं। फिल्म में सुहास, शिवानी नागराम, वरिष्ठ अभिनेता नरेश और एंकर श्रावंती मुख्य भूमिकाओं में हैं। फिल्म 20 फरवरी को रिलीज होने वाली है।

इस अवसर पर सोमवार को अभिनेत्री शिवानी नागराम ने मीडिया से बातचीत की।

उन्होंने बताय कि सुहास के साथ यह मेरी दूसरी और मेरे करियर की तीसरी फिल्म है। उनके साथ पिछली फिल्म में मेरा किरदार बहुत गंभीर था और कहानी भी काफी गंभीर थी। लेकिन इस फिल्म में यह काफी हल्की-फुल्की और मनोरंजक है। मुझे यह भूमिका निभाने में बहुत मज़ा आया। पूरी फिल्म दर्शकों का भरपूर मनोरंजन करेगी। अंत में पिता-पुत्र का प्रेम प्रसंग भी सबको छू जाएगा। मेरे किरदार में मासूमियत के साथ-साथ हास्य भी है।

फिल्म बहुत अच्छी है। मुझे पूरा विश्वास है कि यह निश्चित रूप से हिट होगी। सुदर्शन, सुहास और मेरे किरदार आपको खूब हंसाएंगे। नरेश और वेन्नेला किशोर के किरदार बेहद मजेदार हैं। क्लाइमेक्स धमाकेदार होगा और बेहद मनोरंजक।

मेरे पास जो भी कहानियां आती हैं, उनमें से मैं हमेशा सबसे अच्छी कहानी चुनता हूं। मेरी पहली फिल्म में कॉमेडी नहीं थी, दूसरी पूरी तरह से कॉमेडी थी, और इस फिल्म में भी कॉमेडी है। मुझे कहानी और अपना किरदार दोनों ही पसंद आ गए, जैसे ही मैंने इसके बारे में सुना।

इस फिल्म में कौन सा व्यवसाय दिखाया गया है? क्या आपका इससे कोई संबंध है?

नहीं, फिल्म में दिखाया गया व्यवसाय नरेश सर का पारिवारिक व्यवसाय है। मेरा इससे कोई संबंध नहीं है। आपको इसे सिनेमाघरों में देखना चाहिए और आनंद लेना चाहिए। आपको खूब हंसी आएगी।

यह रंगीन दृश्यों और बेहतरीन संगीत से भरपूर एक मनोरंजक फिल्म है। नरेश और वेन्नेला किशोर की कॉमेडी आपको खूब हंसाएगी। हर किरदार आपको हंसाएगा।

मैंने कुचिपुड़ी और संगीत सीखा है। मैं गायिका से अभिनेत्री बनी हूँ। मैंने लिटिल हार्ट्स में थोड़ा गुनगुनाया था और आरम्भम में एक गाना गाया था। अगर मौका मिले तो मैं गाने के लिए तैयार हूँ।

वो बहुत ही मिलनसार और सहयोगी हैं, और एक बेहतरीन अभिनेता हैं। इस फिल्म में हमारी जोड़ी दर्शकों का मनोरंजन करेगी। हमारे साथ के दृश्यों का दर्शक भरपूर आनंद लेंगे। मेरा परिवार बहुत सहयोगी है। उन्होंने मुझे जो अवसर दिया, उसका मैंने अच्छे फिल्मों में उपयोग करके खुद को साबित किया। वे बहुत खुश हैं।

लिटिल हार्ट्स की सफलता के बाद आप ऑफर्स को कैसे मैनेज कर रही हैं?

मैं सफलता को एक अवसर मानकर अगली फिल्म की ओर बढ़ती हूं, लेकिन मैं फिल्म तभी स्वीकार करती हूं जब मुझे कहानी पसंद आए, चाहे कलाकारों का संयोजन कैसा भी हो। मैं देखती हूं कि क्या मैं कहानी से जुड़ पाती हूं और मेरा किरदार कितना महत्वपूर्ण है। यही मेरे लिए मायने रखता है।

मैंने शुरू में गंभीरता से अभिनेता बनने की योजना नहीं बनाई थी, लेकिन अब मुझे पहचान मिल गई है। मुझे अच्छी फिल्में, अच्छी टीम और अच्छे सह-कलाकार मिलने का सौभाग्य प्राप्त हुआ है। मेरे पास जो भी ऑफर आते हैं, उनमें से मैं सर्वश्रेष्ठ का चयन करता हूं। मैं 100 फिल्में नहीं करना चाहता; अगर मैं पांच भी करूं, तो उनकी कहानी अच्छी होनी चाहिए।

अगर आपको स्टार हीरो के साथ काम करने के ऑफर मिलें, तो क्या आप कहानी की परवाह किए बिना उन्हें स्वीकार कर लेंगी?

मेरे लिए सिनेमा तो सिनेमा है। अगर मुझे कहानी और मेरा किरदार पसंद आएगा, तो मैं उसे स्वीकार कर लूंगी। मैं बिना किसी पूर्व अनुभव के आई हूं। दर्शकों द्वारा दिए गए सम्मान को बनाए रखना महत्वपूर्ण है।

बहुत खुश हूं। अब अभिनेताओं के साथ-साथ लेखक और निर्देशक भी बढ़ गए हैं। तेलुगु लड़कियों को ज़्यादा मौके मिल रहे हैं। अब छोटी-बड़ी फिल्मों का कोई फर्क नहीं रह गया है। छोटी फिल्में भी बड़ी हिट हो रही हैं। कई लोगों ने कहा कि अगर लगातार फिल्में नहीं करोगी तो गायब हो जाओगी, लेकिन मैं चाहती हूं कि लोग कहें कि मैं हमेशा अच्छी फिल्में चुनती हूं। मैं दूसरी हीरोइनों की तरह ही फिल्मों को लेकर चुनिंदा रहना चाहती हूं।

मुझे हर प्रकार की फिल्में पसंद हैं, लेकिन विशेष रूप से रोमांटिक कॉमेडी। जब मूड खराब होता है, तो ऐसी मनोरंजक फिल्में देखने से मूड ठीक हो जाता है। मैं सभी शैलियों की फिल्में करना चाहता हूँ।

मेरी फिल्में ओटीटी पर आ रही हैं, इसलिए मुझे अलग-अलग भाषाओं से ऑफर मिल रहे हैं। फिलहाल, दो तमिल और दो तेलुगु फिल्मों पर बातचीत चल रही है।

परफेक्ट मुस्कान के पीछे उम्मीदों के बोझ को तलाशती संदीपा धर

ऐसी दुनिया में जहाँ परफेक्शन की सराहना तो होती है, लेकिन उसके पीछे छिपी भावनाओं को शायद ही कोई समझना चाहता है, वहां संदीपा धर दो दीवाने सहर में में नैना के एक बेहद संवेदनशील किरदार के साथ सामने आ रही हैं। नैना एक ऐसी युवती है, जो बाहर से पूरी तरह सुलझी हुई, आत्मविश्वासी और परफेक्ट दिखती है, लेकिन भीतर ही भीतर अपनी पहचान, अकेलेपन और अपेक्षाओं के बोझ से जूझ रही है। विशेष रूप से सलीके से सजी मुस्कान और सहज अंदाज़ के पीछे छिपी एक ऐसी कहानी, जो अपने अस्तित्व के साथ हर हाल में ठीक दिखने की थकान को बयां करती है।

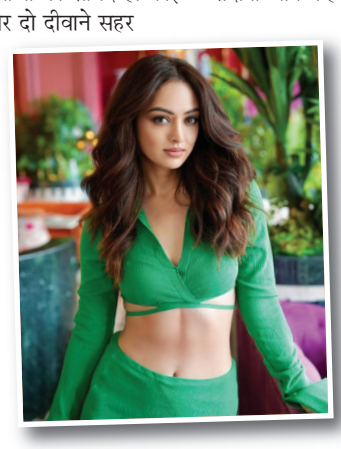

अपने किरदार नैना के बारे में बात करते हुए संदीपा कहती हैं, नैना वो लड़की है, जिसमें हममें से बहुत से लोग खुद को देख सकते हैं। वो मुस्कुराती है, हर ज़िम्मेदारी निभाती है और बाहर से लगता है कि सब कुछ कंट्रोल में है। लेकिन अंदर ही अंदर वो खुद से कटी हुई है, जैसे वो अपनी ही ज़िंदगी में एक किरदार निभा रही हो और असली खुद को भूल चुकी हो। हालांकि आज के समय में ये दबाव बहुत आम बात है, जहां हर हाल में ठीक दिखने की अपेक्षा की जाती है, फिर चाहे आपके अंदर कुछ भी चल रहा हो।

फिल्म की भावनात्मक गहराई पर बात करते हुए संदीपा आगे कहती हैं, दो दीवाने सहर में मुझे इसलिए खास लगी क्योंकि यह नज़रअंदाज़ होने की भावना को बेहद खूबसूरती से दिखाती है। कई बार जितना ज़्यादा आप परफेक्ट दिखते हैं, उतना ही मुश्किल हो जाता है ये स्वीकार करना कि अंदर कुछ टूट रहा है। सच खून तो नैना की जर्नी आईने के सामने खड़े होने और शायद पहली बार खुद से ईमानदार होने की है।

अपने किरदार से जुड़ी उम्मीदों पर संदीपा कहती हैं, मुझे यकीन है कि फिल्म देखने के बाद लोग खुद से ये ज़रूर पूछेंगे कि दुनिया की उम्मीदों से परे वे कौन हैं? हालांकि मेरी कोशिश है कि वे खुद को देखा हुआ महसूस करें, क्योंकि हर शांत और सधे हुए चेहरे के पीछे एक कहानी होती है, जो हमेशा सुनी नहीं जाती।

सच पूछिए तो 20 फरवरी को रिलीज़ हो रही फिल्म दो दीवाने सहर में के ज़रिए संदीपा धर दर्शकों को उन मुखौटों पर सवाल उठाने का, जिन्हें हम रोज़ पहनते हैं, और उन आईनों से सामना करने का, जिनसे हम अक्सर नज़रें चुरा लेते हैं का मौक़ा देती हैं। इसी के साथ नैना की कहानी के माध्यम से यह फिल्म कई दिलों की सच्चाई को न सिर्फ सामने लाने की कोशिश करती है, बल्कि उन्हें थोड़ा सुकून भी देती है।

3 राज्य, 3 कहानियां और प्यार के नाम पर धर्मांतरण, द केरल स्टोरी 2 का दमदार ट्रेलर जारी, लव-जिहाद की भयावह सच्चाई उड़ा देगी होश

अदा शर्मा स्टारर द केरल स्टोरी 2023 में रिलीज हुई थी यह फिल्म बॉक्स ऑफिस पर ब्लॉकबस्टर रही। अब, मेकर्स द केरल स्टोरी 2 गोज बियॉन्ड नाम का एक सीक्वल लेकर आ रहे हैं। इसे नेशनल अवॉर्ड-विनिंग फिल्ममेकर कामाख्या नारायण सिंह ने डायरेक्ट किया है। मेकर्स ने द केरल स्टोरी 2 गोज बियॉन्ड का ट्रेलर जारी किया। फिल्म के ट्रेलर के मैसेज ने सनसनी मचा दी है।

सनसाइन पिक्चर ने मंगलवार को द केरल स्टोरी 2 गोज बियॉन्ड का ट्रेलर लॉन्च किया है। इसे इंस्टाग्राम पर शेयर करते हुए मेकर्स ने कैप्शन में लिखा है, उन्होंने हमारी बेटियों को टारगेट किया। उन्होंने उनका भरोसा तोड़ा। उन्होंने उनका भविष्य चुरा लिया। इस बार, हम चुप नहीं रहेंगे। कहानी आगे तक जाती है। इस बार सहेंगे नहींज लड़ेंगे। द केरल स्टोरी 2 गोज बियॉन्ड का ट्रेलर अब आ गया है। 27 फरवरी, 2026 को सिनेमाघरों में।

द केरल स्टोरी 2 गोज बियॉन्ड के ट्रेलर की शुरुआत एक टारगेट से होता है, जिसमें एक शख्स कहता है कि अगले 25 सालों में पूरा भारत एक इस्लामिक स्टेट होगा और पूरे भारत में शरिया लागू होगा। फिर कहानी राजस्थान में बदल जाती है, जहां एक हिंदू परिवार पुलिस स्टेशन जाता है और आरोप लगाता है कि उनकी 16 साल की बेटी को जबरदस्ती धर्म बदलने के लिए मजबूर किया गया है।

फिर अगला सीन मध्य प्रदेश का होता है, जहां एक जवान हिंदू लड़की को झूठे बहाने से शादी के लिए बहला-फुसलाकर धर्म बदलने के लिए मजबूर किया जाता है। इसके बाद केरल की स्टोरी आती है, जहां एक मुस्लिम आदमी अपनी हिंदू गर्लफ्रेंड को लिव-इन रिलेशनशिप में रहने का प्रपोजल देता है। जब वह धर्म बदलने से मना कर देती है, तो मामला बिगड़ जाता है, जिससे धर्म और अपनी पसंद के बीच टकराव पैदा हो जाता है।

तीसरा हिस्सा दर्शकों को केरल वापस ले जाता है। एक मुस्लिम आदमी अपनी हिंदू गर्लफ्रेंड को लिव-इन रिलेशनशिप में रहने का प्रपोज़ल देता है। जब वह साफ-साफ कहती है कि वह धर्म नहीं बदलेगी, पहले तो वह मान जाता है, लेकिन बाद में उसे बीफ खाने के लिए मजबूर किया जाता है और वह और उसका परिवार उसे बंदी बना लेते हैं। ट्रेलर में जबरदस्ती धर्म बदलने वाले टॉर्चर और उनके परिवारों की अपनी बेटियों को घर वापस लाने की लड़ाई की डरावनी झलक दिखाई गई है।

कामाख्या नारायण सिंह के डायरेक्शन और विपुल अमृतलाल शाह और सनशाइन पिक्चर्स के सपोर्ट में बनी द केरल स्टोरी 2 गोज बियॉन्ड तीन लड़कियों पर आधारित है, जिनका रोल उल्का गुप्ता, अदिति भाटिया और ऐश्वर्या ओझा ने किया है तीन मुस्लिम आदमियों के साथ उनके रिश्ते फिल्म का फोकस हैं ट्रेलर से पता चलता है कि यह धर्म बदलने का एक सोचा-समझा एजेंडा है। ट्रेलर में तीन राज्यों की तीन कहानी दिखाई गई है। इस्लामीकरण के खौफनाक मंजर को दिखाने वाली यह फिल्म 27 फरवरी को सिनेमाघरों में रिलीज हो रही है।

स्वामी, प्रकाशक व मुद्रक प्रभात पांडेय द्वारा साई ऑफसेट प्रिंटर्स 40, वासुदेव भवन कैसरबाग, लखनऊ (उत्तर प्रदेश) से मुद्रित एवं 2/74, विक्रांत खंड, गोमती नगर, लखनऊ से प्रकाशित। शाखा कार्यालय: S-15/109, सेक्टर -15, इंदिरा नगर, लखनऊ। समस्त लेख, रचनाओं एवं विज्ञापन में लेखन और विज्ञापनदाताओं के अपने विचार हैं। इसके लिए आर्यावर्त क्रांति की कोई जिम्मेदारी नहीं है। किसी भी विवाद की स्थिति में न्याय क्षेत्र लखनऊ, उत्तर प्रदेश ही होगा। RNI No: UPHIN/2014/57034 Website: aryavartkranti.com
*सम्पादक: प्रभात पांडेय सम्पर्क: 9839909595, 8765295384 Email: aryavartkrantidainik@gmail.com